

# यूनियन धारा Union Dhara

जिल्द. 46, सं. 1 Vol.XXXXVI No.1, मुंबई

जनवरी - मार्च, 2020

समामेलन  
विशेषांक  
Amalgamation  
Special

यूनियन बैंक  
ऑफ इंडिया



Union Bank  
of India

भारत सरकार का उपक्रम

A Government of India Undertaking



गृहपत्रिका • HOUSE MAGAZINE OF

यूनियन बैंक  
ऑफ इंडिया



Union Bank  
of India

मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

**ब्रजेश्वर शर्मा**

Chief General Manager (HR)

**Brajeshwar Sharma**

संपादक

**डॉ. सुलभा कोरे**

Editor

**Dr. Sulabha Kore**

संपादकीय सलाहकार

**अविनाश कुमार सिंह**

**के. पी. आचार्य**

**नितेश रंजन**

**नवल किशोर दीक्षित**

Editorial Advisors

**Avinash Kumar Singh**

**K. P. Acharya**

**Nitesh Ranjan**

**Naval Kishor Dixit**

Printed and published by **Dr. Sulabha Kore**

on behalf of Union Bank of India and

printed at **JAYANT PRINTERY LLP**

352-54, Murlidhar Temple Compound,

Near Thakurdwar Post Office,

J.S.S. Road, Mumbai-400002.

and published at Union Bank Bhavan,

'Nariman Point, Mumbai-400021.

Editor - **Dr. Sulabha Kore**

E-mail : [sulabhakore@unionbankofindia.com](mailto:sulabhakore@unionbankofindia.com)

Our Address : Union Dhara,

11th Floor, Union Bank Bhavan,

239, Vidhan Bhavan Marg,

Nariman Point, Mumbai - 400 021.

E-mail : [uniondhara@unionbankofindia.com](mailto:uniondhara@unionbankofindia.com)

Mob. No. 9820468919

Tel.: 22896595 / 22896545 / 22896590

|   |       |  |       |
|---|-------|--|-------|
| • परिदृश्य  | 3     | • सेन्ट्रल स्प्रेड : लाहौल और स्पीति               | 38-39 |
| • संपादकीय  | 4     | • HR Intregation in successful Bank Amalgamation   | 40-42 |
| • संवाददाता सम्मेलन                                     | 5     | • विलय/सम्मामेलन में मानव संसाधन पक्ष              | 43    |
| • साहित्य जगत से...                                     | 6-7   | • Triveni Sangam...                                | 44-45 |
| • काव्यधारा   | 8-9   | • Union elite - a niche banking                    | 46-47 |
| • विलय-सम्मामेलन/The Rebirth                            | 10-11 | • आओ, मिल जाएं हम...                               | 48    |
| • The Amalgamation of banks                             | 12-13 | • Merger/Amalgamation of Banks                     | 49-51 |
| • शुभमस्तु  | 14    | • भारतीय अर्थव्यवस्था पर बैंकों के विलयन का प्रभाव | 52-53 |
| • शिखर की ओर...   | 15    | • यूनिवन   | 54-55 |
| • हमारे कलाकार  | 16-17 | • Role of Employee in Merger/ Amalgamation         | 56    |
| • हमें गर्व है  | 18    | • चरक का कोना                                      | 57    |
| • खेल जगत से...   | 19    | • सेवानिवृत्त जीवन से...                           | 58-59 |
| • एक मजबूत एवं बड़ी टीम                                 | 20    | • Face in UBI Crowd                                | 60-61 |
| • Cultural Integration & Amalgamation                   | 21    | • Contest No. 153                                  | 62    |
| • Amalgamation of Banks                                 | 22-24 | • Merger of PSBs                                   | 63-64 |
| • बैंकों का विलयन (Merger) एवं सम्मामेलन (Amalgamation) | 25    | • पुरस्कार और सम्मान                               | 65    |
| • ASK Enabling Excellence                               | 26-28 | • समाचार - केंद्रीकृत                              | 66    |
| • Union - The Story Of Amalgamation / बाल प्रतिभा       | 29-31 | • समाचार दर्शन                                     | 67-73 |
| • Amalgamation of PSBs                                  | 32-33 | • हेल्थ टिप्स / व्यंजन                             | 74    |
| • Amalgamation - the Marriage                           | 34-35 | • आपकी पाती  | 75    |
| • सम्मामेलन - एक नई शुरुआत                              | 36-37 | • Back Cover                                       | 76    |



# परिदृश्य PERSPECTIVE



प्रिय यूनियनाइट्स,

जब तक यह पत्रिका आपके पास पहुँचेगी, तब हमारा यूनियनाइट परिवार पूर्व-आंध्रा बैंक और पूर्व-कार्पोरेशन बैंक के नये सदस्यों के साथ 75,000+ हो जाएगा. इसके साथ ही, हम रु.15 लाख करोड़ के कारोबार मिश्र के साथ सार्वजनिक क्षेत्र के पांचवे बड़े बैंक बन जाएंगे तथा पूरे भारत में 9600 से अधिक शाखाओं के नेटवर्क, 13500+ एटीएम, 11000+ बैंकिंग संपर्कदाताओं सहित हमारा 12 करोड़ से अधिक का बड़ा ग्राहक आधार है. घरेलू अग्रिमों में हमारा मार्केट शेयर दोगुने वृद्धि के साथ 6.36% हो गया है, जिसने हमें सार्वजनिक क्षेत्र का तीसरा बड़ा बैंक बनाया है. कारोबार और मानव सक्षमताओं में हमारे पास कम से कम नेटवर्क ओवरलैप है जो कुछेक हिस्सों को बड़ा करने के लिए मददगार साबित होगा.

समामेलन ने तीनों बैंकों की उत्कृष्टता को एक साथ लाकर एक बेहतरीन संगठन बनाकर हमें ग्राहकों को समग्र रूप से सेवा प्रदान करने का अवसर दिया है. हाल ही में संपन्न नेतृत्व शिखर सम्मेलन में उच्च प्रबंधन वर्ग की टीम ने हमारे विजन को वास्तविक रूप देने हेतु स्ट्रैटजी निश्चित करने तथा हमारे साझा भविष्यगत आकांक्षाओं पर चर्चा किया था. हमारे समग्र ग्राहक प्रस्ताव को बेहतरीन बनाने हेतु अपनी कुशलता को बढ़ाने पर हमारा जोर होगा. तदनुसार, हमने अपने संगठनात्मक ढांचे को मानव संसाधन के समृद्ध गुणवत्ता पूल को बेहतरीन तरीके से सशक्त बनाया है. डिजिटल बैंकिंग को बढ़ाने, हमारे मानव संसाधन को फिर से कौशलपूर्ण बनाने और कारोबार तथा लाभप्रदता को उन्नत करने हेतु नये रूप से निवेश किया जा रहा है. स्ट्रैटजी पेपर के जरिए आपको इससे संबंधित जानकारी शीघ्र ही प्राप्त हो जाएगी. इस बीच, 'यूनियन धारा' का यह विशेषांक आपको समामेलन के विभिन्न पहलुओं तथा सभी स्टेकधारकों को भविष्यगत अवसरों के बारे में जानकारी प्रदान करेगा.

आमतौर पर अपने जीवन और अपने काम को लेकर प्राप्त होने वाले नये अवसरों की शुरुआत होने के साथ ही कोविड -19 संकट ने हमारे समक्ष अपने स्वास्थ्य और सुरक्षा को लेकर चुनौतियों का अंबार लगा दिया है. एक संगठन के रूप में, आप सभी को सुरक्षित रखकर देश की सेवा करने हेतु हम सभी आवश्यक उपाय अपना रहे हैं. इस विषाणु के विरुद्ध युद्ध में बैंकर्स आर्थिक सैनिक के रूप में सामने आये हैं और इस युद्ध में हम शीघ्र ही विजय प्राप्त करेंगे.

सुरक्षित रहिए, सावधानी बरतिए.

शुभकामनाओं के साथ,

राजकिरण  
राजकिरण रै जी.

Dear Unionites

By the time this magazine reaches you all, our Unionite family would be 75000+ with coming of new members from erstwhile Andhra Bank and Corporation Bank. With this, we have become the fifth largest public sector bank (PSB), having a business mix of ₹15 lakh crore, a Pan India network reach with 9600+ branches, 13500+ ATMs, 11000+ Banking Correspondents making us serve a 12+ crore large customer base. Our market share in domestic advances has grown 2X to 6.3%, making us the third largest PSB. We have minimal network overlap, and complementary strengths in business and human capabilities that helps the Amalgamated Entity to be larger than sum of parts.

Amalgamation is an opportunity to build even better organization by pooling the best of three banks and serve customers holistically. The Top Management team recently met in Leadership Summit to deliberate on our shared aspirations of future and strategize towards realizing our vision. Our focus will be on raising efficiencies to improve our overall customer proposition. We have accordingly revamped the organization structure to better harness the rich talent pool of human resources. New investments are being made to lead digital banking, reskilling our human resources and improving business and profitability. More details will be shared with you soon through a Strategy Paper. Meanwhile, this "Union Dhara" special will help apprise you of various aspects of Amalgamation and the opportunities ahead for all stakeholders.

The Covid-19 disruption has meant near term challenges for our health and well-being while opening new opportunities to organize our work and life in general. As an organization, we are taking all necessary measures to keep you all safe and help serve the Nation. The bankers have been economic soldiers in the war against virus. We will win the war, sooner than later.

Stay safe and take care.

With best wishes,

राजकिरण

Rajkiran Rai G.



# संपादकीय EDITORIAL

प्रिय दोस्तो,

यूनियन धारा का यह वर्तमान अंक जब तक आपके पास पहुंचेगा, हमारा यूनियनाइट परिवार पूर्व - कॉर्पोरेशन बैंक और पूर्व - आंध्रा बैंक के नये सदस्यों के साथ बड़ा और समृद्ध परिवार बनेगा. इस समामेलन ने इन तीनों बैंकों की उत्कृष्टता को एक साथ लाकर हमें बड़े और सशक्त संगठन के रूप में समग्र दृष्टिकोण के साथ ग्राहकों को बेहतरीन सेवा प्रदान करने का मौका दिया है. यह विलयन विभिन्न कार्य संस्कृति और प्रकृति के लोगों को एक साथ मिलकर एक ही लक्ष्य प्राप्त करने हेतु है. इस गठबंधन का ताना - बाना अपनी विशिष्ट पहचान, विशेषता और मजबूती के तीन अलग - अलग धागों से बनकर बहुत ही मजबूत एवं अद्वितीय हुआ है. यह विविधता का पोषण करने के साथ, हम सबको एक साथ रखने के प्रयासों और उद्देश्य की एकता को पाने के लिए किया गया आह्वान है. यह ताना - बाना सशक्त तत्वों के साथ जुड़कर अब एक सशक्त संस्था बन चुकी है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, कॉर्पोरेशन बैंक और आंध्रा बैंक के इस 'त्रिवेणी संगम' से बैंकिंग और वित्तीय उद्योग की अपेक्षाओं के शिखर को प्राप्त करना है. हमारे प्रयासों और समर्पण से इन अपेक्षाओं को पूरा करने के हमारे समग्र प्रयास रहेंगे.

'यूनियन धारा' का यह विशेषांक, इन तीन बड़े संगठनों के समामेलन को समर्पित है, जोकि इन तीनों संगठनों में से हर एक को समझने में अपना योगदान देगा. इन तीनों बैंकों के कर्मचारियों का यह एक संयुक्त प्रयास है, जोकि हम सभी को एक नया परिदृश्य प्रदान करेगा.

मैं आपके फीडबैक एवं प्रतिक्रिया का बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही हूँ.

Dear Friends,

By the time, the current issue of Union Dhara reaches you, our Unionite family would be bigger and richer with new members of the erstwhile Corporation Bank and the erstwhile Andhra Bank. This Amalgamation has given us an opportunity to build a bigger and stronger organisation by pooling together the best of these three banks and serve customers with a holistic approach. This merger brings people of different work culture and ethos together to work towards a common goal. The fabric of this coalition has become very strong and unique with three different threads having their own unique identity, speciality and strength. There is a call for nurturing diversity while keeping us united in efforts and striving for unity of purpose. This fabric has emerged on a strong entity combined with strong elements.

This 'Triveni Sangam' of Union Bank of India, Corporation Bank and Andhra Bank has to climb a mountain of expectations from the Banking and Finance Industry also. We are definitely trying to fulfil these expectations with our efforts and dedication.

This special issue of Union Dhara which is devoted to the Union of three big institutions will contribute a lot towards understanding each of these institutions. This is a joint venture of employees from these three banks which will give a new perspective to all of us.

I am eagerly waiting for your feedback and response.

आपकी, Yours truly,

डॉ. सुलभा कोरे Dr. Sulabha Kore

# ‘यूनियन धारा’ संवाददाता सम्मेलन, 2020



प्रतिवर्ष यूनियन बैंक ऑफ इंडिया अपनी केंद्रीय कार्यालय से प्रकाशित होने वाली द्विभाषी गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' के संवाददाताओं का सम्मेलन आयोजित करती है. इस वर्ष यह सम्मेलन 'केटीडीसी टी-काउंटी हिल रिसॉर्ट, मुन्नार, केरल' में दि. 28-29 फरवरी, 2020 को आयोजित किया गया. इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री गोपाल सिंह गुसाई, कार्यपालक निदेशक, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा की गयी. श्री लाल सिंह, महाप्रबंधक, चेन्नै, श्री वेद प्रकाश अरोडा क्षेत्र प्रमुख कोट्टयम के साथ श्री नवल किशोर दीक्षित, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) की गरिमामई उपस्थिति रही. देश भर से आये चुनिन्दा 33 संवाददाताओं को उनके कार्यप्रदर्शन के आधार पर चुना गया एवं इस बैठक में आमंत्रित किया गया. यूनियन धारा की संपादक, डॉ. सुलभा कोरे

एवं टीम यूनियन धारा इस बैठक के आयोजक रहे. विशेष अतिथि तथा व्याख्याता के रूप में श्री के. जे. जेकब, कार्यकारी संपादक, डेक्कन क्रॉनिकल, चेन्नै आमंत्रित थे. उन्होंने सभी संवाददाताओं के साथ संवाद स्थापित कर मार्गदर्शन दिया. इस बैठक में इस बार के 'स्टार संवाददाता' सुश्री उपासना सिरसैया, क्षे.का., भोपाल एवं श्री कृष्ण कुमार यादव, क्षे.का., बेंगलूरु को शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया. इसी के साथ प्रोत्साहन पुरस्कार श्री संतोष कुमार राम, क्षे. का. रायपुर एवं सुश्री निधि सोनी, क्षे. का. इंदौर को प्राप्त हुआ. सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ, चाय बागान, मुन्नार केरल की सैर के साथ यह सम्मेलन सफल रहा.



## स'आदत हसन 'मंटो'

**आ**मतौर पर साहित्य लेखन की दुनिया में कोई शख्सियत महान और बड़ा लेखक होता है लेकिन मंटो की तासीर साहित्य के गलियारे में थोड़ी अलग है. स'आदत हसन 'मंटो' साहित्य के गलियारे का एक ऐसा अफसानानिगार था, जिसके बारे में जितने अधिक चर्चे हुए, उससे कहीं कम उसे समझा गया. वे जितने महान लेखक थे उससे कहीं अधिक 'बदनाम' थे. मंटो को उनके जमाने के आलोचकों द्वारा सटीक नहीं समझा गया और उनकी कहानियों ने ही उन्हें एक बदनाम लेखक का खिताब दे दिया. उन्होंने शोहरत की तरह ही बदनामी कमाई थी और यही उनकी वास्तविक रचनात्मक विलक्षणता थी. उन्होंने इंसानी मनोविज्ञान का जैसा नंगा चित्रण अपनी कहानियों में बयां किया अगर वो बदनाम न होते तो यह उनकी नाकामयाबी मानी जाती. उनकी कहानियों में इंसान की सभ्यता और पाशविक प्रवृत्तियों के बीच जो द्वंद है, उसे उधेड़कर रख दिया गया है. सभ्यता का नकाब ओढ़े इंसानी समाज को चुनौती देती उनकी कहानियां इतनी पैनी और कठोर थी कि इसका खामियाजा लेखक को कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगाकर भुगतने पड़े.

मंटो के बदनाम कहानियों पर बहुत कुछ लिखा-पढ़ा गया. बार-बार उनकी उन पांच कहानियों 'धुंआ', 'बू', 'ठंडा गोश्त', 'काली सलवार' और 'ऊपर, नीचे और दरमियां' का जिक्र किया गया जिसकी वजह से उन पर अश्लीलता फैलाने का आरोप लगाकर मुकदमा चलाया गया था. इनमें से चार मुकदमों अंग्रेजों के शासन काल में हुए तो एक मुकदमा देश के बंटवारे के बाद के पाकिस्तान में हुआ. लेकिन दिलचस्प है कि किसी भी मामले में मंटो को सज़ा नहीं हुई. सिर्फ एक मामले में पाकिस्तान की अदालत ने उन पर जुर्माना लगाया था. मंटो अपने वक्त के खोखलेपन और विसंगतियों को बखूबी पहचानते थे. तभी तो वो कहते थे, 'मुझमें जो

बुराइयां हैं दरअसल वो इस युग की बुराइयां हैं. मेरे लिखने में कोई कमी नहीं. जिस कमी को मेरी कमी बताया जाता है वह मौजूदा व्यवस्था की कमी है. मैं हंगामा पसंद नहीं हूँ. मैं उस सभ्यता, समाज और संस्कृति की चोली क्या उतारंगा, जो है ही नंगी.'

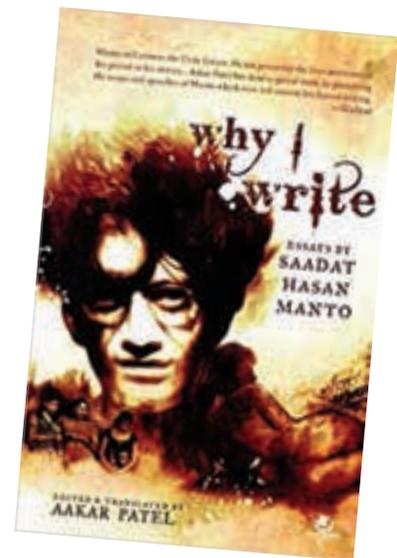
यह उस वक्त की परेशानी थी जहां मंटो को समझा नहीं जा रहा था या फिर समझने की कोशिश नहीं की जा रही थी. लेकिन यह भी सच है कि उन्हें कभी नज़रअंदाज़ भी नहीं किया जा सका. उनकी अहमियत को बस वाजिब तरीके से पहचाना और मान देना शुरू किया गया है पिछले एक दशक से.

**प्रारम्भिक जीवन :** मंटो का जन्म 11 मई 1912 को पंजाब के समराला में हुआ था. अपने बारे में वे लिखते हैं, मेरे जीवन की सबसे बड़ी घटना मेरा जन्म था. मैं पंजाब के एक अज्ञात गांव 'समराला' में पैदा हुआ. अगर किसी को मेरी जन्मतिथि में दिलचस्पी हो सकती है तो वह मेरी मां थी, जो अब जीवित नहीं है. दूसरी घटना साल 1931 में हुई, जब मैंने पंजाब यूनिवर्सिटी से दसवीं की परीक्षा लगातार तीन साल फेल होने के बाद पास की. तीसरी घटना वह थी, जब मैंने साल 1939 में शादी की, लेकिन यह घटना दुर्घटना नहीं थी और अब तक नहीं है और भी बहुत-सी घटनाएं हुईं, लेकिन उनसे मुझे नहीं दूसरों को कष्ट पहुंचा, जैसे मेरा कलम उठाना एक बहुत बड़ी घटना थी, जिससे 'शिष्ट' लेखकों को भी दुख हुआ और 'शिष्ट' पाठकों को भी.

**कृतित्व व रचनाएँ :** मंटो को भारत या पाकिस्तान के लेखक के श्रेणी में रखना सरासर बेईमानी है. हाँ, उन्हें हम उर्दू के कथाकार कह सकते हैं लेकिन परवर्ती काल में उनकी रचनाएँ अन्य कई भाषाओं में भी प्रकाशित हुईं. उन्होंने लघु कहानियों के 22 संग्रह, एक उपन्यास, रेडियो नाटकों की पाँच शृंखलाएँ, निबंधों के तीन संग्रह, व्यक्तिगत रेखाचित्रों के

दो संग्रह तैयार किए. अपने लेखन व्यक्तित्व की तरह ही उन्होंने अपने लेखन कृतित्व में भी चल रही परम्पराओं का खंडन किया है. आमतौर पर उस देशकाल में किसी भी गद्यकार को साहित्य में अपनी विशिष्ट छवि एवं प्रसिद्धि के लिए उपन्यास का सहारा लेना पड़ता था वहीं मंटो ने उपन्यास लेखन को प्राथमिकता नहीं दी, शायद उन्हें अपनी कहानियों की अमरता और दीर्घजीविता पर दृढ़ विश्वास था. प्रसिद्ध कथाकार राजेंद्र यादव के अनुसार चेखव के बाद मंटो ही थे जिन्होंने अपनी कहानियों के दम पर अपनी जगह बना ली, बिना कोई उपन्यास लिखे. मंटो ने अपने लेखन काल में लगभग 233 लघु कहानियाँ, 29 माइक्रो फिक्शन्स, 24 खाका (रेखाचित्र), 59 नाटक, एवं 50 से अधिक आलेख एवं कई रचनाओं के अनुवाद लिखे हैं. उनकी कुछ प्रसिद्ध कहानियाँ 'टोबा टेक सिंह', 'ठंडा गोश्त', 'बू', 'काली सलवार', '1919 की एक बात' और 'खोल दो' आदि शामिल हैं.

**लेखन शैली एवं पात्र :** सआदत हसन मंटो का शुमार ऐसे साहित्यकारों में किया जाता है जिनकी कलम ने अपने वक्त से आगे के ऐसे अफसाने लिख डाले जिनकी गहराई को समझने की दुनिया आज भी कोशिश कर रही





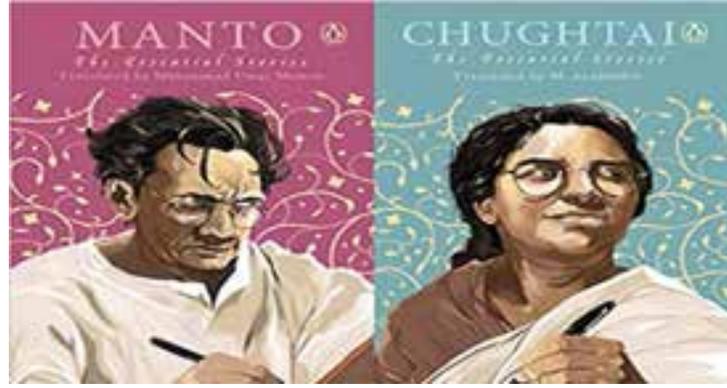
है. मंटो की कहानियां इंसान के लिए झकझोर देने वाली सच्चाईयाँ छोड़ जाती हैं. मंटो कहते थे, “अगर आपको मेरी कहानियां अश्लील या गंदी लगती हैं, तो जिस समाज में आप रह रहे हैं, वह अश्लील और गंदा है.” मंटो की कहानियां, कथा-शिल्प, बिम्बविधान, पात्र-चरित्र एवं शैली किसी भी परंपरा का निर्वहन नहीं करते या यूँ कहें वे किसी भी खांचे में फिट नहीं बैठते. यदि आप किसी खांचे के बंदिश के साथ मंटो को समझने की कोशिश करते हैं तो आपको हमेशा निराशा हाथ लगेगी. मंटो की कहानियों के भाव या मर्म को समझने के लिए आपको रूढ़ियों के बन्दिशों से निकलकर एक स्वतंत्र आकाश और सीमाहीन जमीन पर बैठना होगा. हमारी जज करने की मानसिकता का त्याग करना होगा. उनके कहानियों की संवेदनाएँ और मर्म भिन्न हैं अन्य रचनाकारों की तरह वे कोमल नहीं है... कठोर हैं, वास्तव में आहत हैं. मंटो लिखते हैं, एक लेखक अपनी कलम तभी उठाता है जब उसकी संवेदनाओं पर किसी ने चोट की हो.

सआदत हसन मंटो की रचना यात्रा उनकी कहानियों की तरह ही बड़ी ही विचित्रता से भरी हुई है. एक कहानीकार जो जालियांवाला बाग कांड से उद्वेलित होकर पहली बार अपनी कहानी लिखने बैठता है. वो औरत-मर्द के रिश्तों की उन परतों को उघाड़ने लगता है जहां से पूरा समाज ही नंगा दिखने लगता है. मंटो ने ताउम्र मजहबी कट्टरता के खिलाफ लिखा, मजहबी दंगे की वीभत्सता को अपनी कहानियों में यूँ पेश किया कि आप सन्न रह जाए. उनके लिए मजहब से ज्यादा कीमत इंसानियत की थी. मंटो एक लोकतांत्रिक लेखक थे और उससे भी पहले एक लोकतांत्रिक इंसान. मंटो की दृष्टि में कोई भी मनुष्य मूल्यहीन नहीं था. वह हर मनुष्य के साथ इस आशा से मिलता था कि उसके अस्तित्व में जरूर कोई न कोई अर्थ छिपा होगा जो एक न एक दिन प्रकट हो जाएगा. अच्छे-बुरे, बुद्धिमान-मूर्ख, सभ्य-असभ्य का प्रश्न मंटो के यहां जरा भी न

था. उसमें तो इंसानों को कुबूल करने की क्षमता इतनी अजीब थी कि जैसा भी आदमी उसके साथ हो वह वैसा ही हो लेता था. शायद इसीलिए मंटो के पात्र इतने जीवंत, इतने सहज और इतने बेधड़क भी थे. एक अर्थ में सबसे तुच्छ, निकृष्ट, ऊपर से धिनौने, असहज लेकिन उस खोल के नीचे हृदय दर्जे तक मानवीय और संवेदनशील.

**स्त्री चेतना के नए आयाम :** अपने दौर के कहानी की औरतों की तरह मंटो की कहानियों की औरतें भी समाज के रूढ़ियों एवं उपेक्षाओं का शिकार तो होती हैं लेकिन उनका चरित्र बेबस और लाचार नहीं नज़र आता. मौजूदा दौर में जब अब स्त्रीवादी लेखन और विचार के कई नए आयाम सामने आ रहे हैं तब मंटो की उन औरतों की खूब याद आ रही है और इसी बहाने मंटो की भी. लेकिन इसके बावजूद मंटो की औरतों को किसी खांचे में फिट करना मुश्किल होगा जो उस वक्त भले कितनी ही अजीब लगे लेकिन वे वैसी ही थी जैसी एक औरत सिर्फ एक इंसान के तौर पर हो सकती है.

अपनी कहानी की औरतों के बारे में खुद मंटो कहते हैं, ‘मेरे पड़ोस में अगर कोई महिला हर दिन अपने पति से मार खाती है और फिर उसके जूते साफ करती है तो मेरे दिल में उसके लिए जरा भी हमदर्दी पैदा नहीं होती. लेकिन जब मेरे पड़ोस में कोई महिला अपने पति से लड़कर और आत्महत्या की धमकी दे कर सिनेमा देखने चली जाती है और पति को दो घंटे परेशानी में देखती है तो मुझे हमदर्दी होती है.’ मंटो जिस बारीकी के साथ औरत-मर्द के रिश्ते के मनोविज्ञान को समझते थे उससे लगता था कि उनके अंदर एक मर्द के साथ एक औरत भी ज़िंदा है. बकौल मंटो, मर्द औरत से अदाएँ तवायफ वाली और वफाएँ कुत्तों वाली चाहता है. उनकी कहानियां जुगुप्साएँ पैदा करती हैं और अंत में एक करारा तमाचा मारती हैं और



फिर आप पानी-पानी हो जाते हैं. दरअसल, उनकी कहानियां समाज का पोस्टमार्टम करती हैं. इसलिए पाठक उन्हें पढ़ते हुए विचलित हो जाते हैं. सहादत हसन मंटो की कहानियां आज भी समाज को आइना दिखाती हैं.

**मंटो और विवाद (कोण्ट्रोवर्सी) :** स’आदत हसन ‘मंटो’ साहित्य जगत का एक ऐसा अफसानानिगार है, जिसे किसी साहित्य-धारा या देशकाल की सीमा में नहीं रखा जा सकता. एक सदी से पहले पैदा हुए मंटो के लिए कहा जाता है कि वे अपने समय से पहले पैदा हुए लेखक थे, जिसका खामियाजा उन्होंने कोर्ट के और पागलखाने के चक्कर लगाकर भुगता. इसके अतिरिक्त बंटवारे का दर्द हमेशा उन्हें सालता रहा जिसे वे अधिक झेल नहीं पाए. 1948 में पाकिस्तान जाने के बाद वो वहां सिर्फ सात साल ही जी सके और 1912 में भारत के पंजाब में पैदा हुए मंटो 1955 में पाकिस्तान के पंजाब में दफन हो गए.

मंटो का शुमार ऐसे साहित्यकारों में किया जाता है जिनकी कलम ने अपने वक्त से आगे के ऐसे अफसाने लिख डाले जिनकी गहराई को समझने की दुनिया आज भी कोशिश कर रही है और साठ दशकों से भी अधिक वक्त गुजरने के बाद भी उसकी प्रासंगिकता और लोकप्रियता कायम है और आगे भी रहेगी.



राधा मिश्र  
क्षे.का., बड़ौदा



## बैंक विलय...

बैंकों के बीच, गर्म है खबर,  
कि अनेक बैंकों में, परस्पर,  
प्रभावी नियंत्रण, विकास हेतु,  
लागू होने वाला है, मर्जर।।

इससे संभावना है, कम होगा,  
गलाकाट प्रतियोगिता का स्तर,  
और स्वस्थ माहौल में बैंकिंग,  
का होगा प्रगतिशील मंज़र।।

अल्पविकसित बैंक, सम्भवतः,  
पाकर सहयोग, जाएंगे निखर,  
और विकसित बैंक के साथ,  
हो सकेंगे पुनः आत्मनिर्भर।।

संभव है, कुछ और समय लगे कि,  
आयोजन हो, ठीक से दृष्टिगोचर,  
मिलन की कठिनाइयां, कमियां,  
दूर करें, हम मिल जुल कर।।

ये भी संभव है कि इस दौर में,  
कुछ जन दूर हो जाएं, रुठ कर,  
ये हमारा उत्तरदायित्व है कि,  
साथ लें, उन्हें मना - मना कर।।

आइए, हम सब बैंक कर्मों इस मौके का,  
लाभ उठाएं, उल्लास से भर कर,  
सतर्क रहें, त्रुटियां होने न दें और  
तेज़ी से बढ़ें, इस अवसर पर।।

राहुल गुप्ता  
क्षे.का., भोपाल



## Success

Success is a struggle  
Success is a fight  
Success is daring  
Success is to flow like water  
Through rocks  
Success is determination  
Success is perseverance  
Success is patience  
Success is persistence  
Success is failure  
Turned inside out  
The silver tint of the  
cloud of doubt  
Doesn't give-up though the  
pace seems slow  
You may succeed  
With another blow  
So stick to the fight  
When you are hardest hit  
It's when things seem worst  
That you must not quit  
Success is then the cup of  
contentment  
It's a true feeling of  
'an achievement'

Pranita Gambhir  
Shivaji Road Br., Pune



## महान विलयन

आ वक़्त चल जहां थोड़ी खुशी है,  
तो थोड़ा गम है, मिल कर मज़बूत तो हम हैं  
पर पहचान खुद की कहीं नई होगी  
इसलिए आँखें थोड़ी नम हैं।

ये वक़्त महान विलयन का है  
जहाँ तीन सर्वश्रेष्ठ बैंक एक होंगे  
ये वक़्त प्रगतिशील समामेलन का है  
जहाँ तीन गुण के रूप एक होंगे।

'समर्थ' है हम तीनों बैंक  
साथ मिलकर अब शक्तिशाली बनेंगे  
अपनी अपनी योग्यताओं को एक जुट कर  
अब प्रभावशाली बनेंगे।

अलग जगह अलग संस्कृति पर  
कर्म हमारा एक है  
आर्थिक स्थिति मजबूत करेंगे  
ये प्रण हमारा एक है।

जब मिल बैठेंगे तीन यार  
तो देश के हर कोने तक  
पहुंचना होगा आसान  
हर सुविधाओं से भरे  
नए प्रोडक्ट्स का होगा निर्माण  
हर वर्ग तक पहुंचेगी हमारी सेवाएं  
इसमें होगी हमारी शान।

आओ हाथ मिलाते हैं,  
तीनों एक हैं ये दिखलाते हैं  
जब एक दूसरे का साथ रहेगा  
तब बैंकिंग में हमारा मजबूत हाथ रहेगा।

ये वक़्त महान विलयन का है  
जहाँ तीन सर्वश्रेष्ठ बैंक एक होंगे  
ये वक़्त प्रगतिशील समामेलन का है  
जहाँ तीन गुण के रूप एक होंगे।

सुषमा तिवारी  
गाडरवारा शाखा, जबलपुर





## समर्पण - मर्जर और हम

राष्ट्र हित को आगे रख कर  
अपना कर्तव्य निभायेंगे,  
जब हम तीनों मिल जायेंगे  
एक नया इतिहास बनायेंगे,  
जब देश था जंजीरों में जकड़ा  
आजादी पाने को आतुर,  
हम अर्थ वीर से डटे थे रण में  
हर क्षण समृद्ध बनाने में,  
ख्वाहिश थी बस एक ही मन में  
अपना परचम लहरायेंगे,  
जब हम तीनों मिल जाएंगे ॥

आजादी की धाम डगर अब  
नव भारत की नींव को रखना था,  
हुए राष्ट्र समर्पित हम फिर से  
हमें विश्व मंच पर चड़ना था,  
मंजिल कितनी भी दूर हो  
अपनी बस आगें ही बढ़ते जायेंगे,  
जब हम तीनों मिल जाएंगे ॥

आकार भले ही अलग हो  
अपने पर मन को एक बनाना है  
चार दिशा में घर है अपने.  
अब मिलकर परिवार बनाना है,  
फिर शीर्ष शिखर पर नाम हो  
अपना अब ऐसा अलख जगायेंगे,  
जब हम तीनों मिल जाएंगे ॥

हमराह बनें अपने साथी के  
कदम से कदम मिलाना है,  
न कोई आगे न कोई पीछे  
सब मिलकर बढ़ते जाना है,  
निरस्वार्थ समर्पण हो कर्तव्यों का  
बस यह संदेश फैलायेंगे,  
जब हम तीनों मिल जाएंगे  
एक नया इतिहास बनायेंगे

अभिषेक भार्गव  
मुंबारीकपुर शाखा  
क्षे.का. भोपाल सेंट्रल



## विलय

सारे क्षेत्रों का एक जगह पर  
विलय हुआ है  
हमें गर्व है कि तीन सशक्त  
बैंकों का विलय हुआ है।

ग्राहक संतुष्टि ही जिनकी  
प्राथमिकता है  
हर क्षेत्र में जिनकी  
शाखाओं की अधिकता है।

कल तक जो सिर्फ नदियां थी  
आज मिलकर समुद्र बनने  
की राह पर है।

उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने का प्रण  
और सभी योजनाओं को  
सफल बनाने का वादा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था को  
सुदृढ़ बनाने की लगन है  
और देश को आगे ले जाने  
का प्रण है।

हम हैं आंध्रा, कॉर्पोरेशन और  
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया  
का नया रूप,  
हम हैं भारतीय बैंकिंग का  
नया स्वरूप।।

विक्रम कुमार  
वृंदावन शाखा, आगरा  
ई-आंध्रा



## कॉर्पोरेशन बैंक का अपने कर्मियों को एक संदेश

प्यारे साथियों,  
मैं कही नहीं जा रहा, पहले अकेला था  
अब दो साथियों के साथ  
मिलकर चलने लगा हूं।

मेरा नाम भी कही नहीं जा रहा  
आपकी खुशी के लिए  
मैं अपना नाम बदल रहा हूं।

मेरी पहचान भी नहीं बदलेंगी,  
सरकारी नीतियों के चलते  
नयें साँचे में ढल रहा हूं।

खुशी है आप सबके साथ होने की,  
आँखे नम है और परिवर्तन की  
अग्नि में तप रहा हूं।

हिमालय बन कर खड़ा रहूंगा,  
ना जाने क्या सब के साथ तकलीफ है।  
जो हर लम्हा पिघल रहा हूं।

सूरज की तरह चमकते रहो सभी,  
'बस' इसी कामना के साथ  
आज मैं ढल रहा हूं।

अगर बोल पाता तो सबको अपनी.  
जुबान से धन्यवाद देता,  
और अगर इंसान होता तो सब साथियों  
को गले से लगा लेता।

दीपक कुमार  
रूड़की, उत्तराखंड  
ई-कॉर्प



# विलय - सम्मामेलन



**आ**र्थिक सुधार की दिशा में बैंकों को मजबूत करना सरकार की प्राथमिकता थी, बेसल-III के अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप गैर मानक आस्तियों हेतु प्रावधानों एवं वैधानिक दायित्वों के साथ कैपिटल स्तर भी बनाये रखना है. प्रतिस्पर्धा के इस दौर में बैंकों को लाभप्रदता बनाए रखना भी एक चुनौती है. बैंकों के मजबूती का प्रमाण बैंक का कैपिटल स्तर होता है जिसे बनाए रखने या वृद्धि करने के कुछ निम्न उपाय हैं :

\* लाभप्रदता में लगातार वृद्धि \* केंद्र सरकार से सहायता \* शेयर बाजार में निर्गमन \* विभिन्न बैंकों का आपस में विलय/सम्मामेलन आदि

प्रतिस्पर्धा के वर्तमान दौर में उपरोक्त में प्रथम तीन उतने प्रभावी नहीं हैं, ऐसी स्थिति में बैंकों का आपसी विलय/सम्मामेलन एक प्रभावी कदम होगा.

विलय/सम्मामेलन आम तौर पर दो या दो से अधिक बैंकों के मध्य होता है जिसके पश्चात एक नयी इकाई का गठन होता है. चूंकि इसमें दो या दो से अधिक इकाइयों का एक साथ सम्मामेलन होता है, इससे एक बड़ी इकाई का गठन होता है. यह एक मजबूत और बड़ा ग्राहक आधार बनाता है.

विलय/सम्मामेलन में कार्मिकों का एकीकरण भी अपने आप में एक बड़ी चुनौती है और इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है. विलय/सम्मामेलन के पश्चात आने वाली समस्त तकनीकी एवं वैधानिक प्रक्रियाओं का भी कार्य योजना बनाकर समयबद्ध निस्तारण करना होगा जिसे तीन चरणों में बांटा जा

सकता है :- 1. सम्मामेलन से पूर्व \* 2. सम्मामेलन के दिन \* 3. सम्मामेलन के पश्चात हमें तीनों प्रक्रियाओं को विलय/सम्मामेलन के अधिकतम तीन माह के भीतर पूर्ण करना होगा. विलय/सम्मामेलन के समय कुछ बातें जो ध्यान देने वाली होंगी जैसे :

## 1. कार्मिकों की भूमिका

विलय/सम्मामेलन की पूरी प्रक्रिया के दौरान समस्त कार्मिकों को ये प्रयास करने होंगे कि वे अपने हितग्राहियों एवं ग्राहकों को यह विश्वास दिलाए कि बैंक के नये प्रारूप में कहीं से भी बैंक के किसी ग्राहक को कोई समस्या नहीं आयेगी. सब कुछ न केवल यथावत बल्कि पहले से बेहतर चलेगा.

नवगठित बैंक के समस्त कार्मिकों को बैंक के विजन और मिशन को ध्यान में रखते हुए बैंक को अपनी कार्यकुशलता एवं क्षमता से निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर करना होगा.

बैंक के साथ ही साथ विभिन्न संस्कृतियों एवं अंचलों का भी सम्मामेलन होगा. हर सेक्टर में हमें पहले से बेहतर चीजों को चुनना होगा. कार्मिकों में ग्रहण करने की क्षमता और मानसिक लचीलापन होना चाहिए, जिससे की नए बैंक में सकारात्मक वातावरण बनाया जा सके.

## 2. नई संस्था के प्रति कार्मिकों का दृष्टिकोण एवं मानसिकता

किसी भी बात को लेकर पूर्ववर्ती बैंकों के कार्मिकों में कोई मतभेद ना हो और एक-दूसरे का सहयोग करते हुए अपनी संस्था को निरंतर प्रगति के मार्ग पर प्रशस्त करने का प्रयास करना चाहिए. समस्त कार्मिकों के मन में एकता का भाव हो और बैंक के हित में एकजुट होकर कार्य करने हेतु उन्हें समर्पित रहना होगा.

कार्मिकों को मानसिक तौर पर नई इकाई को अपना समझना होगा. प्रबंधन को भी कार्मिकों को यह विश्वास दिलाना होगा कि एक बड़ी और मजबूत संस्था में कार्मिक हित और बेहतर ढंग से सुरक्षित रहेंगे.

इस दौरान इस बात पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि जिस पुरानी इकाई में नई तकनीक नहीं थी, उस इकाई के अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा और वित्तीय साक्षरता के माध्यम से ग्राहकों को नई तकनीक के प्रति साक्षर किया जायेगा.

विलय/सम्मामेलन में बैंक का आकार/स्वरूप काफी बड़ा हो जायेगा. उस समय अलग-अलग बैंकों और विभिन्न संस्कृतियों से आये कार्मिकों के भीतर मानसिक लचीलापन और नए वातावरण को अपनाने की भावना होनी चाहिए.

नये बैंक में कुछ नयी तकनीक और साफ्टवेयर आयेगे जिसके लिए उस पर पूर्व में कार्य किये हुए कार्मिकों का बैंक की आवश्यकतानुसार स्थानांतरण करना पड़ेगा, जिसके लिए समस्त कार्मिकों को मजबूत मानसिक स्थिति और संस्था के प्रति कार्य करने के लिए प्रेरित करना होगा.

इससे बैंक का व्यवसाय और ग्राहक सेवा प्रभावित नहीं होगी.

## नये इकाई से कार्मिकों की अपेक्षाएँ

विलय/सम्मामेलन के दौरान प्रबंधन को इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि कार्मिकों के हित को लेकर किसी प्रकार का भ्रम या भय उत्पन्न न हो. कार्मिकों को यह विश्वास दिलाया जाना चाहिए कि वे बेहतर भविष्य के लिए एक मजबूत संस्था में प्रवेश कर रहे हैं और बड़े प्लेटफार्म पर काम करने से दोनों (कार्मिक और संस्था) के हित सुरक्षित रहेंगे. कार्मिकों को यह विश्वास भी दिलाना होगा कि आने वाले समय में स्थानांतरण प्रशासनिक आवश्यकताओं के अनुसार ही किए जाएंगे.

सामान्यतः कार्मिक निम्नांकित बिन्दुओं को लेकर सशंकित रहते हैं - \* वरिष्ठता सूची \* कार्मिक सुविधा \* औद्योगिक सम्बन्ध

अतः समस्त कार्मिकों की प्रबंधन से अपेक्षा होती है कि उपरोक्त बिन्दुओं पर नए प्रबंधन द्वारा सकारात्मक कार्रवाई की जाए तथा

कार्मिकों में इन विषयों को लेकर किसी प्रकार का मतभेद न उत्पन्न हो. नए प्रबंधन द्वारा जो भी निर्णय लिया जायेगा या जो भी नीति अपनायी जायेगी उसमें पारदर्शिता हो.

नई इकाई में ग्राहकों/कार्मिकों की समस्या के निदान हेतु ग्रिवांस रिड्रेसल सेल के अंतर्गत टोल फ्री नंबर की सुविधा होनी चाहिए. इस नंबर को प्रत्येक शाखा/कार्यालय में डिस्प्ले किया जाना चाहिए. डिजिटल तकनीकी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ताकि ग्राहकों की शिकायत/समस्या का न्यूनतम समय/भारतीय बैंकिंग संहिता एवं मानक बोर्ड द्वारा निर्धारित मानक समय में निस्तारण सुनिश्चित किया जा सके. इसके लिए ग्राहकों को बैंक द्वारा संचालित वित्तीय साक्षरता शिविरों के माध्यम से भी जागरूक किया जाना चाहिए और समय-समय पर अभियान चलाकर ग्राहकों को बैंक में शामिल किये गये नई तकनीक से अवगत कराया जाना चाहिए.

बैंकों का विलय/समामेलन करने से बैंकों के कर्ज देने की क्षमता बढ़ेगी और उनका तुलन-पत्र भी मजबूत होगा. इस फैसले के परिणामस्वरूप देश के बड़े सार्वजनिक बैंक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता करने में सक्षम हो जाएंगे. देश की बैंकिंग प्रणाली भारत को वैश्विक स्तर पर एक मजबूत अर्थव्यवस्था बनने में योगदान दे सकेगी. इस प्रक्रिया का मकसद देश में वैश्विक स्तर पर मजबूत बैंकों का निर्माण करना है.

इन सभी पहलुओं और बातों को ध्यान से देखा जाय तो हम पायेंगे कि बैंकों का विलय/समामेलन एक बड़ा और मजबूत फैसला है जो कि बैंकों को एक मजबूत स्थिति प्रदान करेगा. अतः हम यह कह सकते हैं कि वर्तमान परिवेश को देखते हुए बैंक में चल रहा विलय/समामेलन देश की अर्थव्यवस्था के साथ ही साथ उस बैंक को भी मजबूत स्थिति में ले जाने में कारगर होगा.

**राजीव श्रीवास्तव**  
क्षे.म.प्र.का.; वाराणसी



## The Rebirth

Darkness slowly crept into my eyes.....where am I? Giant tree trunks were all around me. I ran amidst them aimlessly. Thousands of crickets screeched in rage. I was unable to see or hear. Stumbling upon thick roots, I collapsed onto the ground. Was I the destined one to be punished for man's injustice to nature for centuries? Creepers slowly snaked up towards me along the ground and tangled around my arms and feet. I was trapped..... Forgive me! One last chance! No.....!

I awoke in shock. I was still alive! The blanket of darkness slowly engulfed the sky. A faint sob was wafting on the evening breeze. Rubbing off small pearls of sweat from my forehead I stood up to see eagerly. A young boy was walking down the road. Was I still dreaming? The joy of seeing a human over days was inexplicable. I ran out of the house to stop him. Placing my palms around his tear drenched cheeks I knelt down in front of him. I took his hands in mine and placed them close to my heart. His flooded eyes sparkled with hope. We hugged each other at once. With the ecstasy of regaining a long-lost life, I placed my arms around his shoulders and we walked forward together along the moonlit path. In this rebirth, perceiving the lesson taught by nature, we moved ahead as shown by the twinkling stars.

**Manjusha Venugopalan**  
Chamarajpet Branch,  
Bangalore





# The Amalgamation of banks

**F**or many months leading into the 1st of April 2020, I would often look from my manager's seat into the window that had the Andhra Bank logo in a see-through sticker and wonder.

Will I lose my identity? Will being usurped by a larger bank be beneficial? Will my career take a backseat in this new banner? Will there be an unexpected remote location transfer? If I write the number of questions that went past my mind, it would come in the way of what I want to convey to my fellow colleagues from all the three banks.

The months turned into days and we were working hard to get the new signage in place for the bank, and Corona struck! Well, many reading this would be wondering, if a signage change was going to change everything? Did Corona pandemic come in the way of the inevitable?

Well, the answer is NO. The 3 banks did get amalgamated into one from

April 1, 2020 as planned. So, was this a merger? Was it a takeover?

The lockdown gave me the afternoon time to ponder and as I do with everything I do not understand completely, I first turned to see the dictionary meaning of the word – AMALGAMATION.

And dear! What I read was reassuring beyond words.

Here is what came up as the definition in the Merriam-Webster dictionary.

***“Amalgamation refers to a blending of cultures, rather than one group eliminating another (acculturation) or one group mixing itself into another (assimilation).”***

So, as it is so lucidly defined, I would like to think of the three banks coming together as a coming together of cultures, that would blend into each other to create a lasting impression on every single stakeholder we would serve. Unknowingly, here I have introduced two more words - **Culture and Stakeholder**.

**Culture** is defined by the ideas, customs and social behaviour of a particular group of people. Culture is defined by the refinement of our values and its manifestation as service to our **stakeholders**.

Each of the three banks surely bring the best of cultures from their founding fathers. It is without doubt that the founders of the three entities imbibed in their respective organizations a strong culture that echoed with the people they served. All the 3 banks have nearly 100 years of existence with a kaleidoscopic milestones and landmarks being created every year. I can speak for Andhra Bank, where the people we serve identify with us as an emotion. Our customers understand us as well, perhaps better than we understand them. Similar must be the case with the Union Bank and Corporation Bank. The stakeholders relate to the bank by the strong values that each represent. This is a strength that the amalgamated entity must strive to



preserve; the relationship that has been forged across generations must be maintained locally by all the three banks, while the best practices that are efficient must be universalized in the amalgamated entity. It is like flowers of different colours and fragrances coming together to create a beautiful bouquet. The customer enjoys the depth of colour of the red rose, the fragrance of jasmine and the absolute geometry of a tulip. All of them together creating a delight in the person receiving the bouquet. That is how I would imagine the cultures of our three banks to come together to serve our stakeholders.

This brings me to the next aspect that I think is to be the mantra of this amalgamation - **'THINK LOCAL, ACT GLOBAL'**.

This is the opposite of what's usually said – Think Global and Act Local.

While this amalgamation brings us to be the 5th largest bank in India with a combined 9500 branches and over 75,000 employees, it would appear that we must now start thinking global. I beg to differ – we must rather think local and act like a global bank.

We must act like a global multinational with processes and services at par with global banks but think of how to apply it to the local needs of our

country. We are at the threshold of a revolution in banking in our country where this amalgamation brings us to a critical mass with the resources and experiences to bring the best of the globe to our customers in India.

Customer being the biggest stakeholder of our organisation, it is extremely important that their interest be given utmost importance. It's an era of customer delight rather than merely customer satisfaction. Having said so, I think this amalgamation will only have positive impact on each of the three banks' customers:

They will be associated with a larger Bank, having a widespread network in all regions of India and better capital base. Their access to a larger number of branches and ATM network and Next Generation banking technology which will be cost effective for all the customers. They will have wide range of products and credit facilities which will be the best of class. So-called Mass-banking and Class-banking can be provided under the same banner.

India is the fastest growing large economy and regardless of the pandemic situation, that may not change. This country has always been destined for great things and the coming together of the banks as combined forces to represent

the financial strength will help our economy emerge stronger. As an economy, our strength lies in the internal demand that exists. As bankers, we have the advantage to help both the demand side and also the supply side of the economy. For the demand side, our retail customers who seek credit to realize their dreams of a car, a home, a good education and on the supply side, the industries both big and small seek our help to expand their products and services to provide the best to their customers. As bankers we are in such a unique position as I would summarize below :-

**'Think Local** for driving the demand side of the economy and **Act Global** to support the supply side – our industries and SME's to be aspire to be the best in global standards'.

Union Bank of India with the combined power of a pan-India presence with strong local recall of each of the former banks, with the combined financials might to support our industries, it is time our enthusiasm is at the highest to help India find its place in the world order as an economic power.

**Sabita Patra**  
Kodambakkam, Chennai  
E Andhra



शुभमस्तु



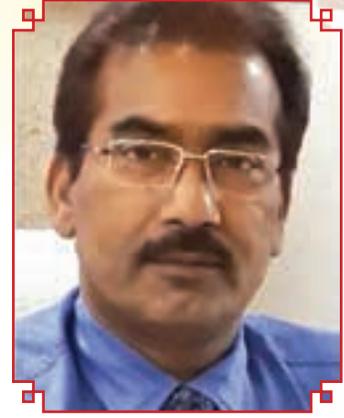
श्री अविनाश कुमार सिंह  
महाप्रबंधक



श्री पी. एस. राजन  
महाप्रबंधक



श्री रवींद्र कुमार कश्यप  
महाप्रबंधक



श्री पी सी पाणिग्रही  
महाप्रबंधक



श्री संजय शर्मा  
महाप्रबंधक



श्री डी सी चौहान  
महाप्रबंधक



श्री के. पी. आचार्य  
महाप्रबंधक



श्री के.एस.एन. मूर्ति  
उप महाप्रबंधक



श्री रakesh कुमार गुप्ता  
उप महाप्रबंधक



श्री लुकमान अली खान  
उप महाप्रबंधक

हम उनके सुखद एवं सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं.

उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !!



श्री सुरेश चन्द्र तेली  
महाप्रबंधक



सुश्री मीना खन्ना  
महाप्रबंधक



श्री आई ए नारायणन  
महाप्रबंधक



श्री शैलेश कुमार सिंह  
महाप्रबंधक



श्री अनिल कुरील  
महाप्रबंधक



श्री निहार रंजन सामल  
महाप्रबंधक



श्री प्रमोद कुमार सोनी  
महाप्रबंधक



श्री चंदर मोहन मिनोचा  
महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !!



श्री संतोष कुमार शुक्ला  
उप महाप्रबंधक



श्री हरे कृष्ण दास  
उप महाप्रबंधक



श्री महेंद्र कुमार श्रीवास्तव  
उप महाप्रबंधक



श्री गिरधारी लाल कुंदलवाल  
उप महाप्रबंधक



श्री हृषिकेश मिश्रा  
उप महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्वल भविष्य की कामना करते हैं.

# हमारे कलाकार



एकता है, अब मुझे तेरी तुलना करने और शक्ति का संचार हो गया है

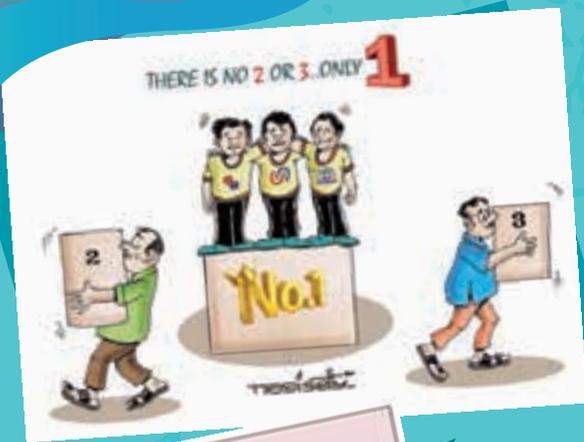


पुरषोत्तम के. माधवानी  
सीएमसीसी, के.का., मुंबई



आलोक भार्गव  
सेवानिवृत्त, दिल्ली

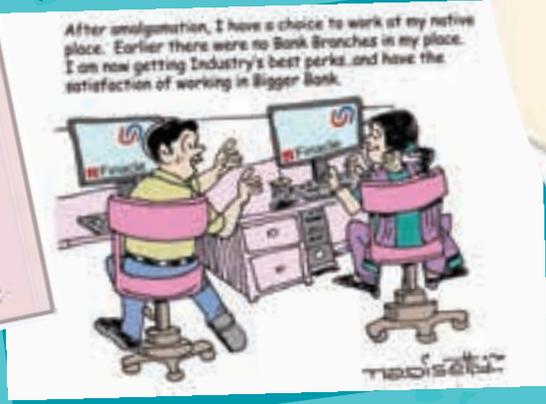




**N V Ramana Murthy**  
R.O. Eluru  
E Andhra



एकता में और अधिक शक्ति होती है.



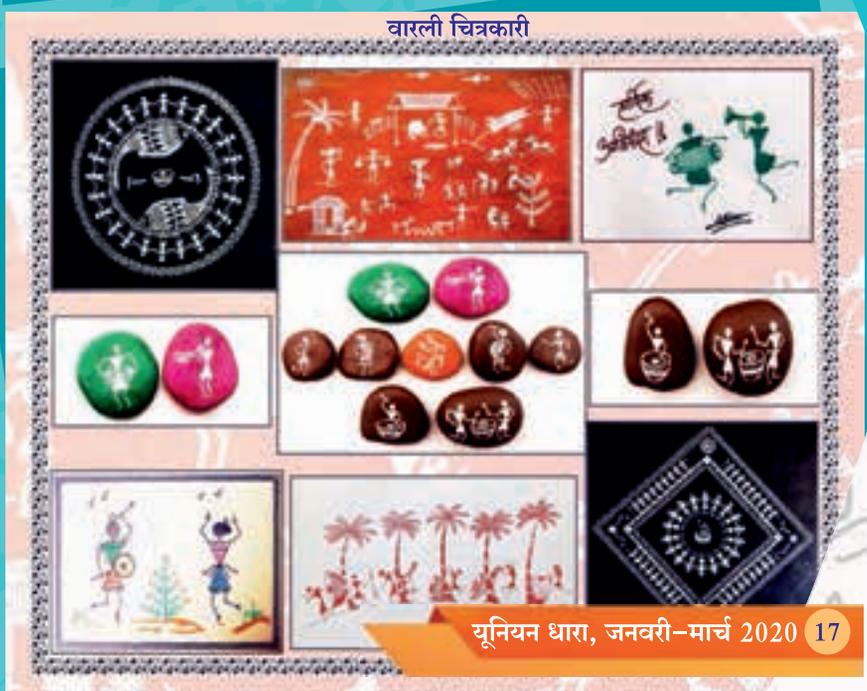
**आनंद कुमार भल्ला,**  
रामगढ़ शाखा; राँची  
ई आंध्रा



**V Srinivasrao**  
Branch kanuru  
Ro machilipatnam  
E Andhra



**नितिन द. गोसावी**  
क्षे.का., बडोदा



वारली चित्रकारी

## हमें गर्व है



दि. 26.01.2020 को गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में श्री डी. निलाद्री, प्रबंधक (पीएसएलडी), क्षे.का., विशाखापट्टनम को उनकी सराहनीय सेवाओं के लिए श्री वी. विनय चंद, कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट के कर कमलों से 'सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट' देकर सम्मानित किया गया.



दि. 7.03.2020 को आई सी ए आई भवन, विशाखापट्टनम में आयोजित संगोष्ठी में मुख्य भाषण देने के उपलक्ष्य में 'दी इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया' की विशाखापट्टनम शाखा द्वारा श्री अजय कुमार, उप महाप्रबंधक, क्षे.का. विशाखापट्टनम को शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया.



सिलीगुड़ी क्षेत्र की डाबग्राम शाखा के स्टाफ, श्री मृत्युंजय लोहारा ने ग्राहक द्वारा शाखा के लॉकर रूम में भूलवश छोड़े गये रु. 3.00 लाख एवं जरूरी कागजात तुरंत शाखा प्रबंधक के पास जमा किए और फिर उन्हें ग्राहक को वापस लौटा दिया गया.



वर्ल्ड फोटोग्राफिक फोरम द्वारा 27 से 29 मार्च, 2020 के दौरान अब्दुल रसूल अवेन्यू, कोलकाता में आयोजित डब्ल्यू पी एफ फोटोफेस्ट 2020 में केंद्रीय सतर्कता विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक, श्री प्रभास चन्द्र साह द्वारा लिए गए कुछ फोटोग्राफ्स को प्रदर्शित किया गया.



अजमेर मुख्य शाखा के स्टाफ सदस्य, श्री नरेश कुमार ने ग्राहक द्वारा शाखा के लॉकर रूम में भूलवश छोड़ी हुई लगभग रु.3.00 लाख की हीरे की अंगूठी ग्राहक को लौटा दी.



श्री अजय कुमार, क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का., विशाखापट्टनम; श्री डी. निलाद्री, प्रबंधक, आरएबीडी तथा श्री ए.के. प्रवीण कुमार, शाखा प्रबंधक, पाडेरु शाखा को नवंबर 2019, दिसंबर 2019 और जनवरी 2010 के लिए 'विनिंग वेनस डे ए पी वाई कैम्पेन अचिवर्स' बनने हेतु पीएफआरडीए द्वारा प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया.



डॉ. श्वेता रावत, पत्नी श्री कमल सिंह रावत, उप क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का., कानपुर, जो डीआरडीओ में वैज्ञानिक है, को दि. 28.02.2020 को नई में दिल्ली में राष्ट्रपति, श्री रामनाथ कोविन्द द्वारा 'प्रबला' तैयार करने हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया.



Shri K.V. Malleswar Rao, Asst.Mgr, Vizianagaram branch, RO, Visakhapatnam has been awarded winner in Badminton singles and runner up in doubles category in Vizianagaram District Badminton Championship-2019. This award has been presented by Mr I. Raghuraj, President, Vizianagaram District Badminton Association on 2nd February, 2020.



कुमारी पी प्रवल्लिका, सुपुत्री, श्री पी आर वी श्रीनिवासा राव, शाखा प्रबन्धक, अमलापुरम शाखा, क्षे.का., विशाखापट्टनम ने दि. 8.3.20 को आयोजित के जिला स्तरीय शतरंज चैंपियनशिप के महिलाओं की अंडर-25 श्रेणी में अंतिम विजेता बनी तथा राज्य चैंपियनशिप में भाग लेने के लिए चयनित हुई. उन्हें प्रमाण पत्र देते हुए श्री तोटा भोगय्या, अध्यक्ष, पश्चिम गोदावरी जिला शतरंज असोशिएशन.



कुमारी एनबीएस गीतिका, सुपुत्री, श्रीमती एनवीएनआर अन्नपूर्णा, क्षे.का, विशाखापट्टनम को दि. 4.12.19 को प्रख्यात तेलुगू संगीतकार श्री घंटसाला वेंकटेश्वर राव के 97वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक विभाग, आंध्र प्रदेश द्वारा आयोजित कार्यक्रम में श्री एम श्रीनिवास राव, पर्यटन मंत्री, आंध्र प्रदेश के कर कमलों से सम्मानित किया गया. इस अवसर पर मंच पर उपस्थित है, श्री डी श्रीनिवास राव, चेयर पर्सन, वीएमआरडीए (विशाखापट्टनम मेट्रोपॉलिटन रिजन डेवलपमेंट अथॉरिटी), श्री एवं श्रीमती घंटसाला रत्ना कुमार तथा श्री एल शिव शंकर, जाइंट कलेक्टर, विशाखापट्टनम.



ओलंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके कर्नाटक के खिलाड़ियों के लिए आयोजित सम्मान समारोह में नोक्षेका, बेंगलूरु में पदस्थ ओलंपियन वेटलिफ्टर श्री सतीश राय, मुख्य प्रबंधक (बैठे हुए बाएँ से तीसरे) का सम्मान दि. 02.01.2020 को बेंगलूरु के कांतिरवा स्टेडियम में केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री, श्री किरण रिजिजू (पीछे खड़े) ने किया.

## Statement about Ownership and Other Particulars concerning 'Union Dhara'

### Form IV (See Rule-8)

- 1. Place of Publication:** Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021.
- 2. Periodicity of Publication:** Quarterly.
- 3. Editor, Publisher and Printer's name, nationality and address:** DR. SULABHA KORE, Indian, Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021.
- 4. Name and addresses of Individuals who own the newspaper:** Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021.

I, DR. SULABHA KORE, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

Dr. Sulabha Kore

Signature of Publishe

March, 2020.



## समामेलन - एक मजबूत एवं बड़ी टीम

**सा**थियों, हम सभी ने बचपन में खरगोश एवं कछुए की कहानी सुनी है. आइए इसे पुनः दोहराते हैं. खरगोश एवं कछुए दोनों मिलकर रेस लगाते हैं. खरगोश तेजी से दौड़ता है तथा रास्ते में आराम करने रुक जाता है. कछुआ बिना रुके धीरे-धीरे दौड़ता है और रेस जीत लेता है.

अब इस कहानी को आगे बढ़ाते हैं. खरगोश को उसकी हार परेशान कर देती है. वह फिर से कछुए को चुनौती देता है. दोनों फिर से रेस लगाते हैं. अबकी बार खरगोश बिना रुके तेजी से दौड़ता है और रेस जीत लेता है.

अब कछुआ फिर से एक प्लान सोचता है एवं खरगोश को चुनौती देता है. खरगोश तुरंत स्वीकार कर लेता है. इस बार अपनी शर्त के अनुसार कछुआ रेस का मार्ग बदल देता है. खरगोश बिना रुके तेजी से दौड़ता है और अचानक रास्ते में एक छोटी नदी देखकर रुक जाता है. उसे पार करने का विचार करते-करते कछुआ उसके पास आ जाता है और कछुआ तैरकर नदी को पार कर लेता है तथा रेस जीत लेता है.

कहानी यहाँ खत्म नहीं होती. अब दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन जाते हैं. फिर से उसी मार्ग पर रेस लगाते हैं. इस बार खरगोश कछुए को अपनी पीठ पर बैठाता है तथा तेजी से दौड़ता है जब तक नदी नहीं आ जाती. नदी आने पर अब कछुआ खरगोश को अपनी पीठ पर

बैठाता है तथा नदी पार करते हैं. फिर से खरगोश कछुए को अपनी पीठ पर बैठाता है तथा तेजी से दौड़कर रेस जीत लेता है. इस बार दोनों एक साथ बहुत ही कम समय में रेस जीतते हैं तथा जीतने की खुशी मानते हैं.

साथियों, यदि हम चारों स्थितियों को देखें तो अंतिम स्थिति सभी के लिए एक विजेता वाली स्थिति होती है. जब हम एक टीम में काम करते हैं तथा एक दूसरे की शक्तियों और सामर्थ्य का उपयोग करते हैं तो हमारी व्यक्तिगत कमजोरियाँ परफॉर्मंस पर असर नहीं डालती और पूरी टीम एक साथ जीतती है. इसलिए TEAM<sup>2</sup> का फुल फॉर्म भी है-

T - Together, E - Everyone, A - Achieve, M<sup>2</sup> - Miracle

साथियों, ये सामामेलन प्रक्रिया भी हमें इसी प्रकार एक दूसरे के संगठनों को समझकर एक दूसरे की शक्तियों, क्षमताओं और सामर्थ्य का उपयोग करने का अवसर देती है. ये सामामेलन हमारी कमजोरियों को हमारे विकास में बाधक नहीं बनने देगा और एक टीम, एक परिवार की तरह हमें विकास के मार्ग पर आगे ले जाएगा.

क्षमताओं की बात करें तो, यूनियन बैंक की जोखिम प्रबंधन नीति एवं तकनीक, एमएसएमई ऋण का मजबूत आधार, केन्द्रीकृत प्रोसेसिंग प्रणाली, उत्तर एवं पश्चिम

भारत में बैंक की मजबूत उपस्थिति मुख्य रूप से शामिल है. आंध्रा बैंक की बात करें तो, मजबूत कृषि ऋण आधार, Digitally - First की प्रतिष्ठा मुख्य शक्ति है. कार्पोरेशन बैंक के पास मजबूत पीओएस, उपस्थिति और उन्नत उचड प्रोसेस का आधार है. आंध्रा एवं कार्पोरेशन दोनों ही बैंकों के साथ आने से हमारे बैंक का आधार एवं उपस्थिति दक्षिण भारत में सुदृढ़ हुई है.

समामेलन ने हमारी टीम (स्टाफ संख्या) के आकार को 75000+ कर दिया है तथा साथ ही हमें नए अवसर एवं नयी चुनौती भी दी है. इतनी बड़ी टीम जब एक साथ पूरी आशा, मेहनत और लगन से आगे बढ़ेगी तो हम अवश्य ही नये अवसरों को सफलता में बदल पाएंगे साथ ही चुनौतियों पर भी पूर्ण विजय पाएंगे.

हमें पूरी आशा एवं आत्मविश्वास है कि ये सामामेलन हम सबके लिए प्रगति और विकास के नए-नए मार्ग खोलेगा एवं अच्छी ग्राहक सेवा के द्वारा हम अपने आपको एवं बैंक को नयी ऊर्चाईयों पर ले जाएंगे और 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था के सपने को प्राप्त करने में हमारा पूर्ण एवं अहम योगदान होगा.

नवीन गुप्ता  
सरल, मुंबई (पश्चिम)





## Cultural Integration & Amalgamation

**A**BIG Namaste to all readers of the now bigger Union Bank of India. Let's begin by understanding organization culture, simply to put 'it's the way things are done around here'. I recollect one of my seniors during my short tenure at Central Office referring to the term 'ecosystem' while describing the organization culture. I believe, it must come from a set of values systems & beliefs that govern how their people act or even react on a daily basis. Organization culture evolves with time to stay relevant & thus is never static. With change in technology, business environment, age profile & skill sets of employees, not to forget customers & their aspirations too, haven't we as a Bank changed a lot over the years. People particularly in Banks like to associate culture with the unique signage, logo, corporate colours, brand ambassador, product name, office etiquette, etc. but mind you, it's much larger than that because it gives them a sense of identity & belongingness.

Now coming to Mergers & Amalgamation, you must have often heard or read in reports that 'Most major M & A have failed because of poor integration of cultures of entities'. So when it's that very important, the ONE THING that should foremost occupy the minds of top leadership involved in the process of M & A process is cultural integration of people of the companies. Easier said than done, we need to set up 'Culture Integration Teams' which should have leaders from all the entities. It's suggested that cultural integration teams should be in place

right from the beginning and make its presence felt throughout the process of amalgamation. It may so happen that in the heat of harmonization of products, processes and systems this vital aspect may take a back seat, but then this may prove costly at a later date. They could begin with conducting a research or DUE DILIGENCE in banking parlance to determine culture of merging organizations, their strengths & weaknesses. Though it's a favorite byline of a section of columnists (so called pundits) that if you have seen one PSB, you have seen 'em all, it only goes to show their lack of understanding of how these organizations have survived & grown over a hundred years. The team should actively collaborate to look for best practices in all companies, peers & adapt them in the new avatar. Mind you, we can use this god sent opportunity to identify & imbibe new behavior, key values & cultural elements you would like in the new organization. Let's try not to make a hash out of old ideas of respective companies to please everyone instead seek something new, fresh about which the employees will instantly identify. Relying solely on old value systems & culture because they are there for years together is illogical & counterproductive. You are simply doing something because you have not thought of something better to do. With the idea of new organization culture firmly in place, we can now move to the next level.

It's time to spread the word how the new thing came about & celebrate to get wider acceptability. It's common

that the merging entities will be keen to maintain their own cultures. A few people may overtly oppose to accept the new culture of the organization or even become opinion leaders to ensure that people don't accept. Top leadership will now have to step in to define the new vision, mission & goals and how things will work in the new scheme of things. Include the leadership of all merging entities working in corporate office & field together to bring them on the same page. At the same time, develop a communication plan with time lines which should be owned by top leadership for reaching out to all the employees. Communicate frequently, with utmost honesty & transparency by using variety of mediums.

Ensure buy in's. Survey your people frequently, preferably with short specific questions. Surveys can be as simple as a one question a day so that you have a set of answers at the end of a week. Report findings fast & inform how the management has addressed the concerns expressed by people in the surveys. This will ensure buy in & wider acceptability to the action plan of leadership.

We should try to overcome the 'us & them' mentality instead we need to create a culture of 'We' mentality. The expected synergies will not come about without synergies of mind.

To conclude instead of pushing differing cultures to combine, the leaders know better that it may take some time for people to step out of comfort zones, adopt new culture & practices.

*"If you get the culture right, most of the other stuff will take care of itself"*

- Tony Hseiss

**Dr. Ajit Marathe**  
R.O., Nasik





# Amalgamation of Banks

**A** amalgamation is a process where one or more entities are subsumed into another entity, giving birth to a new institution. There is a 'share-swap' process where shareholders of various entities being subsumed are allotted certain number of shares in the new entity.

The Banking Companies (Acquisition and Transfer of Undertakings) Acts of 1970 and 1980 provide that the Central Government, in consultation with the Reserve Bank of India (RBI), may make a scheme, inter alia, for the amalgamation of any nationalised bank with any other nationalised bank. Various committees, including Narasimhan Committee (1998) constituted by the RBI, Leeladhar Committee (2008) chaired by RBI Deputy Governor, and Nayak Committee (2014) constituted by the RBI, have recommended consolidation of public sector banks (PSBs) given the underlying benefits/synergies.

## History of Mergers in Indian Banking

Mergers of banks began in India in the 1960s in order to bail out the weaker banks and protect the customer interests. After that, in post liberalization period, the quest to create an Indian bank that would be in the league of global giants had been continuing since 1990. Moving on the path of creating one of the largest global banks, the government had approved the merger of five associate banks with SBI in February 2017. Later in March, the Cabinet approved merger of Bharatiya Mahila Bank also.

**Merger & Nationalization during the period from 1961-1969:** The period is called pre-nationalization period because in 1969 the government nationalized 14 private banks.

**The period from 1969-1991:** The period was called post-nationalization period. It saw six private banks being nationalized in 1980. In this period, 13 mergers took place mostly between public and private sector banks.

The post liberalization period, which stretches from 1991-2015, saw major economic reforms initiated by Government of India. Many new policies were framed. Greater FDI and foreign investment was allowed which saw resurgence in Indian Banking. As many as 22 mergers took place - some to save weaker banks and some for the sake of synergic business growth.

**Bank Mergers (1993-2004):** The merger of Oriental Bank of Commerce with Global Trust Bank in 2004 saved the latter after its net worth had wiped off and also handed OBC a million depositors and a decent market in South India. Mergers of Punjab National Bank (PNB) with the then eroded New Bank of India (NBI) in 1993-94 and that of Benaras State Bank Ltd. with Bank of Baroda in 2002 also proved to be life saving for the weaker banks.

**Bank Mergers & Consolidation 2008-2010:** SBI first merged State Bank of Saurashtra with itself in 2008. Two years later in 2010, State Bank of Indore was merged with it. The board of SBI earlier approved the merger plan under which SBBJ shareholders got 28 shares of SBI (Re.1 each) for

every 10 shares (Rs10 each) held. Similarly, SBM and SBT shareholders got 22 shares of SBI for every 10 shares.

Post the merger, the SBI was in the process to rationalize its branch network by relocating some of the branches to maximize reach. This, according to SBI helped the bank optimize its operations and improve profitability.

**Consolidation of Banks (2015-2017)** This phase saw five associates of SBI and Bharatiya Mahila Bank getting merged in SBI. This resulted in SBI being one amongst the 50 largest banks in the world.

Union Cabinet decided to merge all the remaining five associate banks of State Bank Group with State Bank of India in 2017.

Five associates and the Bharatiya Mahila Bank became the part of State Bank of India (SBI) beginning April 1, 2017. After the merger, the total customer base of SBI increased to 37 crore with a branch network of around 24,000 and around 60,000 ATMs across the country.

The largest ever merger in the public sector banking space in India has taken place on Wednesday April 1, 2020 when six Public Sector Banks were merged into four large banks in a bid to make them globally competitive. Customers, including depositors of the merging banks, will now be treated as customers of the banks in which they have merged.

Following discussions between the Indian Banks' Association and

employees' representatives on various demands raised by employees' organisations, the government has requested the amalgamating banks to form joint committees of the Executive Directors of the banks concerned to consider and make appropriate recommendations to the management and/or Bank's Board on matters arising from or related to the proposed amalgamation. The government has repeatedly assured that not a single employee will be retrenched.

Following the consolidation, there are now seven large public sector banks (PSBs) and five smaller ones. There were as many as 27 PSBs in 2017. The total number of public sector banks in the country have come down from 18 to 12 effective April 1, 2020.

State-owned banks have been reeling under a bad loan crisis for years now. According to the government, the size of gross non-performing assets of state-owned banks stood at ₹7.9 lakh crore, as of March 31, 2019. Although the government has not projected the present merger as a measure to tackle bad loans, bank mergers in the past have been carried out simply to bail out struggling banks.

The Banks' merger dated April 1, 2020 has resulted in the creation of seven large PSBs with scale and national reach, with each amalgamated entity having business of over ₹ 8 lakh crore and it has helped to create banks with scale comparable to global banks and capable of competing effectively in India and globally.

In addition, consolidation would also provide impetus to merged entities by increasing their ability to support larger ticket-size lending and have competitive operations by virtue of greater financial capacity.

Last year, Dena Bank and Vijaya Bank were merged with Bank of Baroda.

**The details of the banks formed after mega merger is as under:**

**2nd Largest Bank :** Oriental Bank of Commerce and United Bank merger into Punjab National Bank has created a bank with ₹17.95 lakh crore business and 11,437 branches.

**4th Largest Bank :** The merger of Syndicate Bank with Canara Bank has created the fourth largest public sector bank with ₹15.20 lakh crore business and a branch network of 10,324.

**5th Largest Bank :** Merger of Andhra Bank and Corporation Bank with Union Bank of India has created India's fifth largest public sector bank with ₹14.59 lakh crore business and 9,609 branches.

**7th Largest Bank:** The merger of Allahabad Bank with Indian Bank has created the seventh largest public sector bank with ₹8.08 lakh crore business having strong branch networks in the south, north and east of the country.

The details of the banks that will remain independent are as under:

Indian Overseas Bank, UCO Bank, Bank Of Maharashtra, Punjab and Sind Bank, Bank Of India, Central Bank Of India.

After entire merger exercises, the next-generation PSBs of India can now be ranked according to their business size, as follows:

| SNo. | Bank Name            | PSB Rank by size |
|------|----------------------|------------------|
| 1    | State Bank of India  | Largest          |
| 2    | Punjab National Bank | 2nd largest      |
| 3    | Bank of Baroda       | 3rd largest      |
| 4    | Canara Bank          | 4th largest      |
| 5    | Union Bank of India  | 5th largest      |

|    |                       |              |
|----|-----------------------|--------------|
| 6  | Bank of India         | 6th largest  |
| 7  | Indian Bank           | 7th largest  |
| 8  | Central Bank of India | 8th largest  |
| 9  | Indian Overseas Bank  | 9th largest  |
| 10 | UCO Bank              | 10th largest |
| 11 | Bank of Maharashtra   | 11th largest |
| 12 | Punjab & Sind Bank    | 12th largest |

The biggest overhaul in public sector banks has left India with only 12 banks now instead of 18 before the Merger.

| Banking order (Largest to Smallest) | Business in Lakhs of crore Rupees | Market Share |
|-------------------------------------|-----------------------------------|--------------|
| State Bank of India                 | 52.1                              | 22.5         |
| PNB + OBC + United Bank             | 17.9                              | 7.7          |
| HDFC Bank                           | 17.5                              | 7.6          |
| Bank of Baroda                      | 16.1                              | 7            |
| Canara + Syndicate Bank             | 15.2                              | 6.6          |
| Union + Andhra + Corporation Bank   | 14.6                              | 6.3          |
| ICICI Bank                          | 12.7                              | 5.5          |
| Axis Bank                           | 10.6                              | 4.6          |
| Bank of India                       | 9.0                               | 3.9          |
| Indian + Allahabad Bank             | 8.1                               | 3.5          |

Source:TOI Aug,2019

It is but the desire for growth that acts as the fuel not only for an entrepreneur but also for every professional or corporation. This deep

desire for growth in terms of customer base, balance sheet and profit has led the organizations engaging in mergers and acquisitions to move ahead and onwards in synergy.

The Indian Banks too did not stay aloof from this wave of mergers and acquisitions (M&A). Initially banks were merged to save non-performing banks or non efficient banks but as time evolved, the system too evolved. In the recent times mergers and acquisitions have also been made on the grounds of business growth, profitability and organizational restructure.

### Advantages of Merger

- **Competitive:** The consolidation of PSBs helps in strengthening its presence globally, nationally and regionally.
- **Capital and Governance:** The government's intention is not just to give capital but also give good governance. Hence, post-consolidation, boards will be given the flexibility to introduce the Chief General Manager level as per business needs. They will also recruit Chief Risk Officer.
- **Efficiency:** It has the potential to reduce operational costs due to the presence of shared overlapping networks.
- **Technological Synergy:** All merged banks in a particular bucket share common Core Banking Solutions (CBS) platform synergizing them technologically.
- **Self-Sufficiency:** Larger banks have a better ability to raise resources from the market rather than relying on State exchequer.
- **Recovery:** The loan tracking mechanism in PSU banks is being improved for the benefit of customers.
- **Monitoring:** With the number of PSBs coming down after the process of merger - capital allocation,

performance milestones and monitoring would become easier for the government.

- **Cost Saving:** Multiple posts of CMD, ED, GM and Zonal Managers will be abolished, resulting in substantial financial savings and cost of banking operation.
- **Diversification of Activities:** Mergers also help in the diversification of the products. The improvement in capital base enables the banks to take up new and diversified activities such as financing equity underwriting insurance products, issuing asset-based security providing new delivery channels, etc.

### Disadvantages of the Merger

- **Decision Making:** The banks that are getting merged are expected to see a slowdown in decision making at the top level as senior officials of such banks would put all the decisions on the back-burner and it will lead to a drop in credit delivery in the system.
- **Geographical Synergy:** During the process of merger, the geographical synergy between the merged banks is somewhat missing.
- **Slowdown in Economy:** The move is a good one but the timings are not just apt. There is already a slowdown in the economy and private consumption and investments are on a declining trend.
- **Weak Banks:** A complex merger with a weaker and under-capitalized PSB would stall the bank's recovery efforts as the weaknesses of one bank may get transferred and the merged entity may become weak.
- **Change of Culture:** Banks are merged only on papers. Their people and culture are difficult to change. It is a recipe for disaster as

it leads to poor culture not ideal for the organization or the economy.

- **Risk of loss of customer base:** Banking policies sometime change, along with technological platforms and that may not go down well with customer base, especially with long term and elderly customers.
- **Discontent Among employees:** Despite new positions being created, a considerable number of positions are abolished with the merger, resulting in a number of people becoming jobless.

Mergers are important for the consolidation and expansion purposes that is why in today's scenario many private sector banks are genuinely interested in mergers and acquisition.

Merger creates variety of problems which can cause great damage if the process of merging is not executed properly. Bank mergers and acquisitions are complex procedures with the possibility of extraordinary payoffs. Hence, it is important that the banks and government handle the nitty gritty of this pivotal transformation with care.

To enter the global financial market and to survive in the high-risk field of competition with foreign banking giants, Indian banking industry badly needs consolidation. Indian banks are facing tough competition from their international counterparts, as the foreign banks with huge capital base are able to offer loans to borrowers at attractive rates that make the Indian banks vulnerable to economic shock and consequent instability. These issues need to be addressed through strengthening the capital base of such banks, which is possible only through mergers and acquisitions.

If people, work culture and vision are blended together nicely, merging will definitely have synergic effect and create a win-win situation.

Rahul Agrawal

Textile Market Branch, Surat



## बैंकों का विलयन (Merger) एवं समामेलन (Amalgamation)

**बैंकों** का समामेलन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दो या दो से अधिक बैंकों को आपस में मिलाकर एक कर दिया जाता है। बैंकों का एकीकरण होने के बाद बने एकीकृत बैंक, या तो अपने पुराने नाम से, या फिर एक नए नाम के तहत काम कर सकते हैं।

अगर हम बैंकों के विलय का इतिहास देखें, तो 1969 में इन्दिरा गांधी सरकार ने देश के बैंकिंग क्षेत्र की तस्वीर ही बदल डाली थी। पहले 14 और बाद में 1980 में 6 और नीजी बैंकों को (राष्ट्रीयकृत बना दिया या दर्जा दिला दिया) सरकारी बना दिया। वक्त गुजरने के साथ-साथ बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ और 1991 (उदारीकरण) में कई आर्थिक बदलाव किए गए, जिसके चलते बैंकिंग सेक्टर देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन गया। इतना ही नहीं ग्राहकों का निवेशों में भी बैंक के प्रति भरोसा बढ़ता चला गया।

विश्व के ग्लोबल विलेज बनने से भारतीय बैंकिंग उद्योग को विश्व की अन्य अर्थव्यवस्थाओं के साथ सीधा प्रतिस्पर्धा में ला खड़ा कर दिया और विश्व के मानकों को भारतीय बैंकिंग पर भी लागू कर दिया गया। दिसंबर 2017 तक इन भारतीय बैंकों में करीब 9 लाख करोड़ से अधिक का एनपीए हो चुका है, जो सरकारी बैंकों की कमर तोड़ रहा है, जिसकी वजह से बैंकों का घाटा भी बढ़ रहा है और इसका सीधा असर हमारी अर्थव्यवस्था पर हो रहा है। साथ ही वैश्विक मानकों के अनुपालन हेतु बैंकों पर लगातार पूंजी का दबाव बढ़ता जा

रहा, साथ ही बैंकों का निवल लाभ लगातार नकारात्मक होने से बैंकों पर दबाव क्षेत्र बनता रहा इसलिए अब यहीं सरकारी बैंक परेशानी से जूझ रहे हैं।

दूसरी समस्या परिचालन लागत की भी है, जो घटने का नाम ही नहीं ले रही है और सेवाओं पर बैंकों का मार्जिन भी लगातार कम हो रहा है। अर्थव्यवस्था में सुस्ती, जीडीपी पाँच प्रतिशत या उससे भी नीचे गिरना, यह दर्शाता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था मंदी की तरफ बढ़ रही है। बैंकों के वर्ष 2017-18 के वित्तीय नतीजे आने के बाद इन बैंकों की परिसम्पत्तियों के पुनर्गठन के लिए सरकार ने एक समिति का गठन किया। इसके अलावा बढ़ते घाटे और डूबते कर्ज की वजह से सार्वजनिक क्षेत्र के 21 में से 11 बैंक PCA के दायरे में डाल दी गईं। अब सवाल यह है कि बैंकों को इस परेशानी से कैसे बचाया जाएं।

हमारी अर्थव्यवस्था और बैंकिंग हालात को देखकर केंद्र सरकार ने, देश के 10 बैंकों के एकीकरण का प्रस्ताव पारित किया। सरकार का मानना है कि एकीकरण करने से बैंकों की कर्ज वितरित करने की क्षमता बढ़ेगी, उनके कैपिटल में भी वृद्धि होगी और उनका तुलनपत्र (बैलेन्स शीट) भी मजबूत होगी। इस फैसले के परिणाम स्वरूप देश के बड़े सार्वजनिक बैंक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मुकाबला करने में सक्षम हो जाएंगे। देश की यह नयी बैंकिंग प्रणाली भारत को 5 मिलियन

डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने में योगदान दे सकेगी और साथ ही देश के वित्तीय ढाँचे को मजबूत करेगी। इस एकीकरण के बाद होने वाले फ़ायदों के बारे में अभी बहुत आशान्वित होना उचित नहीं होगा, क्योंकि इसके परिणाम दूरगामी भी हो सकते हैं। निश्चित रूप से इस नयी व्यवस्था में कुछ चुनौतियाँ भी हैं।

- \* बैंकों के विकेन्द्रीकरण से क्षेत्रीय लाभ खत्म होंगे।
- \* बड़े बैंकों में आर्थिक संकट के वक्त ज्यादा जोखिम होगा।
- \* बैंक कर्मचारियों को तकनीकी स्तर पर चुनौती बढ़ेगी।
- \* हर बैंक की अपनी कार्यपद्धति होती है। विलय होने के कारण इन पद्धतियों में टकराव हो सकता है और इस वजह से काम करते समय कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है, जिसका असर ग्राहक सेवा पर हो सकता है।

अतः निश्चित रूप से संकटों से घिरी बैंकिंग व्यवस्था के लिए सरकार के द्वारा लिए गए कदम संजीवनी होंगे और नयी ऊर्जा से लबरेज नए एकत्रित बैंक और अधिक दक्षता से परिचालित होंगे यह आने वाला समय ही बताएगा।

निशांत वर्मा  
क्षे.का., नासिक



# ASK



**Banks are the fulcrum of Economic system:** The economic development of a country depends on its strong Banking System. The current development is witness to the fact that Banks have played a leading role in the country's growth journey. Along with the nationalization of Banks, the bigger responsibility of social development was entrusted to the Banks, which has been discharged very efficiently & effectively in the ups & downs of challenging times. The banks have always surpassed the expectations and stood by the test whether it is for Employment Creation, Social Security, Implementation of Welfare Schemes, Infrastructure Development, Demonetization, 'Clean, Green & Healthy Economy', etc.

Increasing Asset Quality Stress, muted credit growth during decreasing policy rates, deteriorating quality & quantum of capital requirement, etc. are the few challenges being faced by the Banks. The entry of new generation of private banks, differentiated banks (Payment Banks & Small Finance Banks) and increased collaboration with fintech companies, non-banks and insurance companies have led to massive diversification with inherent risks. The technological innovations and greater connect with non-bank financial services have brought new challenges which need stronger risk appetite and larger asset size. The asset size of Indian banks is low in comparison to International Banks. The need for banks of global scale size has been felt for a long time in the past in the post globalization era but now it has come at an opportune time to harness and fulfill India's vision of making it a 5 trillion dollar economy in the next five years.

## **Amalgamation Objectives:**

To overcome all these challenges, the Government has taken many initiatives mainly aimed to reform the Public Sector Banks like strengthening Banks' Board, Insolvency & Bankruptcy Code, Capital Infusion, EASE Reform & Amalgamation. These are nothing

## **Enabling Excellence**

but laying the foundation stone for a Bigger & Stronger economy and make a highly aspirational \$ 5 trillion economy. Now, the Banks have to start preparing for the next big leap to achieve this milestone keeping pace of the transformation process. The objectives of amalgamation are to :

- Increase lending appetite
- Conserve capital
- Improve Risk Management Capabilities
- Attain economies of scale in augmenting business growth

With the Changing contours of the economy, the banking sector has adopted the strategy to meet the expectations of every stakeholder.

## **Our Bank's Perspective :**

In the ever-growing competitive environment, we as financial institutions have to find out new ways & means not only to survive but also to prosper keeping the pace of changes with time. It's a fact that Banking will remain same but the way of doing it in the fast changing scenario (in the era of ever growing customers' insatiable preferences & demands) will definitely take a different shape.

If we continue to do the same thing, we will continue to get the same result. We cannot expect a different result by doing the same thing. Now, where the change itself is changing and is no longer constant, as during the last decade we have witnessed the pace of change in every sphere of life out-beating all the records. Be it product change, technological change, process change, etc. which influence the human behavior upto a great extent. Now we cannot expect the same result even if we continue to do the same thing without adopting to changes.

Our Bank has taken many pioneering initiatives in the transformation journey during those rough weathers which laid the strong foundation to become a bigger Bank. This journey of transformation received a tremendous fillip during the last 3 years when Vision 2020 was set up for the Bank with an aspiration to become the 3rd largest Public Sector Bank in domestic business. The major initiatives (like Verticalization of resources, Centralization of Credit Processes, Specialization of Monitoring & Recovery processes, Digitization, etc.) were aimed at creation of world class structures to meet the changing times which subsequently aligned with the Govt.'s EASE Reform. The biggest change impact felt during this journey has been the cultural shift in according basic banking services to customers based upon the principle of customer centricity.

With the notification by the Ministry of Finance, our Bank has become Bigger, Bolder & Stronger now with the amalgamation of culturally rich and financially strong Andhra Bank & Corporation Bank. 'Much more to do with You in focus' and 'Prosperity for All' amalgamated into 'Good People to Bank with' having more than 300 years of experience is now firmly moving towards to become 'Best People to Bank With' with the Strong & Best leadership at the Top. **The major challenges in the amalgamated entity are the integration of technology platforms and managing HR & cultural issues.** Our Bank has been a pioneer in the Technology initiatives like computerization, CBS Migration, Digital products and digitalization of processes, etc. With the strong infrastructure in place and the process led by a very strong IT team,

very smooth technology integration is expected in the days ahead. The integration of highly rich cultures and employee centric approach of the Top Management will definitely be helpful in addressing the contemporary & future challenges.

**People Centricity** : The primary objective of every initiative of our Bank is to build up the competencies of employees for efficient & prompt delivery of products & services which will benefit every stakeholder. In the service industry like bank, frontline employees play a very vital role to address the business challenges and for the public they are the face of the Bank. With the strong set of motivated & dedicated employees (invaluable human capital, an intangible asset); Bank can achieve any of its aspirational goals within the set timeframe. As we deal in public money and being a custodian of their wealth, every role in the bank requires leadership quality having highly professional approach; therefore every Unionite has to take charge and display the role of a leader at their respective level. It is incumbent upon each one of us to lead by an example. Further, to transform this Good Bank into the Best Bank, every Unionite has to transform himself/herself to be the best in delivering the Best-in-Class services. In the rapidly changing scenario, we need to learn to adapt ourselves and deliver the best as per the demand of the time. **"It is not the strongest of the species that survives, or the most intelligent that survives. It is the one which has adapted the most with the Change."** Bank is rapidly transforming itself in every area of business and functions as per the changing needs. The creation of new verticals and new roles will require up-skilling and development of functional expertise at large scale.

#### **Transformation Wheel:**

One of the greatest inventions of human civilization is the wheel that transformed the life of human beings and brought civilization to a unique and great height. The wheel represents the sign of change. Wheel is a symbol of growth & development and without which, life is not possible. It's true that every bit of growth brings change in it. Change is the law of nature. It was always there

and will continue to be there which each one of us experiencing all the time. The life cycle of any living being passes through different phases of life with lot of changes every moment. One such wheel is there in each one of us formed by these three traits viz. Attitude, Skill & Knowledge. In the absence of any one of these, we cannot form the wheel and cannot move ahead. Therefore, all these three traits should be in a balanced form (homogenous blend of attitude, skill & knowledge). These represent 'Why' (purpose, goal), 'How' (process) & 'What' about our duties and responsibilities as well as about any of our action in fulfilling our ambition and achieving the goals.

**Attitude** is one factor that is universally acknowledged to be capable of overcoming every possible disadvantage. It is also one of the factors which can destroy the benefits of every possible advantage. Attitudes have to be analysed in the light of real life situation to which they are related. It is our attitude which differentiates us to look at a glass full (half water + half air), half full or half empty. Here, attitude represents why (purpose) of the action being undertaken. It is crucial to know about the purpose of the action to be taken, accordingly one can decide about the further course of action. "Why are we doing what we are doing" will give clarity of our action and accordingly we can explore to choose any other alternate option available to achieve the set goals. It shows us other ways of doing things & gives us clear direction. If you do not know your goal, attainment of anything will mean everything or achieving everything may mean nothing.

**Skill** is the ability to perform an action with determined results often within a given amount of time, energy or both. Skill can be of two categories: General and Specific. As Bankers we need to know how to deliver the products & services to customers. Therefore, it is incumbent upon us to acquire broad range of skills to contribute for a better tomorrow. These skills are technical skills, soft skills (Communication, Inter-personal, Etiquettes, etc.), social skills, life skills and other job related skills. To improve the efficiency & profitability

of the Bank, productivity of each Unionite has to be improved which is possible only through continuous skill development.

**Knowledge** is the condition of being aware of something. It is information and understanding about a subject or action which is to be undertaken. One should know every in & out of the action to be taken. What is the beginning point of any endeavor. Being knowledgeable about the job is the best way to grow the community of loyal customers. Bank may have best products, technology and ambience but if we do not have knowledge about our products & services we cannot grow our business. Job knowledge leads to self-development as well as the development of the organization. It also empowers us in providing excellent customer service and ensures that we adhere to the laid down systems and procedures in the processes. Knowledge about the project as well as the people to whom we finance is also equally important which must be ensured at every stage. One must have fire in the belly to learn and earn the aspiration of one's life / professional career.

Thus, with this wheel of Attitude, Skill & Knowledge one can spearhead towards achieving one's aspiration. Naturally, speed of the movement depends on the size of the wheel. If we increase the size of the wheel (our attitude, skill & knowledge), we can take quicker & faster decision in our day to day life. We are also required to ensure this wheel within our customers to whom we are financing while doing due-diligence. They should know the WHY (Purpose), HOW & WHAT of their activities and should possess the required size of this wheel. Through educational & training activities, a person can acquire new knowledge, develop new skills or form a new attitude.

We, as Bankers have to play a highly proactive role in discharging our manifold responsibilities & duties. It is incumbent on each one of us to learn continuously to upgrade knowledge & skill levels. We should have curiosity to ask to increase the size of our ASK.

**IRR = IRR** : An organisation's performance is directly related to the performance of its human

resources. In the pursuit to be known as inclusive, responsive & responsible Bankers, significant investment is being made by the Bank to develop core skills & capabilities such as leadership, management & finance of the employee. Capacity building is largely being undertaken by our robust training system. Every endeavor is to increase the size of this wheel ASK in order to create a leadership pipeline as a part of succession planning. The investment in employee development, to increase ASK wheel, will definitely result into very high productivity & efficiency (IRR=Internal Rate of Return) which can be measured in terms of Inclusive, Responsive & Responsible (IRR) approach adopted by each Unionite in every action.

**Way Forward :** Every Unionite should align the personal vision with Bank's vision to become the people of first choice anywhere & everywhere through a process of continuous improvement. Our Bank is in the right hand and moving with a firm step in the right direction to achieve the set goals to become the 'Best Bank to Bank With'. With the continuous journey of our Bank's transformation process, it is incumbent upon each one of us to build up our capacity not only the contemporary business challenges but also challenges of the future in the ever growing era of VUCA (Volatility, Uncertainty, Complexity & Ambiguity). **चलो कदम से कदम मिला के, दूर किनारे मत बैठो** continue to keep asking for ASK.

"At this juncture, we have a unique opportunity to create a world class banking system – for our customers, employees, partners and our stakeholders", call given by our worthy MD & CEO Shri RajKiran Rai Sir which every Unionite has taken whole heartedly and are ready transform this 'Good Bank to Work With' into '**Best Bank to Work With**'.

Yes 'Winners don't do different things, they do things differently' and we are born as Winners & continue to be Winners.

If you don't ASK, you don't GET

**Hrishikesh Mishra**

R.O., Siliguri



## Story of Single Store

India is a developing country where construction field is having its own mark in its development since 1900's. Once there lived three businessmen in India named Seth Poddar, Khan Bahadur, Sitaramaiah. The first one, Seth Poddar had a business in Mumbai called 'Mumbai Sands'; the second one, Khan Bahadur ran a business named 'Karnataka Bricks' is from Karnataka and the third one, Sitaramaiah ran a business called 'Andhra Cements' is from Andhra Pradesh. These three businessmen were running their firms smoothly in their areas for many years, helping the people around them in constructing their homes at cheaper rates and are earning profits at medium scale.

Once there occurred floods in Karnataka region which damaged most of the sand reserves in that region which made people find it difficult to build their buildings. Then the businessman Mr. Khan Bahadur came forward to solve the issues of people and searched many traders to find the best quality sand for his customers. One fine day, he met Mr. Seth Poddar in one Business Market and discussed all the problems faced by people regarding sand issues. Mr. Khan Bahadur found Mr. Seth Poddar a responsible person and requested him to provide good quality sand for his customers at cheaper rate so that people can fulfill their dreams. Mr. Seth accepted his proposal and now Karnataka region is free from sand issue because Mr. Khan Bahadur started trading sand along with bricks business with the help of Mr. Seth Poddar at cheaper rates.

In Mumbai area some of the big cement traders started selling cement at higher cost intentionally. This made it difficult for people to buy cement for their construction purpose. Mr. Seth Poddar was very worried about his customers and shared the situation with Mr. Khan Bahadur who said that he has one friend Sitaramaiah who sells cement in Andhra region & is very good person, he can help him to find a solution. Mr. Seth Poddar went to Mr. Sitaramaiah and told all the sufferings that Mumbai people are facing these days. With the help of Mr. Sitaramaiah, Mr. Seth Poddar started selling cement to his customers at cheaper rates.

One fine day when all the three Businessmen were talking about their businesses, Mr. Seth Poddar came up with an idea of having a single entity that trades all the three products - cement, sand and bricks at cheaper rates in entire country. In this way people can access to all the three products in one stop shop. Other two were happy with the concept and started the entity 'EKTHA Construction Materials'. Ektha company got so much fame in no time with its reach in all parts of the country and all the customers are happy for having good quality products at cheaper rates at a single store. All the three businessmen were happy seeing the satisfied customers and they are having good profits. This proved that unity always gives good results.

**K. Naini Madhuri**

Hubli Dharwar Br., Hubli  
E Andhra





# UNION – THE STORY OF AMALGAMATION

Ever read a novel wherein it begins with people in different parts of the world, their own experiences as they grow up, their journey through life? The first few chapters seem independent narratives and often make you wonder how these different stories ended up being a part of one novel. The beauty of the content or the master stroke of the story teller is in how he intertwines these seemingly disjointed narratives, weaves them together into one piece and lo and behold a beautiful story is spun to life.

This is the story of manifestation of vision of 3 men in three different parts of pre-independence India into reality which has stood the test of time, so to speak, a century to be precise and is there to live on as a GOING CONCERN.

Once upon a time there lived 3 men in 3 different times, in 3 different parts of India - one in Machilipatnam, one in Udipi and one in the erstwhile Bombay.

In the late 19th century, in the humble coastal town of Machilipatnam, then and even now known for its Kalamkari print, Bhogaraju Pattabhi Sitaramayya (24-11-1880 – 17-12-1959) was born. He was an Indian independence activist and political leader in the state of Andhra Pradesh. Born in Gundugolanu village, Krishna district (now part of West Godavari district) in Andhra Pradesh, Pattabhi graduated from the prestigious Madras Christian College, fulfilled his ambition to become a medical practitioner by

securing a M.B.C.M. degree. He started his practice as a doctor in the coastal town of Machilipatnam, but he left his lucrative practice to join the freedom fighting movement.

Around the same, about 1000 km diagonally south from the west coast, was the humble town of Udipi known then and now for its Masala Dosa, wherein Haji Abdulla Haji Khasim Saheb Bahadur was born. Haji (1882-1935) was a Deccani Muslim and possibly of Turkish origin whose ancestors had migrated from the Deccan to South Canara. His father, Haji Kasim Haji Budan Saheb, was a rich landlord. Abdullah was highly regarded as a leading merchant and landholder. He was the first in Udipi to own a car. He was said to be the first one to introduce coffee as the breakfast drink. This fashion started by Abdullah has taken Udipi (a brand name now) far as hoteliers to the nation and beyond.

And here's introducing the 3rd visionary of our story - Seth Seetharamji Kisondayal Podar about whom much less is known. Excepting for the fact that he was the founder of Podar Group of Industries (involved in the manufacture and marketing of textiles) and also of an organization post World War - I (1914-1918) which stands tall today as one of the largest public sector banks and is celebrating its centenary year in present day, very less information is available about this great founder.

Back in the early 20th century, the Swadeshi movement inspired local businessmen and political figures to found banks of and for the Indian community. To build a financial institution with Indian stakeholders catering to the needs of the Indian nationals involved in activities which would not only facilitate the independence of India but also ensure survival of its economy thereafter. Financial inclusion and literacy were also unarguably critical aspects which needed attention even back then, but what was more important was to have a country of our own and then resolve such issues. Hence in the the period between 1906 and 1911, thousands of Banks were established in India. However, at least 94 banks in India failed between 1913 and 1918 due to economic crisis during World War I. Only a handful of those banks which were established then have survived till date. This is the story of 3 such inherently strong banks which independently have survived the test of time, built strong roots, have nurtured a diverse range of customers under its canopy and have now merged into one entity.

Coming back to the visionaries in our story, all three of them had significant amount of social influence in their local arena. They too envisioned setting up a Swadeshi Bank catering to the Swadeshi needs. So keeping this sentiment in mind, being in the social position and having access to requisite resources, these 3 men

distinctly and independently laid foundation to 3 different 'Swadeshi' Banks in their respective geographic areas of operation.

B. P. Sitaramayya established Andhra Bank in Machilipatnam on November 28, 1923. Raja Yarlagadda Sivarama Prasad was the individual who committed the financial resources for starting the institution. The registered office of the bank was subsequently shifted to Andhra Bank Building, Sultan Bazar, Hyderabad. The head office of Andhra Bank, 'Pattabhi Bhavan', is named after him. In the second phase of nationalisation of commercial banks commenced in April 1980, the bank became a wholly Government-owned. 'To become a significant player, providing full range of banking services through innovative customer centric products and to maximize stake holders' value' is the vision statement of Andhra Bank. 'Where India Banks is its tagline.

On similar lines back in the small town of Udipi, Corporation Bank was founded on March 12, 1906 in Udipi, with Rs. 5000 capital, by Haji Abdulla Haji Khasim Saheb Bahadur (1882-1935) as founding President, and guided by the principles of the Swadeshi movement of Bal Gangadhar Tilak. "The primary object in forming the 'Corporation' is not only to cultivate habits of thrift among all classes of people, without distinction of caste or creed, but also habit of co-operation among all classes. All possible guarantee is offered by the rules for the safety of the funds and their good management" - this is an excerpt from the first official letter, dated February 19, 1906, written by Haji Abdullah under his signature sent to the public, mainly of Udipi. It is significant to note that the first office of the Bank was started in a portion of Abdullah's palatial mansion in Udipi. It is headquartered in Mangalore,

India. He walked tall as Founder President of the Bank from 1906 to 1929, with short breaks during his Haj pilgrimage. Abdullah brought to the bank not only his prestige and resources but also the participation of fellow Muslims, rich traders of the time, as shareholders of the bank. In 1908, community-wise, Muslims were the largest shareholders - 251 in number representing an amount of Rs.57,609. The other leading shareholders were Saraswaths, 850 (Rs.33,273); Gowd Saraswaths, 376 (Rs.33,003); Shivali, 299 (Rs.16,704); Catholics, 66 (Rs.6,172) and Protestants, 33 (Rs.1,309). Thus, at its very inception, the Bank had acquired a cosmopolitan character. Corporation Bank was nationalized in the second phase of nationalization in April 1980. 'Emerge as a Model for Inclusive Growth and Innovative Banking Services' is the vision of Corporation Bank. 'Prosperity for All' is its tagline.

And finally, a great visionary - Seth Seetharamji Kisondayal Podar was inspired to start the Union Bank of India Ltd. in Bombay at the end of the 1st World War (1914-1918). He invested money from his own resources and contacted leading professionals like Solicitors and Chartered Accountants to prepare the first Memorandum, its Articles of Association, etc., to register the Bank and lay its strong foundation. Shri Podar had carefully selected well-known personalities of the time, who, at the turn of the twentieth century held a prominent place in Mumbai's affluent society. These personalities became the Bank's Founder Directors, on 11th Nov., 1919. The Bank started its business transaction on 3rd March, 1920. The Bank's first Head Office started in a hired building on 7, Murzban Road, Mumbai. 1st Branch of the bank - Zaveri Bazar Branch was opened on 01.06.1920.

Unfortunately, Feb. 1921 marked the sudden demise of the founding visionary Late Seth Shri Sitaram Kisondayal Podar.

Thereafter, in the year 1921 itself, it was decided that the Head office of the Bank be shifted to the new premises at Apollo Street (present Mumbai Samachar Marg). Thus the formal opening of the new premises took place at 4 PM on Thursday, 21.07.1921 by the Father of the Nation Mahatma Gandhi in the presence of Ms. Sarojini Naidu and a large number of merchants and other invitees and he said on the occasion, "We should have the ability to carry on a big bank, to manage efficiently crore of rupees in the course of our national activities. The Bank was nationalized on 19th July, 1969. The vision of Union Bank of India is 'To become the bank of first choice in our chosen areas by building beneficial and lasting relationships with customers through a process of continuous improvement' and its tagline is 'Good People to Bank with'.

On 30.08.2019, the present day FM of India, Mrs.Nirmala Seetharaman announced the merger of Andhra Bank, Corporation Bank and Union Bank of India wherein the former two will be the merging banks and the latter will be the anchor bank. The merger shall be effective from 1st April, 2020.

If we follow the 100 year timeline, each of the constituent banks has independently been recognized as a pioneer in distinct aspects of banking. To name a few recent accolades, Andhra Bank was recognized for its best banking technology, Corporation Bank for its mobile banking application and SME excellence and Union Bank of India for its Best Financial inclusion initiatives. The end result is a merged bank which is inherently strong in its MSME business, Financial inclusion and banking technology. With this

correct mix of ingredients, the amalgamated entity stands tall as the FOURTH largest public sector bank of India in terms of no. of branches and FIFTH largest in terms of business and the amalgamated Union Bank of India, sure has the potential to further climb up the ladder and most importantly cater to the needs of its customer base thereby compliment to the stabilization and growth of economy. When banks have such a huge responsibility to shoulder, its branches better be strong and well nourished not only to bear the weight of expectations but also to yield fruits. This is the very purpose of merging of 3 inherently strong and geographically and strategically important banks. Its like passing on the cauldron of the Olympic flame as a symbol of continuity of its remarkable performance while hoping for an even brighter future.

Today we stand strong as an institution of about 75000+ experienced bankers in 9500 branches spread across the nation spearheaded by the most experienced professionals of the banking industry. The vision and mission of each of the constituent former banks to its core the amalgamated entity w.e.f from 1st April, 2020 has begun its sophomore journey as one big entity and has been rolling out its innovative loan products which are largely best of the 3 banks. Although this amalgamation comes at a time when the worldwide Pandemic of COVID 19 has made the market situation quite grim, our robust organization is quickly adopting the guidelines and circulars issued by RBI by rolling out products which will help in hand holding the affected business entities and help them to sail through the tough times.

With the focussed workforce of this esteemed organization, with its century old glorious history in mind and with an intent to further building upon the legacy by tapping into region wise potential and acknowledging the shortcomings to improvise, we can indeed become 'the Bank of first choice in our chosen areas by building beneficial and lasting relationships with customers through a process of continuous improvement'.

Andhra Bank, Corporation Bank and Union Bank of India have independently completed 96 years, 114 years and 100 years respectively as they stand together on the threshold of amalgamation. Here's to hoping yet another century of progress for OUR AMALGAMATED organization in serving the customers, because at the end of the day, economy comprises of these customers, nation building is catering to the needs of the customer and because, in the end, CUSTOMER INDEED IS THE KING.

**Sneha B Nair**  
R.O., Ernakulam



## BAL PRATIBHA

### The KARATE KID in making!!



Master **DAIVIK**, son of Mrs. Pragati Veerwal, Special Assistant of our Nimbahera Br. Under R.O., Udaipur, is really the 'Karate Kid' in making. Just a student of grade 6th, Daivik has participated in the National and the International competitions of karate. He has won Gold and Silver in 'kata' and 'kumite' in Chhatisgarh; Gold in International championship at Mandsour; Silver in Mumbai, Chittorgarh & Udaipur tours. He has also participated in the recently concluded International championship in Udaipur. He is the 1st dan black belt holder in JKA karate.

Honing his skills in this martial art under the able coach, Sensei Ashfak Khan, he aspires to represent India in the world championship of karate in Japan, for which he has to qualify and win a gold in Asian championship in near future. His role model is Sensei Daisuke Ueda, the famous Japanese instructor of the rank 4th Dan.

On the path from beginner to master, he wishes to unlock the more subtle and dangerous techniques hidden in the kata's movements. According to him, 'Shotokan karate' is considered a traditional and influential form of karate its first called DOJO. It is usually divided into three parts – 'kihon' (basics), 'kata' (form of patterns) and 'kumite' (sparring). Kumite is the practical application of kihon and kata to real opponent. Major organisations of karate are JKA, ITKF, ISKF, JKS, JSKA, KWF, etc. Though very determined to overpower the opponent on the karate mat, this little champ also loves exploring new things along with singing and dancing too. He enjoys his school days participating in debate, sports and cultural programs in school as well.

**Union Dhara salutes his aspiration and wishes him all the best!**



# Amalgamation of PSBs-Process

**Definition :** The combining of separate organisations to form a large organisation as a group or an organisation or group formed in this way.

## Types of Amalgamation :

1. Horizontal amalgamation 2. Vertical amalgamation

**Horizontal Amalgamation:** a situation in which a company buys another company that has the same activities.

**Vertical Amalgamation:** a situation in which a company that supplies it with goods or that buys goods from it in order to control all the process of production.

Committees recommended amalgamation of the banks: various committees including Narasimhan Committee (1998) constituted by the RBI, Leeladhar Committee (2008) chaired by RBI Deputy Governor, and Nayak Committee (2014) constituted by RBI, have recommended consolidation of public sector banks.

Legal provision of merger/ amalgamation of companies:

Section 230 and 232 of companies Act 2013 (notified date of section 07.12.2016 & effect date 15.12.2016), in case of Government Company in Section 232 the word 'Tribunal' the word 'Central Government' shall be substituted by notification dated 13.06.2017.

## Legal provisions of Amalgamation of Public Sector Banks:

Section 9 of Banking companies (Acquisition and Transfer of undertakings) Act 1970 (5 of 1970)

and (40 of 1980). Section 9 provides that Central Government may after consultation with Reserve Bank of India; make a scheme for amalgamation of banks.

Latest scheme of amalgamation of public sector banks:

In exercise of power conferred by Section 9 of Banking companies (Acquisition and Transfer of undertakings) Act 1970 (5 of 1970) and (40 of 1980), The Ministry of Finance (Department of Financial Services) vide notification dt.04.03.2020 notified the scheme of amalgamation of following banks w.e.f. 01.04.2020:

1. Amalgamation of Oriental Bank of Commerce and United Bank of India into Punjab National Bank.
2. Amalgamation of Andhra Bank and Corporation Bank into Union Bank of India.
3. Amalgamation of Syndicate Bank into Canara Bank.
4. Amalgamation of Allahabad Bank into Indian Bank.

The position of PSU banks after amalgamation: on the business size as of March, 2019, after merger of public sector banks the position will be as under:

| Sr. No.1 | Name of Banks         | Business Size (Rupees) | Position |
|----------|-----------------------|------------------------|----------|
| 1        | State Bank of India   | 52.65 lac crore        | 1st      |
| 2        | Punjab National Bank  | 17.94 lac crore        | 2nd      |
| 3        | Bank of Baroda        | 16.13 lac crore        | 3rd      |
| 4        | Canara Bank           | 15.20 lac crore        | 4th      |
| 5        | Union Bank of India   | 14.59 lac crore        | 5th      |
| 6        | Bank of India         | 9.03 lac crore         | 6th      |
| 7        | Indian Bank           | 8.08 lac crore         | 7th      |
| 8        | Central bank of India | 4.68 lac crore         | 8th      |
| 9        | Indian Overseas Bank  | 3.75 lac crore         | 9th      |
| 10       | Uco Bank              | 3.17 lac crore         | 10th     |
| 11       | Bank of Maharashtra   | 2.34 lac crore         | 11th     |
| 12       | Punjab & Sindh Bank   | 1.71 lac crore         | 12th     |

General Effects of Vesting/Amalgamation:

Upon the commencement of amalgamation scheme, the undertaking of the transferor Banks shall vest or be deemed to vest or be taken over by the

transferee banks without requiring any act, deed, consent or instrument for transfer of the same.

#### **Advantage of Amalgamation: Bigger is always better**

- Amalgamation helps to reduce the cost of operation
- Amalgamation helps to improve the professional standard
- Amalgamation provides better efficiency ratio for business operations as well as banking operations which is beneficial for the economy.
- Multiple post as well as branches get abolished, resulting in financial saving.
- Amalgamation improves risk management.
- Amalgamation helps the geographically concentrated regionally present banks to expand their coverage.
- Amalgamation saves the weak banks which fail in meeting expectations.
- Amalgamation helps to reduce the NPA
- Amalgamation provides higher lending capacity
- Amalgamation provides technology investment possible
- Amalgamation provides capital raising potential.
- Amalgamation reduces the consortium financing practice.
- Amalgamation provides strengthening banks presence globally, nationally and regionally.
- Amalgamation helps the Government in monitoring of the banks performance.
- Amalgamation will benefit all employees in terms of bright prospects like wider opportunities for career progression, overseas posting etc.
- Amalgamation helps the Government to implement policies through banks in rural and vulnerable areas.
- Amalgamation minimizes the neck to neck competition in selling of the banking products and malpractice in sectioning the loans.
- Amalgamation helps the Government to infuse money in PSU banks to bust the economy.

#### **Disadvantages of Amalgamation:**

- Healthy competition may be eliminated
- Business combination could lead to monopoly in the market
- The transferor bank loses the goodwill and identity gained over the years.
- Clash between the management and employees' unions could be raised.
- There may be differences among the employees of the transferor bank and transferee bank with regard to work culture.
- Differences could be raised with regard to HR Policies, HR benefits, knowledge management, and growth opportunities and use of digital platform.

#### **Suggestions for solution of key concerns :**

- Through survey transferee bank should invite suggestions as well as constructive feedback from the employees time and again for a better future and performance of the organisation.

- The transferee bank should come forward with various policies including standard transfer policy after considering the policies of all the transferor banks. Employees transfer should be need based with the principle of minimal disruption to employee and customers. It should be ensured that there should be no discrimination against employees as well as customers of the amalgamated entity. All transfers, promotion and appraisals should be carried out in a fair and transparent manner and equal career growth opportunities and rewarding the performance should be in place.
- The salary structure should not be adversely affected due to amalgamation and the harmonization of staff benefits should be formulated keeping in mind the best practice of all amalgamated entities.
- Guide book should be provided to the employees to equip them to work in the changed environment with the changed products, process and policies and training module/ e-learning platform should be formulated in this regard.
- Uniform digital platform including the common lending automation processing system which incorporated the harmonised product should be put in place for the convenience of the employees as well as customer.
- Through Webinar /Seminar/Call Centre/SMS, E-mails, etc. make the employee as well as the customers understand that nothing going to be adversely affected due to amalgamation and it is interest and benefit of the employees, customers and Nation.

**Banne Khan**  
R.O., Agra



# Amalgamation – the Marriage

There is a saying - 'Marriages are made in heaven'. Marriage is defined as a legal union between two souls but some stereotype mindset individuals believe marriage is a combo of strong and weak entities.

In the same line, amalgamation is also thought as dominance of stronger over weaker entities. Recently in India, the largest merger in the public sector bank has been effective since 01.04.2020. The event resulted in amalgamation of 10 banks into 4 and the final dashboard counts 12 PSBs instead of 27 back in 2017. Accordingly, Andhra Bank and Corporation bank merged into Union Bank of India; Oriental Bank of Commerce and United Bank of India merged into Punjab National Bank; Syndicate Bank into Canara Bank and Allahabad Bank into Indian Bank.

Now the question is whether amalgamation is the reflection of dominance or procedure for acquisition or to deprive the small and boost the big? To me, the answer is directly a big 'No'. According to the Government of India the total process is aimed at creating global sized banks. It will be a precursor to make the amalgamated banks globally competitive.

The process of amalgamation in chemistry is forms an amalgam which is an alloy of mercury with another metal and the concept of formation of amalgam is through metallic bonding with the electrostatic attractive force of the conduction electrons working to bind all positively charged metal ions together. So the underlying base is metallic bonding - the utmost important criteria.

In line with the same trajectory the amalgamations of banks have been made effective and plans have been materialized into action. It is to bring in the blocks which will add to build a strong house and strong base for the economy. Every activity in this world can be looked through

either positively or negatively. The way of outlook matters for the aim to be reached or to remain in pages of notification. Numbers speak the above assumptions more assertively. It is the combination of strong characters to transform big into bigger and compete for the biggest.

The mega event that took place on 1st April, 2020 is unique in its stature and has no such precedence in the past of amalgamating so many banks at one shot. Since the precedence is absent and any new creation is always dependent on time variable. There may be and will be ebbs and flows like the most significant scenario is the outbreak of COVID during the initiation of the process but that cannot be designated as failure of the project at all.

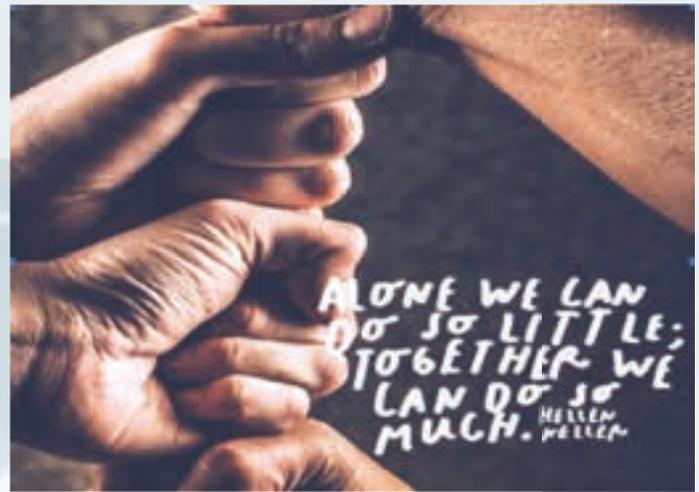
The above figure flashes the strength to compete globally. Earlier State Bank of India was merged in 2017 and Bank of Baroda, Dena Bank and Vijaya Bank were merged into single entity in 2019 but both were in different years unlike the present stature of amalgamation process.

|                          | Union Bank | Andhra Bank | Corporation Bank | Amalgamated bank |
|--------------------------|------------|-------------|------------------|------------------|
| Total business (₹ crore) | 7,41,307   | 3,88,811    | 3,19,818         | 14,59,434        |
| Gross advances (₹ crore) | 3,25,362   | 1,79,890    | 1,35,048         | 6,39,130         |
| Deposits (₹ crore)       | 4,15,915   | 2,19,821    | 1,84,568         | 8,20,304         |
| CASA ratio               | 38.10%     | 31.39%      | 31.89%           | 33.82%           |
| Domestic branches        | 4,292      | 2,885       | 2,432            | 8,609            |
| PCR                      | 58.27%     | 68.52%      | 66.80%           | 63.07%           |
| CET-1 ratio              | 8.02%      | 8.43%       | 10.39%           | 8.83%            |
| CRAR ratio               | 11.79%     | 13.69%      | 12.30%           | 12.39%           |
| Net NPA ratio            | 8.88%      | 5.72%       | 8.71%            | 6.30%            |
| Employees                | 37,262     | 20,348      | 17,778           | 75,384           |

|                          | Indian Bank | Allahabad Bank | Amalgamated bank |
|--------------------------|-------------|----------------|------------------|
| Total business (₹ crore) | 4,26,972    | 3,77,887       | 8,07,859         |
| Gross advances (₹ crore) | 1,87,806    | 1,63,552       | 3,51,458         |
| Deposits (₹ crore)       | 2,42,078    | 2,14,335       | 4,56,411         |
| CASA ratio               | 34.71%      | 49.49%         | 41.85%           |
| Domestic branches        | 2,875       | 3,229          | 6,104            |
| PCR                      | 48.12%      | 74.19%         | 66.21%           |
| CET-1 ratio              | 10.96%      | 9.88%          | 10.38%           |
| CRAR ratio               | 13.21%      | 12.51%         | 12.88%           |
| Net NPA ratio            | 3.75%       | 5.22%          | 4.39%            |
| Employees                | 19,804      | 23,210         | 42,814           |

| Canara Bank + Syndicate Bank |             |                |                  |
|------------------------------|-------------|----------------|------------------|
|                              | Canara Bank | Syndicate Bank | Amalgamated bank |
| Total business (in crore ₹)  | 10,43,248   | 4,77,048       | 15,20,295        |
| Gross advances (in crore ₹)  | 4,44,218    | 2,17,148       | 6,61,365         |
| Deposits (in crore ₹)        | 5,99,033    | 2,59,897       | 8,58,930         |
| CASA ratio                   | 29.18%      | 32.58%         | 30.21%           |
| Domestic branches            | 6,310       | 4,032          | 10,342           |
| PCR                          | 41.48%      | 48.83%         | 44.32%           |
| CET4 ratio                   | 8.31%       | 9.31%          | 8.62%            |
| CRAR ratio                   | 11.90%      | 14.23%         | 12.63%           |
| Net NPA ratio                | 5.37%       | 6.16%          | 5.62%            |
| Employees                    | 58,300      | 31,535         | 89,835           |

| PNB + Oriental Bank of Commerce + United Bank |           |          |                      |                  |
|---|-----------|----------|----------------------|------------------|
|   | PNB       | OBC      | United Bank of India | Amalgamated bank |
| Total business (in crore ₹)                   | 11,82,224 | 4,04,194 | 2,08,106             | 17,94,524        |
| Gross advances (in crore ₹)                   | 3,06,194  | 1,71,549 | 73,123               | 7,50,867         |
| Deposits (in crore ₹)                         | 8,76,030  | 2,32,848 | 1,34,983             | 10,43,861        |
| CASA ratio                                    | 42.16%    | 29.40%   | 51.48%               | 40.52%           |
| Domestic branches                             | 6,982     | 2,390    | 2,058                | 11,430           |
| PCR   | 61.72%    | 56.83%   | 61.17%               | 59.98%           |
| CET4 ratio                                    | 6.21%     | 9.86%    | 10.14%               | 7.46%            |
| CRAR ratio                                    | 9.73%     | 12.73%   | 13.00%               | 10.77%           |
| Net NPA ratio                                 | 6.56%     | 5.93%    | 8.67%                | 6.61%            |
| Employees                                     | 65,116    | 21,728   | 13,804               | 1,00,648         |



So amalgamated entities will create a global financial brand through excellence in services and products and bring innovation to be the best in class which will strengthen the balance sheets.

Amalgamation is a broader term but differentiating the term into pieces actually implies integration of balance sheets, branch and ATM networks, technology platform, customers and the human assets i.e. the employees, the cultural synergy and many more. The bonding defines the success of the term and its strength.

In addition amalgamation would also provide impetus to the new entities by increasing their ability to support larger ticket size lending and have competitive operations by virtue of greater financial capacity. Moreover, all of them have business mix of over ₹8 lakh crores, a scale comparable to global banks and capable of competing effectively. Capital infusion by GoI has added smoothness to the process. The cost of banking operation will be

reduced and better NPA and risk management will be visualised. It will create a firm trust among the customers and stake holders. Efficiency ratio for Banking operations will accelerate and lead to the growth of the economy. Geographical concentration will transform to geographical expansion. Short and long term liquidity will be managed in a better way and with a large capital base, the burden on central government to recapitalize again and again will come down substantially.

The bonding, adjustment, adaptability, experiences, sharing, integration of mindset qualifies to a happy marriage journey and on the similar note the recent amalgamation of the PSBs is the marriage of culture, employees, products, etc. to reproduce something more than the simple mathematical individual addition of the strengths. It is a win-win situation from every perspective and it is just strong handholding in times of adversity by creating a strong balance sheet. So let the journey of marriage of the amalgamated entities flourish in the global arena with a ray for others to follow.

“Synergy is better than my way or your way. It’s our way.”

- Stephen R Covey

Joy Ghosh  
R.O., Bhopal



# समामेलन -

## एक नई शुरुआत

समामेलन शब्द का संधि विच्छेद किया जाए तो यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना हुआ-समा+मेलन. जिसका शाब्दिक अर्थ है समान रूप से मिलन, अर्थात् किन्हीं भी दो या दो से अधिक अलग और स्वतंत्र अस्तित्व वाली वस्तुओं का आपस में इस प्रकार मिलना जिससे किसी के भी मूलभूत अधिकारों का हनन न हो तथा दोनों में मिलन के पश्चात समानता बनी रहे सामेलन कहलाता है. सामेलन के पश्चात मिलकर बनी अस्ति का आकार मिलने वाली आस्तियों के आकार से वृहद हो जाता है तथा उनकी गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है. सरल शब्दों में कहा जाए तो दो या दो से अधिक आस्तियों के आपस में मिलने तथा उससे उनमें सकारात्मक तथा प्रगतिशील परिवर्तन होने की प्रक्रिया सामेलन है.

आगामी समय हमारी संस्था में भी सामेलन प्रक्रिया को सम्पन्न कराने का समय है, यद्यपि यह एक जटिल प्रक्रिया है तथा इसमें अनेक प्रकार के जोखिम शामिल हैं. परंतु सफल होने पर यह हमारे बैंक को सफलता के एक नए शिखर पर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करने का कारण भी सिद्ध हो सकती है. हमारी संस्था अपने व्यापार के आकार में हर आयाम में बड़ी हो रही है चाहे वे व्यापार के पैमाने हों, मानव संसाधन की संख्या हो, बैंक की पूंजी, बैंक की शाखाओं तथा ग्राहक संपर्क केन्द्रों का विस्तार हो या बैंक की बाजार में पहुँच, हम हर रूप में विस्तृत तथा वृहद होने जा रहे हैं. एक नए युग का आरंभ होने जा रहा है, एक ऐतिहासिक कदम जिसके हम सभी साक्षी बनने जा रहे हैं. सामेलन एक नई शुरुआत है, जो हमारी संस्था को नया रूप देने वाला मील का पत्थर साबित होगी. किसी भी संस्था की सफलता में सबसे बड़ा मूलमंत्र है, उसका मानव संसाधन हमारी संस्था का मानव संसाधन तीन गुना बढ़ने जा रहा है, जो हमारी संस्था के लिए बहुत बड़ा अवसर है. यदि इस मानव संसाधन को साथ में जोड़कर हम आगे बढ़ सकें तो निश्चित ही हमें एक नए रूप में उद्गमित होने से और

देश के एक अग्रणी बैंकों के शिखर स्थान पर पहुँचने कोई नहीं रोक सकेगा. यदि देखा जाए तो इस सामेलन के पश्चात बदलने वाला केवल नाम है, हमारा काम जो हमारी पहचान है, जो हमारी सफलता का मूल मंत्र है, वह पूर्ववत् ही रहने वाला है. हमारा मुख्य लक्ष्य पहले भी ग्राहक सेवा तथा ग्राहक संतुष्टि थी, जो अब भी है और सदैव वही रहेगा. तब केवल नाम बदलने का हम पर कोई भी नकारात्मक प्रभाव नहीं होना चाहिए, अपितु एक संगठन के रूप में हमारी सेवाओं का स्तर नवीन कार्यप्रणाली तथा युक्ति के मिश्रित होने से और भी उन्नत होना चाहिए. यह बात पूर्णतया सत्य है कि भौतिक रूप से आपस में मिलना तथा सांकेतिक रूप से आपस में मिलना दो अलग अलग तथ्य हैं. सरकार के निर्णयानुसार सांकेतिक रूप से बैंकों का विलय हो जाएगा परन्तु सभी कर्मचारियों का मानसिक रूप से विलय एवं संस्था के प्रति लगाव होने में समय लगेगा. और यह लगाव सकारात्मक घटनाक्रमों के क्रमशः घटित होने से निर्मित होगा. अतः हमें यह प्रयास करना चाहिए कि जाने या अनजाने में हम किसी भी व्यक्ति में किसी भी नकारात्मक भावना का संचार न होने दें क्योंकि एक भी नकारात्मक विचार हमारी संस्था की छवि के लिए घातक हो सकता है.

हम सब यह भली भांति जानते हैं कि एकता में शक्ति होती है, हमारे तीन बैंक जो मिलकर एक होने जा रहे हैं, वे वास्तव में कमजोर नहीं और भी अधिक सशक्त होने जा रहे हैं. हम ऊर्जा, संसाधन, सोच, मेहनत सभी पैमानों पर तिगुने होने जा रहे हैं, जो कि हमारी संस्था हेतु एक नई नींव का कार्य करेगा. हम अपनी संस्थाओं की बात करें तो यूनिजन बैंक ऑफ इंडिया, कॉर्पोरेशन बैंक तथा आंध्रा बैंक तीनों बैंकों का इतिहास 100 वर्षों से अधिक पुराना है, तीनों बैंक अपनी अलग कार्य संस्कृति, कार्यप्रणाली तथा विचारधारा लिए हुए हैं. इनका साथ मिलना एक नयी विचारधारा को जन्म देगा जिसमें तीनों बैंकों का उच्चतम अनुशासन, गुणवत्ता तथा यथार्थता सम्मिलित होगी. हम

साथ मिलकर 75000 से अधिक संख्या में मानव संसाधन, 9500 से अधिक संख्या में शाखाओं तथा 14 लाख करोड़ से अधिक की पूंजी के स्वामी होंगे, जो कि हमारे लिए किसी सुनहरे अवसर से कम नहीं, यदि हम इस अवसर का उचित दोहन करें तो सफलता के नए आयाम स्थापित कर सकते हैं.

हमारे भीतर सबसे अच्छी बात यह है कि हम एक ऐसे देश से जुड़े हुए हैं, जहां की संस्कृति हमें साथ मिलना और मिलजुलकर चलना सिखाती है, हमारे देश में अलग अलग धर्म, संप्रदाय, जाति, वर्ग, राज्य में बंटकर भी हम साथ-साथ हैं. इसी विचारधारा को लेकर ही हमें आगे बढ़ना होगा, भले ही हमारे बैंकिंग उद्योग में सभी संस्थाओं के नाम अलग-अलग हैं परंतु हमारी कार्यशैली एक ही है. हम समाज तथा देश की सेवा के लिए ही कार्य करते हैं, हम देश की आर्थिक रीढ़ हैं. हमारा मुख्य लक्ष्य हमारे ग्राहकों का रुझान हमारे लिए संतोषप्रद होना है. अतः अलग होकर भी हम एक थे, तब साथ रहकर हमारे लिए एक होना कोई बहुत बड़ी बात नहीं. हमें इस सामेलन के सकारात्मक पहलुओं का मंथन करना होगा और उन्हें साथ लेकर चलना होगा. इस मंथन से प्राप्त सकारात्मक परिणाम ही हमारे अंदर विकासशील होने की ललक पैदा करेंगे और यह ललक हमारी संस्था के तथा हमारे विकास पथ को प्रशस्त करेगी.

सामेलन की इस प्रक्रिया का मुख्य लक्ष्य बड़ी तथा तथा प्रभावशाली बैंकिंग प्रणाली का निर्माण करना है, जिसके द्वारा बैंक के संचालन की लागत को कम किया जा सके. एक ही स्थान पर सामेलित बैंकों को एक से अधिक शाखाएँ होने पर उन्हें आपस में विलय करने से न केवल शाखा का व्यवसाय बढ़ेगा, अपितु शाखा में मानव संसाधन तथा अन्य संसाधनों की गुणवत्ता तथा आपूर्ति भी बढ़ेगी. साथ मिलने से हम एक नयी तथा विकसित कार्यप्रणाली का हिस्सा बन सकेंगे, जो हमारे समूहिक विकास में भी योगदान देगी. इससे एक से अधिक लोग जो विभिन्न

संस्थाओं में समान पदों पर कार्यरत हैं उनके पदों को समाप्त कर बैंकों की वित्तीय बचत होगी, बचत होने से वह राशि बैंक के अन्य विकास कार्यों में खर्च की जा सकती है. बैंक को नयी दिशा में आगे बढ़ने हेतु समय तथा सोच दी जा सकेगी. साथ ही साथ बैंकों के साथ मिलने बैंकों में जोखिम भी अपेक्षाकृत कम हो जाएगा, साथ मिलकर ग्राहकों की जानकारी को साथ में एकत्र किया जा सकता है, जिससे ऋण में होने वाले चूक की दर कम होगी साथ ही बैंक में पूंजी बढ़ने से बैंक स्वयं बड़े ऋण देने करने में सक्षम बनेंगे. बैंकों के साथ मिलने से उनका पेशेवर स्तर भी बढ़ेगा. चूंकि विविध संस्थाओं में कार्यरत लोग अपनी अपनी विशेषताओं के साथ आकार संस्था से जुड़ेंगे अतः संस्थागत कार्यों का विभाजन सुगम रूप से किया जा सकेगा, साथ ही एक कार्य को करने हेतु बेहतर विकल्प भी संस्था के पास उपलब्ध होंगे.

समामेलन के माध्यम से बैंकों में प्रतिस्पर्धात्मक अग्रता स्थापित की जा सकती है, क्योंकि इसके द्वारा हर बैंक के पास किसी भी विषय को समझने तथा उसके लिए रणनीति बनाने हेतु बेहतर संसाधन उपलब्ध होंगे. दो या दो से अधिक बैंकों को मिलाकर प्रतिभावान लोगों की नयी शृंखला एवं श्रेणी विकसित की जा सकती है. इसके द्वारा विभिन्न स्तरों पर योग्य कर्मचारियों की नियुक्ति कर पूर्व में विद्यमान अंतर को भी समाप्त किया जा सकता है. तथा प्रत्येक स्तर पर उन्नत मानव संसाधन की उपलब्धता की पुष्टि की जा सकती है. प्रतिस्पर्धात्मक कार्यशक्ति हर स्तर पर के उपलब्ध होने से संस्था की कार्य संस्कृति को भी एक नया तथा विकसित स्वरूप दिया जा सकता है. जो लंबी समयवाधि तक संस्था को लाभान्वित करेगा. तथा इसे आने वाले संकटों का सामना करने हेतु और भी सुदृढ़ तथा सामर्थ्यवान बनाएगा.

समामेलन के परिणामस्वरूप एक नए ग्राहक आधार रूप का भी प्रादुर्भाव होगा. हर बैंक अपना एक अलग निष्ठावान ग्राहक आधार रखता है, जो उस बैंक की सेवाओं से पूर्णतया संतुष्ट होता है, बैंक की सेवाओं के साथ संकल्पवान रूप से जुड़ा होता है तथा किसी भी परिस्थिति में बैंक का साथ नहीं छोड़ता. यह ग्राहक तथा बैंक का संबंध कई वर्षों के विश्वास तथा ग्राहक सेवा के उच्चतम आयाम को प्राप्त करने का परिणाम होता है,

बैंकों के विलय होने से निर्मित नवीन संस्था में इस प्रकार के संतुष्ट ग्राहकों की संख्या और भी अधिक बढ़ जाएगी, चूंकि अलग अलग बैंकों के संतुष्ट ग्राहक आकर नए नाम के साथ जुड़ेंगे, जिसके साथ ही नई संभावनाओं को ढूँढने के तथा क्षमता विस्तार के लिए नए अवसर बैंकों को मिलेंगे. जिससे बिक्री की नयी संभावनाएँ भी बैंकों के लिए विकसित होंगी, साथ ही अपनी सेवा क्षमता के विस्तार हेतु नवीन अवसरों का उन्नयन होगा.

समामेलन के माध्यम से बैंकों की बाजार की ताकत भी बढ़ेगी, जिसके द्वारा बैंक तीव्रता से बाजार में प्रतिस्पर्धा कर सकेंगे. समामेलित संस्था में उच्च श्रेणी तकनीक के विस्तार के अवसर भी अधिक होंगे जिससे पुराने तथा अनुपयोगी तकनीक को हटा कर तकनीकी उन्नति तथा मूल्य की लड़ाई में भी बैंकों को मजबूती के साथ आगे बढ़ने के संयोग प्राप्त होंगे. प्रत्येक बैंक वैयक्तिक रूप से बड़े ऋण तथा जमा को समायोजित करने में समर्थ होगा, जिसके परिणाम स्वरूप बड़ी परियोजना में अकेले निवेश करने की क्षमता का भी विस्तार होगा. जिससे बैंकों तथा ग्राहकों को ऋण प्राप्ति तथा संवितरण हेतु भटकना नहीं पड़ेगा तथा ऋण अनुश्रवण में भी सहजता एवं सुगमता होगी. साथ ही साथ बेहतर ग्राहक आधार रूप का परिवेश भी निर्मित किया जा सकेगा.

बैंकों को सुदृढीकरण एवं विस्तार समामेलन का मुख्य लक्ष्य है. परंतु इसके लिए एक आपसी विश्वास तथा सूझ बूझ का वातावरण बैंकों के बीच बनाना बहुत आवश्यक है. ताकि कोई भी संस्था उपेक्षित महसूस न करें, तथा सभी के तथ्यों का, परंपरा का तथा कार्यशैली का सम्मान किया जा सके और बिना किसी द्वेष एवं विरोधाभास के एक नयी शुरुआत की जा सके और कहते हैं कि एक अच्छी शुरुआत अच्छे अंत की नींव होती है. सकारात्मक शुरुआत के साथ हम समामेलन प्रक्रिया को एक सकारात्मक एवं व्यवस्थित अंत की ओर ले जा सकेंगे. जो हमारी संस्था सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगा. इसके लिए आवश्यक है कि ग्राही बैंक का हर कर्मचारी दाता की तरह व्यवहार करें. हमें खुले हृदय से अपने आने वाले साथियों का स्वागत करना चाहिए, उन्हें हर संभव मदद देने का, उन्हें अपनत्व तथा आत्मीयता के साथ स्वयं से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए. संस्था में कभी भी वैमनस्य, दुर्भावना, द्वेष,

मानसिक तथा शारीरिक उत्पीड़न इत्यादि समस्याओं का प्रादुर्भाव न हो, ऐसा प्रयास हमें करना चाहिए. जिस प्रकार एक सुदृढ़ भवन के निर्माण में हर एक ईंट महत्वपूर्ण होती है उसी प्रकार इस समामेलन प्रक्रिया को सहज बनाने की जिम्मेदारी हर कर्मचारी की है. वैयक्तिक रूप से हम जितने लचीले, सहयोगी तथा सुलभ बनेंगे उतना ही हम अपनी संस्था को सहयोग कर इस प्रक्रिया को सफल बना सकेंगे. समामेलन हमारी संस्था में एक नई कार्य संस्कृति की शुरुआत करेगी, जिसमें हम साथ मिलकर अपने नए सहयोगियों का सहारा बनें, उनके तथा अपनी संस्था के बीच सेतु का कार्य करेंगे. साथ मिलकर चलने से एक सकारात्मक कार्यप्रणाली का विकास होगा जो कि हमारी संस्था के हित में आगे आने वाले कई वर्षों तक, जब तक हमारे नए साथी पूर्ण रूप से मनसा वाचा कर्मणा हमारी संस्था को अपना नहीं लेते, तब तक कार्य करेगा.

अंततः महाकवि कबीर दास जी के दोहे से अपने लेख का समापन करना चाहूँगी-

**जिन खोजे तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।**

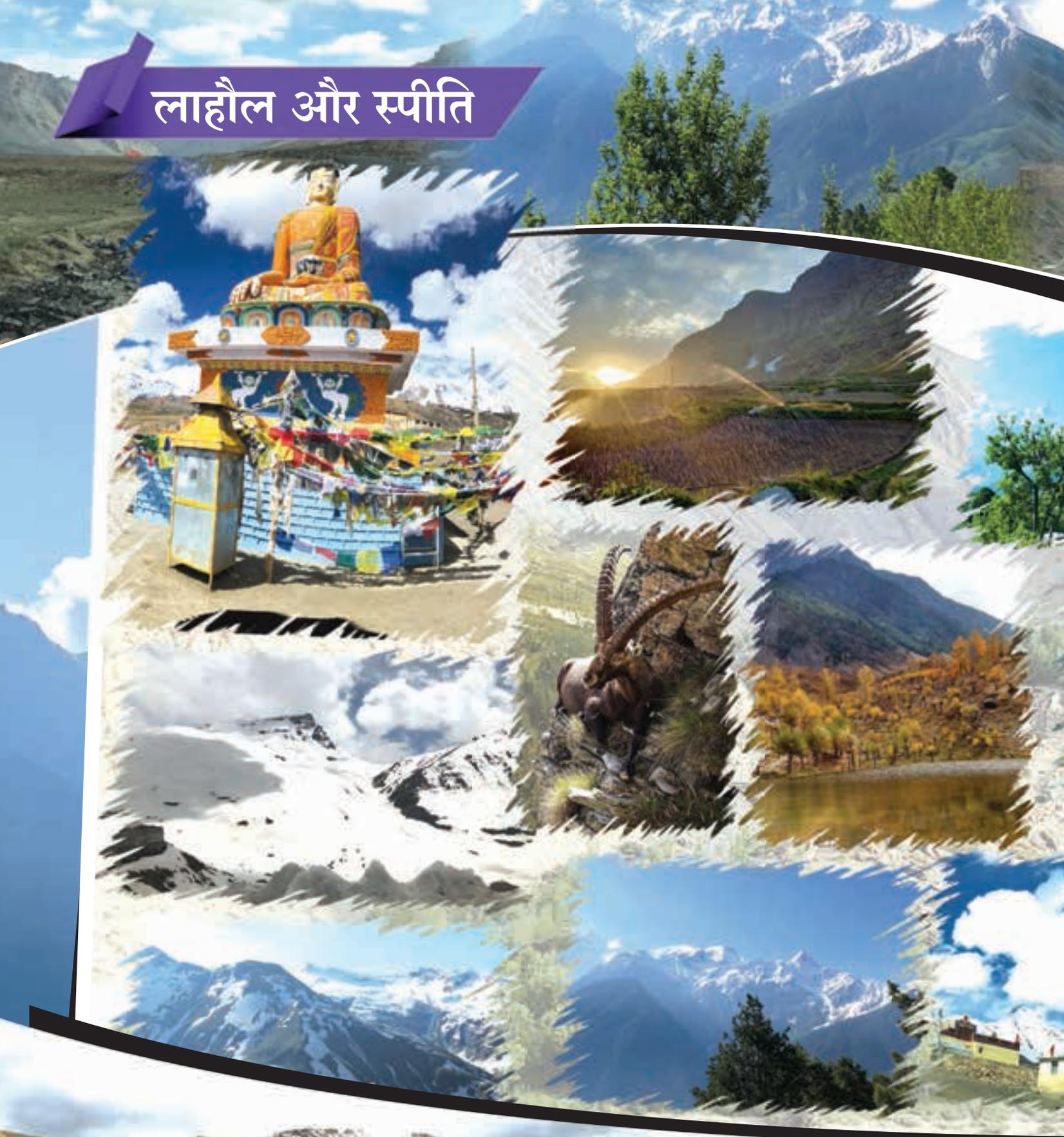
**मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठ।।**

अर्थात् जो कोशिश करते हैं, वे कुछ न कुछ पा ही लेते हैं, जैसे कि कोई मेहनत करने वाला गोताखोर गहरे पानी में जाता है, तो कुछ न कुछ लेकर ही वापस आता है. लेकिन बेचारे कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जो डूबने के भय से किनारे पर ही बैठे रह जाते हैं और कुछ भी नहीं कर पाते हैं. अर्थात् यदि अनिष्ट के भय से हम प्रयास ही नहीं करेंगे तो निश्चित ही स्वयं भी पतन की ओर जाएंगे और अपनी संस्था को भी अंधकारमयी गर्त में ले जाएंगे, परन्तु यदि पूरे हृदय से हम अपना सार्थक प्रयास अपनी संस्था को देंगे तब निश्चित ही अपनी संस्था को नई बुलंदी पर लेकर जाएंगे. अतः मित्रों यह समय किनारे बैठने का नहीं अपने सर्वश्रेष्ठ प्रयास को अपनी संस्था हो समर्पित करने का है, हम सबको अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर निकल कर कार्य करना होगा तभी हम कुछ न कुछ योगदान अपने मातृ संगठन को दे सकेंगे. और इसी तरह हम भी इस नई शुरुआत के हिस्सेदार बन सकेंगे.



**नीरजा अशोक कोष्टी**  
क्षे.का., जबलपुर

# लाहौल और स्पीति





हिमालय की गोद में बसे यह जिले लाहौल और स्पीति अपने आप में प्रकृति का अद्भुत मंजर हैं। लाहौल और स्पीति, भारत और तिब्बत की सीमा पर स्थित है। मनाली का रोहतांग दर्रा (3,978 मी.) इसे कुल्लू और मनाली से जोड़ने का काम करता है। किन्तु अत्यधिक हिमपात होने के कारण यह हर साल 6 महीने शेष दुनिया से कटा रहता है। स्पीति का रोमांचकारी सफर पर्यटकों के बीच हमेशा से चर्चा का विषय रहा है। इन जिलों के सफर पर आपको ऊंची पर्वतमाला, खुले रास्ते, हरे-भरे जमीन और कुछ जगह पर बंजर ज़मीन देखने को मिल सकती है। सफर पर चलते हुए कुछ समय ऐसा भी आयेगा जिसमें आपको दूर तक नज़र दौड़ाने पर कोई व्यक्ति भी शायद नज़र न आये। बदलते मौसम, ऊबड़-खाबड़ पठार और अत्यधिक ऊंचाई पर जाने के बाद कुछ व्यक्तियों को ऑक्सिजन की कमी भी महसूस होती हैं। इस पूरे सफर में आपको दरचोग (रंग-बिरंगे बौद्ध प्रार्थना के झंडे), जुल्ले (Julley) अर्थात नमस्कार करते लोग भी मिलते रहेंगे। इस पूरे सफर में आप रोहतांग दर्रा, जिस्पा (लाहौल और स्पीति), सरचू, बारालचा ला दर्रा, ibex, याक, पृह, यांग्थंग, लरी, ताबों, काजा, रंगरिक पुल आदि को देख सकेंगे।

रीता देवी  
क्षे. का. जालंधर





## HR INTEGRATION IN SUCCESSFUL BANK AMALGAMATION

**T**oday, the highly competitive global economy has made Merger and Amalgamation, a common phenomenon for big and small Banks throughout India. Amalgamation deals are an effective growth strategy for PSBs that help in multiplying capabilities, sharing proficiency and enhancing market share. Creation of big banks enables enhancing the capacity of credit growth with a strong national presence and global reach.

We have experienced in the past that when asymmetrical entities come together, there is bound to be some challenges. IT and other technological integrations rest mainly on software and machine driven platforms. So after some initial hiccups, the exercise of upgrading tech and software solutions can have the experience of some seamless integration. Every bank uses a specific technological platform for its core banking solutions, which is again customised according to its needs. However, even so, integration is easier said than done because it is a lengthy process and merging different technological platforms poses a

problem for customer service and smooth transactions.

However the real key challenge in PSU Banks merger and amalgamation is HR integration, because harmonising Human Resource issues is the key aspect in amalgamation process. HRM is a complex issue. A host of questions related to transfers, promotions, placement, staff benefits and disciplinary proceedings keep coming up among the staff of the amalgamated entities. The Finance Minister has claimed that there will not be staff retrenchment post-merger. But few experiences from the past in the merger process of Associate Banks with that of SBI and BOB with Dena & Vijaya Bank has reasons to think that there could be some closing or rationalization of Branches.

More than the likely staff cut down, what worries the staff is the almost certain dislocation. It is learnt that the representatives of the amalgamated banks have indicated in the meetings of the functional committees that officers up to Scale IV (middle level) will not be disturbed. That sometimes seems impractical.

The corporate office loses much of its role and logically, the staff there become redundant. Redeployment of redundant employees and a fresh scheme of voluntary retirement become imperative. However, post amalgamation the picture will be clear in a few months. Bank is taking all possible steps to address the issues described above.

Another area of anxiety is the impact on the existing policies governing the transfer of officers. Under the extant agreements, after a predetermined term in a different state, an officer can opt for transfer to his/her state of domicile and remain in that state till his/her promotion or till a certain period whichever is early. Now that amalgamation has taken shape, the position of such repatriation will be clearer.

Promotion process in PSBs, takes place periodically as per agreements with the recognised trade unions. Post amalgamation, the agreements of amalgamated entities lose their validity and fresh agreements need to be entered into with the unions. New agreements do not happen overnight.

As a result, the promotion process may get derailed for quite some time causing serious heartburn among a large number of aspirants. But as the amalgamation process is over, we have to wait and watch whether the new harmonised policies drawn, are being implemented in true spirit or not across all the three amalgamated entities.

Selection and placement as Branch Managers or key position holders get postponed/ delayed until the integration of HR systems is completed. Identifying the strengths and weaknesses of officers of amalgamated banks for considering managerial assignments can get bogged down unless the top executives of all the three banks are able to evolve a transparent process of selection. Aspiring youngsters who are left behind could get demotivated. This will have a long-term impact on the decision making at the ground level with direct impact on customers. In this area the harmonised policies are already in circulation which will definitely work as a solace to the aspiring staff. Moreover as per the EASE agenda all PSBs are supposed to implement job specific roles for its staff under job family concept. Union Bank of India has its defined job family concept with 07 different job families covering almost all types of jobs specified within banking ambit. This will go a long way in addressing the issues arising out of proper and specific job assignment to the staff concerned of all three amalgamated entities.

Disciplinary and appeal rules of Public Sector Banks have a bank-specific structure which operate within the framework of a standardised compendium of conduct and

discipline regulations applicable to them. When different bank specific structures have to be harmonised, the follow-up action on pending cases gets derailed. With regular recurrence of frauds where staff accountability is fixed, quick action is warranted. A derailed disciplinary mechanism can have a long-term impact on all three banks and their staff who are innocent. In this regard, the anchor bank Union Bank of India, has started an Employee Relations Portal where all such data mining is to be done in a comprehensive way to do away with any such out put.

There is also palpable anxiety among the staff of amalgamated banks regarding ill-treatment by Anchor Bank. In addressing these crucial issues, the main stakeholders, namely the employees need to be taken into confidence. Union Bank of India has its own staff grievance redressal portal called HR Aap ke Dwar, where an aggrieved employee can lodge his/her grievance on any matter and can get it disposed in a timely manner from the authority concerned. The employees of all the three banks can now take benefit from the system.

Moreover, amalgamation may see the closure of some branches, as the branches under the anchor bank will see overlap. Thousands of employees will be left with the decision to either move to the location of the new branch or to disassociate themselves from the new emerging bank, because of the impending reorganisation of the workforce. The staff of erstwhile Andhra Bank and Corporation Bank have given their option of being a part of the amalgamated bank i.e. Union Bank of India agreeing to its service rules and regulations. A very few have opted out to be so. Since the

Government has assured that no jobs will be lost, the new entity will not be able to trim its workforce. There will not be any retrenchment or voluntary retirement scheme, as observed in the meetings held by the already formed 23 committees covering every aspect of the merger, such as IT, HR, and product offerings, to ensure success of the exercise.

In the matter of staff benefits, the best available benefits from the three banks have been passed on to employees. The harmonised policies on staff welfare and benefits have already been issued bringing cheer among the staff. Staff of all the three banks can refer the different staff welfare measures and staff benefits circulated through various staff circulars dated 27th March, 2020. The gist of the staff benefits are already in circulation too. In addition to that, Union Bank of India has its own Shared Service Centre called HR Suvidha for centralised processing and sanctioning of many of the staff welfare/ benefit modules. Many of these are regular perquisites on declaration basis and other TA/ TE/ LFC, etc. upon uploading of relevant and requisite documents. The services being rendered are within defined TAT.

### **The Challenge of Analyzing Organizational Cultures:**

HR helps to figure out if the organizational cultures of the banks partnering together are compatible enough to be meshed as one. When different corporate cultures integrate, it is the responsibility of human resources to enable a smooth transition by assisting the employees to comprehend and embrace a new organizational culture. However, this may turn into a daunting task as many M&As fail awfully owing to cultural disparity, clash in leadership, need of

management commitment, absence of common objectives, or weak change management, which may turn into a matter of grave concern. Human resource is responsible for analyzing the cultural amalgamation of the merging entities by taking the demographics of the partnering organizations into consideration, which covers multiple factors such as:

1. Cultural differences among the entities
2. How the different entities view one another?
3. Management trend of the amalgamating banks
4. Selectivity in hiring process
5. Benefits/ perquisites enjoyed by the employees
6. Preparedness among employees to embrace new corporate culture
7. Rate of employee turnover
8. Level of estrangement experienced by employees
9. Growth rate of the amalgamating banks

In case, the HR notices any cultural differences during or post amalgamation, such problems should be tackled without delay. If HR senses any feeling of disdain between the employees of the amalgamated entities, the issue should be addressed upfront. Thus, it is imperative for human resources to have a firm understanding of the work culture of the organization wherein they work, along with the work culture of the other organization.

### **The Challenge of Changing Roles and Corporate Structure:**

The moment some different entities amalgamate, they are likely to undergo certain structural changes. There may be cases where different teams are

combined for enhancing productivity or the management may decide to get rid of redundant positions. This procedure of introducing change in work culture of all the entities and implementing the change, so that the employees can work jointly without any conflict, takes a long time and the HR managers play a key role here. They work closely with the management to come up with new policies and communicate the same to the employees so that each person understands his/her new duties and responsibilities in the organization.

### **Facing the challenge of Boosting the Morale of Anxious Employees :**

During the process of amalgamation, some employees may be reluctant to adapt to the new work culture thus, creating a serious culture clash. It is a common human tendency to resist change and since amalgamation brings in an element of apprehensions and change for the employees of all three banks, Human Resources in all the banks should act as a comforting factor and take measures for sorting out the transition process for employees by:

1. Brushing away the fears and doubts of employees so as to retain productivity
2. Boosting the confidence of employees
3. Offering adequate training to managers so that they can acclimatize themselves to the nature of change and new organizational culture
4. Ensuring job security
5. Explaining new roles to each employee
6. Expounding the hierarchy structure of the organization post amalgamation

7. Elucidating how the amalgamated mega structure will affect each employee
8. Upholding efficiency by identifying leaders from all three banks
9. Enhancing innovation by placing the right employee at the right position
10. Complying with labour laws
11. Avoiding transgression of personal data of all the employees
12. Keeping the communication channel open through constant communication with the employees and conveying their concerns to the management.
13. Conducting orientation programs on welfare schemes, compensations, benefits and bank policies

Last but not the least, throughout the process of amalgamation, the HR should take effectual measures to assure that issues arising out of cultural differences will not disrupt the deal. The HR of any organization, by extending their intervention, can facilitate a successful amalgamation. Since Human Resource entails employees of an organization and deals with significant issues pertaining to employees, involvement of HR professionals is indispensable for successful mergers and acquisitions. Thus, during an amalgamation deal, an HR not only plays the role of a catalyst but also that of a friend, philosopher and guide to enable employees of amalgamated entities to work collectively and constructively.

**Subrat Kumar Dhal**  
R.O., Raipur





## विलय/समामेलन में मानव संसाधन पक्ष

**वि**लय और सामामेलन का मानव संसाधन पक्ष एक प्रकार से अत्यंत ही संवेदनशील और महत्वपूर्ण पक्ष है। आमतौर पर सामामेलन व विलयन में कानूनी, वित्तीय एवं परिचालनात्मक पहलुओं पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता है परंतु किसी भी विलयन की सफलता अथवा असफलता में मानव संसाधन पक्ष का महत्वपूर्ण योगदान होता है। विलयन एवं सामामेलन में मानव संसाधन संबंधी मुद्दे कई स्तरों पर उठा करते हैं, जैसे संगठनात्मक संस्कृति के मेल-मिलाप, जुड़ाव व एकीकरण हेतु ठोस योजनाओं का सम्प्रेषण, विलयन/सामामेलन की देख-रेख हेतु कुशल टीम निर्माण आदि।

यदि इन मुद्दों का विस्तार करें तो इनकी कई सारी परतें खुलती हैं - जैसे प्रबंधकीय दायित्वों का समेकन कर उन्हें संभालने हेतु कार्मिकों का चयन, जिन संगठनों का सामामेलन हो रहा है उनमें से प्रत्येक के मानव संसाधन प्रथाओं एवं नीतियों का आकलन करना ताकि उनके बीच कोई टकराव न रहे और सम्मिलित सभी संगठनों के बीच एक सामासिक संस्कृति का निर्माण करना आदि।

विलयन अथवा सामामेलन की पूरी प्रक्रिया चार चरणों में सम्पन्न होती है। इन सभी चरणों के साथ मानव संसाधन के पहलू विशिष्ट रूप से जुड़े हो सकते हैं :

### विलयन हेतु संगठनों के चयन से पूर्व :

एक संगठन जो विलयन या सामामेलन हेतु सक्षम है, विलयन के उद्देश्य से वह पहले संगठनों की तलाश करता है। कई बार इस तलाश में बाहरी शक्तियाँ भी शामिल होती हैं।

यहाँ प्रारम्भिक आकलन भले ही वित्तीय मानकों पर किया जाए पर मानव संसाधन के पक्ष को भी पूरी गंभीरता देना आवश्यक है।

संगठनों की पहचान व निष्पादन को संगठन की संस्कृति से अलग करके नहीं देखा जा सकता चूंकि संगठन लोगों से मिलकर बना होता है, संगठनात्मक संस्कृति भी लोगों के द्वारा ही निर्मित होती है। हाँ, इस संस्कृति के निर्माण में नेतृत्व की भूमिका अहम होती है। अतः जिस संगठन को विलय के लिए चुना गया है उसकी संस्कृति को समझना जरूरी है।

प्रत्येक संगठन की एक विशिष्ट संस्कृति होती है और इस लिहाज से दो संगठनों की संस्कृति के अंतर को समझना आवश्यक हो जाता है।

लक्ष्य संगठन को मानव संसाधन लागतों का एक पूर्वानुमान होना चाहिए। यदि यह लागत बहुत ऊंची है तो इसकी वहनीयता का पहलू भी विचारणीय होगा। मानव संसाधन मुद्दों में स्थानिकता के मुद्दे हो सकते हैं, विशेषकर जब लोगों को कार्य के लिए दूसरी जगह पर जाना पड़े।

### आवश्यक छानबीन :

यहाँ आशय 'ड्यू डिलीजेन्स' से है, इस छानबीन के दायरे में बहुत सी बातें आएंगी, प्रत्येक संगठन के कार्मिक की जांच-पड़ताल करना तो यहाँ शायद मुमकिन नहीं होगा पर इसके शीर्ष प्रबंधन के सदस्यों का पिछला रिकॉर्ड क्या रहा है? इनमें से किसी की आपराधिक पृष्ठभूमि तो नहीं है, उन्हें लेकर कोई कानूनी विवाद तो नहीं है, मानव संसाधन के नज़रिये से क्या विनियामक की सभी अपेक्षाएँ पूरी की जा सकती हैं, इन सब पर विचार करना वांछित होगा।

### सामामेलन :

जब विलय/सामामेलन के जरिये एक संगठन के स्वामित्व में दूसरा संगठन आ जाता है तो पहले संगठन की जिम्मेदारियाँ बहुत बढ़ जाती हैं। इस सामामेलन के देख-रेख के लिए शीर्ष स्तर की एक टीम होनी चाहिए। टीम व विशेषकर इसका नेतृत्व संभालने वाले व्यक्तित्व को विलय व सामामेलन के पृष्ठभूमि की पूरी समझ होनी आवश्यक है। टीम के नेता को सभी पहलू देखने होंगे। पर इसके अतिरिक्त टीम में ऐसे सदस्य होने चाहिए जो सामामेलन में मानव संसाधन पक्ष की भूमिका को बखूबी समझ और संभाल सके। इस प्रकार इस टीम को सामामेलन की पूरी रूपरेखा तैयार करनी होगी और इसमें निम्नलिखित बातों का समावेश करना होगा :

- विलय/सामामेलन उपरांत संगठन का समग्र ढांचा व विजन तैयार करना।
- नवीन रणनीतियाँ जिन पर ध्यान केन्द्रित किया जाना है।
- नेतृत्व समेत मानव संसाधन का नया मंत्र व संगठन का मिशन।

मानव संसाधन के इस नए तंत्र को दो मोर्चों पर एक साथ कार्य करना पड़ता है - एक तो नयी व्यवस्था में अपने पाँव जमाना तथा दूसरा परिवर्तन स्वीकारने हेतु लोगों को तैयार करना। विभिन्न स्तरों पर कार्यरत कार्मिकों के मन में विलय/सामामेलन को लेकर अंदेशा बना रहता, कुछ कार्मिक चाहे वें किसी भी स्तर या पद पर हों इस पर असंतोष जाहिर करते ही हैं। यह जरूरी नहीं कि अपना असंतोष जाहिर करने के पूर्व उन्होंने इस निर्णय के संभावित परिणामों पर विचार-विश्लेषण किया ही हो। ज़्यादातर यह असंतोष आशंकाओं पर ही आधारित होता है। विलय अथवा सामामेलन होने पर इस वर्ग

को सबसे बड़ी चिंता अपनी जॉब सुरक्षा को लेकर होती है. आशंकाएँ विलय/समामेलन के पश्चात नए परिवेश में खुद को ढालने या इससे तालमेल बैठाने, नए प्रबंधन के रवैये, स्थानान्तरण, नए बॉस के अधीन कार्य करने, वेतन व सुविधाओं में कटौती आदि को लेकर भी हो सकती है. यहाँ मानव संसाधन विभाग को ही अमूमन संगठन का प्रवक्ता बनना होगा और ऐसी सभी शंकाओं का निवारण करना होता है.

#### समामेलन उपरांत :

समामेलन की प्रक्रिया पूरी होने में यूं तो काफी वक्त लगता है; अनेक कानूनी औपचारिकताएँ पूर्ण करने के पश्चात आवश्यक होने पर संबन्धित विनियामक का अनुमोदन भी प्राप्त किया जाता है. इसकी तुलना में समामेलन से जुड़े सामाजिक व सांस्कृतिक मुद्दों का समाधान होने में अधिक समय लगता है. विलय/समामेलन के पश्चात उत्पादकता का स्तर बना रहे, टीम भावना को बढ़ावा मिले तथा नवागंतुक लोग संगठन के साथ शीघ्र तादात्म्य स्थापित कर सके, यह देखना मानव संसाधन विभाग का दायित्व होगा.

विलय समामेलन के समय मानव संसाधन विभाग को सामरिक भूमिका निभाने के लिए आगे आना होता है. शीर्ष प्रबंधन को चाहिए कि मानव संसाधन के संबंध में अपनी अपेक्षाएँ शुरू में ही स्पष्ट कर दें तथा आवश्यक मार्गदर्शन भी प्रदान करें. यदि संगठन को लगता है कि मौजूदा मानव संसाधन टीम विलय/समामेलन को संभालने हेतु सक्षम नहीं है तो बाहर से विशेषज्ञ बुलाए जा सकते हैं.

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हुई विलय और समामेलनों की जानकारी हमें अक्सर मिलती रहती है. बैंकों के विलय समामेलन के अनेक उदाहरण सामने आते हैं तथा आगे भी आएंगे. इनमें मानव संसाधन की भूमिका का अध्ययन अत्यंत रुचिकर, वांछनीय व सीख भरा होगा.

अजीत कुमार भारती  
क्षे.का., बड़ौदा



## TRIVENI SANGAM at THE HOLY FEET of SREE PADMANABHA SWAMY

#### The Triveni Sangam

I just couldn't resist my excitement when I heard the Bank's decision to hold Joint Summit of the three Bank Heads christened as 'Triveni Sangam' in the 'Ananthapuri' - (The City of Lord Anantha) - Thiruvananthapuram - on the 13th Dec., 2019. I then lost no time to fold my hands together visualising the Unique Deity of SREE PADMANABHA in my heart for a moment and thanking the Lord, as I knew for sure, it is His Grace, the Triveni Sangam gets kick started from this holy spot. Later the moment the three Bank Chiefs unanimously volunteered to take a 'darshan' of the Lord and to invoke His blessings, as prelude to commencing their two days strategy meet, laying the merger roadmap, my jubilation was boundless. This collective act of the Bank Heads for seeking the Lord's 'darshan' cleared all the clouds of apprehensions and uncertainties from my mind, on the challenging merger process, scheduled to unfold from then on. Born in this holy town, I grew up hearing so much of legends on the Lord and experiencing plenty of inexplicable Divine Feelings myself every time I am blessed with His 'darshan'. Hence, I seldom had any doubt on the accomplishment of the cherished mission.

#### The Mission Accomplished

Three months later, we just witnessed the magical impact of the Lord's blessings. We experienced ourselves the magnetic power of the Deity. Despite the unsolicited global

outbreak of the virus pandemic in the crucial month of March 2020, completely locking all of us down from our habitual routine on the personal and official front, and amidst the resultant uncertainties and anxieties, the goal stands passionately accomplished, more than just smooth, by all means, counts and stretch of any test. The merged Union Bank today stands tall as the country's 5th largest public sector bank imbued with the 'best of three' spirit deep in its fabric.

#### Sree Padmanabha Swamy Temple

I am absolutely not capable enough to explain on the Lord's Divya Prabha. Either not I am competent to narrate on the Spiritual Speciality of the Deity or on the Architectural Uniqueness of the temple structure or on the mysteries associated with the Temple. Yet, being a humble devotee, I wish to unambiguously say, The Padmanabhaswamy Temple is a unique standout in the annals of Indian Temple legends in very many ways.

#### Origin of the Temple

While the origin of the temple is believed to be "lost in antiquity", Sree Padmanabhaswamy temple finds mention in various Hindu Epics, Puranas and ancient texts including Sangam Tamil literature. One common belief is that Chiranjiv Parshuram consecrated the idol of Sree Padmanabha in Dwapara Yuga. Yet another version of the idol consecration is connected with the legendary sage Vilvamangalathu



Swamiyar. Where basis the Sreemad Bhagavatham, Lord Balarama, brother of Lord Krishna, an incarnation of Lord Vishnu bathed in the Padmatheertham, the holy pond adjoining the temple, gaining ground on the belief that the construction of the temple began during the early days of Kali Yuga, about 5000 years ago.

### Temple Structure

Padmanabhaswamy temple is termed as one of the 108 Divya Desams – Holy Abode of Lord Vishnu (one of the powerful trinities of the universe) in Vaishnavism. Built with the fascinating blend of Kerala and Dravidian styles of architecture featuring high walls and the 16th-century gopura, the Sree Padmanabhaswamy Temple sports a magnificent look drawing the attention and awe of millions of people. Its fabulous corridor with 365 and one-quarter sculptured granite-stone pillars with elaborate carvings are symbolic of various narrations in the epics and puranas. Major renovations, that we see today, had been done by Marthanda Varma, one of the most noted Travancore kings, who introduced the festivals Murajapam (chanting of prayers) and Bhadra Deepam.

The Principal Deity / Main Shrine and Divya Darshan

In the sanctum sanctorum, the Lord reclines in the "Anantha Shayana" (eternal yogic sleep) posture on the serpent Adi Shesha with five hoods facing inwards, signifying contemplation. The 18 feet long Principal Idol of the Lord is made of 12008 Saligram stones brought from the banks of the Gandaki River in Nepal and arranged in the shape of the reclining Lord, and pasted, and covered by an Ayurvedic adhesive mixture called "Katu sarkara". For this

reason, abhishekam in TRIVENI SANGAM AT THE HOLY FEET OF SREE PADMANABHA SWAMY liquid is not allowed on the deity and restricted decorations of the deity only with the flowers, jewels and silk fabrics.

To have darshan, one has to see the Lord through three doors- Thirumugham, Thiruvudal and Thrippadam. While the Lord's face and a Sivalinga underneath his hand are seen through the first door, Brahma sitting on a lotus emanating from the Lord's navel is visible through the second door, hence the Lord is named "Padmanabha" and his Thrippadam is visible through the third door. The Divine Aura of the deity being so powerful and magnetic, the devotees experience radiation of positive energy in abundance in their body during and after the darshan.

### Royal Family's Tutelary Deity

The temple belongs to the Royal Family of Travancore. It is administered by a Trust headed by the Maharaja of Travancore, Moolam Thirunal Rama Varma. Padmanabhaswamy is the Tutelary Deity of this Royal Family under whose watchful guidance all the temple rituals are observed upholding the spiritual significance and religious sanctity. And the priceless treasures of this richest temple in the world, are kept fully secured and intact under the Royal Family's constant vigilant eyes, prudent governance and guardianship.

### Temple Dress Code

The temple maintains a strict dress code since ages, which devotees follow religiously with no gender difference. A Visitor mandatorily has to wear a dothi with a smaller one tied tightly at the lower half (naval) of the body. The concept being each visiting devotee is preceded by the title Sree

Padmnabhadasa. No other attire like pants, trousers, half pants, bermudas or anything of stitched in nature is allowed for men. Whereas of late temple administration has liberalised the dress code for women allowing them have darshan wearing 'chooridar'.

Padmanabhaswamy temple is one of the most celebrated temples in India. The Temple is renowned for its beauty and grandeur, world over. The temple is unimaginably wealthy. It has gained a lot of media popularity in the recent times after some of the secret vaults of the temple were opened only to reveal the immense wealth the temple holds in its possession for centuries and how efficiently these treasures had been kept, maintained and guarded by the Royal Family for ages!

To sum up, the amalgamation journey of the three banks kick started from the holy spot of Ananthapuri has come to its logical success in respect of the first level integration, thanks to the brilliant execution by the bank teams coupled with the Lord's Divine Blessings. The merged entity – the new Union Bank–imbued with the 'best in three' spirit stands emerged in the front line as an industry leader. The journey has to continue. The Journey with the call to double in size in the three years ahead from the current 15 trillion requires strong resolve, amazing confidence, untiring efforts, and for certain, the Lord's blessings in abundance. Let us march ahead with the acquired strength keeping our eyes on the stars and feet on the ground, but never ever compromising on our deep faith in the Lord's Divinity...



Sreekala LK

R.O., Thiruvananthapuram

## Union elite - a niche banking (A branch within a branch)

**Innovation** is the hallmark of any progressive business organisation. Plethora of advertisements that we come across every other day on various publicity platforms and our own day to day personal experiences of the market, reveal the innovations that the companies keep evolving constantly. Certainly, this is done by the companies to make their products more attractive and unique in comparison to other products of the competitors available in the market. The changes brought in by the companies, although involve cost but provide them with the opportunity to enhance the visibility & reach of the products to the consumers. The ultimate objectives of such innovations obviously may be to have sync with the changing consumer preferences & behaviours, to have better market share, enhanced customer loyalty & brand value. While on the other hand, for the consumers, the novelty in the products provides them more better options in terms of usage, tastes, etc.

**Banks** are also business organisations which provide various banking products to the customers. The products are marketed by the banks through its human sales force across the brick & mortar branches. Besides, access to many such products are also extended by the banks through various non-human digital platforms like internet, mobile & cards - physical as well as virtual. Like any other progressive business entity operating in the competitive market, banks also keep innovating constantly its products & services.

**Innovation @ Union Bank of India:-** True to its over 100 years' culture & legacy of being ever vibrant, modern & customer centric bank, our esteemed organisation, Union Bank of India, has been a highly acclaimed, admired and applauded bank in the banking industry. The Bank has been felicitated many times at various platforms at home & abroad for constantly innovating in various fields of banking including its HR policies, training programs, Financial inclusion initiatives and social causes like 'Talking ATMs' for visually impaired. Now, upon amalgamation with two similar vibrant & innovative banks viz. Corporation Bank and Andhra Bank, the Bank stands further consolidated and more empowered. The products have been designed keeping in mind the vast & heterogeneous spectrum of the society. The aim includes easier & wider reach among the customers for their financial & economic growth.

**Challenges of the markets & the banks :-** In an era of constant and rapid innovations in the technological platforms, the customers today have been flooded with features which have been making their everyday life easier, smarter and full of fun & thrills. The customers today feel even more empowered. The market today being the buyers' market, gets driven by the ever changing preferences and choices of the customers.

Banks are also not untouched to all such challenges of the market. The challenge for the banks, specially the nationalised banks like ours, has been even more fierce & deep as we have to carry a business model which can fulfil our social as well as commercial objective equitably as both the segments are equally important, imperative and profit-oriented.

**Niche marketing :-** India has been a rapidly growing economy in the world. As per the estimates, the average per capita monthly income of the citizens in India has been ₹11254.00 as of FY 2019-20, up from ₹8580.00 as of FY 2016-17. A chart depicted hereunder shows the historical data by World Bank which shows that the per capita GDP of India has been rising steadily over the years.

The above data is sufficient to imply that income levels and the purchasing powers of the citizens have been on the rise. With better choices in hand, backed by better income levels & purchasing powers, the people in the country today seemingly tend to have a more luxurious life. People seem to have become more conscious about the quality and are found to have willingness to pay extra even to ensure quality in all walks of their day to day life. The market place today has also been structured in a way wherein products & services although available to everyone but presents a formulation of niche marketing. For them, it is the market that has to respond as per their needs and not the other way round. The markets with stiff competition also have no option but to acknowledge and honour the spirit of 'Customer being the King'.

**Why class in banks:-** The commercial banks in the country have the onus of catering to all the sections of the society, including people from different strata, low, medium, higher of the society. Within the commercial banks, the nationalised banks which shoulder nearly 70% of the nation's economy, have the added responsibility of wider & deeper social banking for the upliftment of poor, weaker, marginalised and financially excluded sections of the society. In such a situation, for a nationalised bank which is also a commercial bank, their business models have to be framed in such a way that on one hand, they are able to



fulfil their social objectives by serving to the lower strata of the society at negligible or no cost while on the other hand, they are able to generate sufficient profits available for its own sustenance & growth as well as for various other stakeholders like its employees, share holders, government, etc.

Since the services to entire spectrum of people, from poor to rich, farmer to industrialist have to be provided through the same set of infrastructure, physical and non-physical, ensuring quality of service at same level to all is a challenge beyond human capabilities. Resultantly, faced with 'unsatisfactory level' of service, a sentiment gets in the elite class of customers. For they look and deserve a personalised qualitative service i.e. niche banking with their commercial bank. Unable to find the same, they being in their right as empowered consumers, feel the need to switch over to other spaces available in the market. Being commercially very important, such a segment of people have to be provided with the space they desire and the quality they look for.

**Union elite:-** It is in this background, it is envisaged that a different structure be created for such a segment of the customers wherein they can avail the desired quality of services.

Though the structure envisaged cannot be created in its exclusivity by nationalised banks due to various social & legal hurdles. Besides various logistics & security aspects also have to be looked into, it is therefore suggested that the structure, christened as 'Union elite' may be created separately but within the existing branch set up of the Bank and for which certain operational aspects may be laid down as under:-

- ❑ The access to the niche space be made available through a special access card having biometric as well as certain financial details of the customer.
- ❑ Every customer entering such area be extended a time bound & a very personalised service.
- ❑ The access points as well as the branches may have artificial intelligence enabled SaaS (Software as a service) utilities whereby the clients may be provided with the services pro-actively.
- ❑ Tools emboldened through business intelligence and data mining on their accounts turnovers, balances, business models, etc. may be used to provide the customers a set of suitable financial assistance as well as financial discipline.
- ❑ Products like pre-approved loans/limits, factoring, bill discounting, Cash management services, tax payments, etc. as per their turnovers, financials, trade debtors, etc. can be offered.
- ❑ Stock assessments/debtors list, etc. may be directly fetched through their e-way bill and GST billing system.
- ❑ Minimum amount of loan limit eg. 1.00 cr may be fixed to ensure the class of the customers.

- ❑ The eligibility criteria for such set up may be fixed with sufficiently higher balances in Savings and Current accounts depending upon the area of operation. Further, in the areas with majority of people having sufficiently higher income levels, the criteria may be fixed accordingly and the space can be named as 'Union Super-elite' to fulfil the objective of a separate set up.
- ❑ The set up to have specially trained and groomed staff having high level of skill sets.
- ❑ Staff members of other branches may have the opportunity to get posting in such branches upon fulfilling the required high level of skill sets.
- ❑ To start with, all ELBs of the Bank may be provided with the set up.
- ❑ Needless to mention that ambience of such set ups to have matching class of landscapes, music systems, water fountains, etc.



**Conclusion:-** The class divide does not mean or intend to mean people-divide. Trains do offer classes like AC 1st, AC 2nd, etc. There are special premium trains also. Aeroplanes have classes - First, Business and economy. It is the right of consumer to seek the true value of his worth. We are a state of mixed economy with the active participation of public as well as private sector. We, the nationalised banks, too can have that space which can symbolise niche banking!

Innovation creates USPs (Unique selling proposition) and the USPs are the driving engines of marketing. Each one of us prefers to have something which carries some sort of USP. It is the uniqueness in each one of us that keeps us alive, meaningful and demanded. The day we stop innovating or adding any value to ourselves, we may start feeling discarded or dejected.

Innovation is the journey to reach the best. No doubt, best is a dream of everyone - person or product but as has been said very aptly,

“Be the Best... But if you can't...  
Be different than the rest .”

**Sandeep Gupta**  
ULP, Meerut





## आओ, मिल जाएं हम सुगंध और सुमन की तरह

**भारतीय** साहित्य में संयोग को बहुत महत्वपूर्ण बताया गया है. जहाँ तक बात है संयोग या मिलन की तो निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि मेलमिलाप एवं विश्वभर को अपने परिवार के तौर पर मान लेने की अवधारणा हम भारतीयों का अपना आविष्कार है तथा इस पर किसी अन्य का कापीराइट अब तक तो सामने नहीं आ सका है. पौराणिक आख्यानों में भी मिलन को बहुत महत्व दिया गया है. राम-भरत मिलाप जैसे प्रसंग को आज भी एक आदर्श उदाहरण के रूप में इतिहास में स्थान मिला है, जिसे हम आज भी हृदयंगम किये हुए हैं. ऐसे में बैंकिंग जगत के समामेलन की चर्चा करें और उसमें यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, आंध्रा बैंक एवं कॉर्पोरेशन बैंक के मध्य हुए इस समामेलन की पृष्ठभूमि हम देखें तो पाते हैं कि इन तीनों के समामेलन ने हमें और नये अवसर छूने के लिए नये शिखर प्रदान किये हैं. कहा जाता है कि एक और एक दो नहीं ग्यारह होते हैं, इतना ही नहीं, यह भी कहा जाता है कि एक और एक दो नहीं सौ होते हैं. यहाँ पर तो हम एक और एक और एक होकर सीधे सहस्र होने के उच्च मनोबल के साथ जुड़ रहे हैं. संभवतः अकेले चलते चलते हम तीनों बैंक इतने बड़े कारोबार के स्वामी होने में बहुत लंबा समय लगा देते, किंतु आज हम सीधे 15 लाख करोड़ के कारोबार के साझा वाहक बने हैं.

जैसा कि हमारा शीर्षक कहता है कि आओ, मिल जाएं हम सुगंध और सुमन की तरह! तो हम पाते हैं कि मिलाप तभी पूर्ण हो सकता है जब वह सुमन और सुगंध की तरह हो, कहने का अभिप्राय यह है कि केवल सौंदर्य से पुष्प की शोभा नहीं हो सकती है. ठीक इसी तरह से केवल सुगंध भी किसी सुंदर कानन कुसुम को पुष्प कहाँ बना पाती है. भगवान के चरणों में अर्पित किये जाने वाले फूलों को न केवल अच्छा दिखाई देना चाहिए, बल्कि उनकी भीनी-भीनी महक से देवालय को महकना भी चाहिए. यदि गंधहीन पुष्प को देवता के श्रीचरणों में चढ़ाया जाता है, तो ऐसा अर्पण अपूर्ण एवं निष्प्रभावी होता है. आजकल संकर प्रजाति के फूलों की बड़ी भारी तादाद में आवक हो रही है. वे सुंदरता में बहुत बड़े-चढ़े होते हैं, साथ ही उनके आकार प्रकार भी देसी फूलों की अपेक्षा कहीं अधिक उन्नत होते हैं, फिर भी वे पुष्प सुगंध रहित होकर केवल पुष्प होने का एक कृत्रिम आभास भर दे पाते हैं. ऐसे फूलों को किसी माला में यदि पिरो दिया जाए तो उनके साथ सुगंधित फूलों का लगाया जाना अनिवार्य हो जाता है. इससे उलट हम देखते हैं कि घर की बगिया में लगे छोटे-छोटे देसी फूल जिनमें सुगंध भरपूर होती है, घर आँगन तो महकाते ही हैं, पाने वाले के मन में भी सदैव बसे रहते हैं.

ठीक इसी तरह हम तीन अलग-अलग क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन बैंक जो मूलतः भारतीय संस्कृति के वाहक होते हुए भी क्षेत्रीय विविधता को स्वयं में समाहित कर अपनी पृथक पहचान के साथ अपने-अपने स्थानों की विशेष सांस्कृतिक छटा को साथ में रखते हुए एकाकार हो रहे हैं. ऐसे में यह कहना अनुचित न होगा कि हम भारत वर्ष में एक लघु भारत के प्रतिनिधि के रूप में अपने ग्राहकों के सामने उपस्थित होंगे. एक ऐसा लघु भारत जिसमें कर्नाटक के मैसूरी वस्त्रों एवं मैसूरपाक के साथ तेलंगना का बिरियानी वाला जायका होगा और जिसमें मुंबई के चटपटे, जायकेदार वड़ा-पाव का लजीज स्वाद तो होगा ही. इस तरह से हम दृश्यगत सुंदरता के साथ मनोनुकूल स्वाद को भी साथ में रखे हुए हैं. हमारा विस्तार देश में भी है और विदेश में भी. हमारे कार्मिक साथी लगभग आधी दुनिया में काम करते हैं तथा देश के आयात-निर्यात में भी अपनी महति भूमिका अदा करते हैं. हम सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक हैं और 'सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय' की उच्च भावना को अपने कार्य का लक्ष्य बनाकर चलते हैं. ऐसे में पुष्प के मूल, पंखुड़ियाँ एवं सुवास तीनों को हम स्वयं में एक साथ संजोए हुए हैं.

भारतवर्ष की भौगोलिक सीमाओं के साथ और उनसे परे भी हम हैं, तो समुद्र के साथ हम आकाश में भी हैं. विश्व के सबसे ऊँचे स्थल पर एटीएम स्थापित कर हमने स्वयं को ऊँचाइयों पर भी पहुंचाकर अपने सच्चे जनसेवक होने का दावा मजबूत किया है. ऐसे में यदि हमारा आकार-प्रकार किसी सुंदर सुमन की भाँति है तो हमारे द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के रूप में किया जाने वाला जन साधारण के हित एवं जन-जन की वित्तीय सुरक्षा का कार्य इस पुष्प की सुगंध की तरह है जो कि स्वतः फैलती जाती है. हम आज भारतवर्ष में सार्वजनिक क्षेत्र के पाँचवे बड़े बैंक हैं. और थोड़े से अतिरिक्त प्रयत्न करके हम बहुत आसानी से चौथा स्थान प्राप्त कर सकते हैं, किंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम ग्यारहवें स्थान से पाँचवे स्थान पर बहुत तेजी से पहुंचे थे, ऐसे में तीसरे अथवा दूसरे पायदान तक पहुंच जाने में भी हमें कठिनाई न होगी.

एक पल्लवित पुष्प की भाँति हमें अपने ग्राहकों के बीच अपनी सेवा की सुंदरता एवं व्यवहार का सौरभ बिखेरकर स्मित से परिपूरित वातावरण का निर्माण करना होगा. तभी हमारा समामेलन एक मिसाल बनकर सभी प्रतिस्पर्धी मित्र बैंकों के मध्य देदीप्यमान होगा. तो आइये हम समामेलन के इस पुष्प को ग्राहक रूपी देवता को समर्पित करें!

अर्पित जैन

स्टा.प्र.के., भोपाल





## MERGER/AMALGAMATION OF BANKS - OVERVIEW

**Overview Of Indian Banking Industry :-** Modern banking in India originated during the last decade of the 18th century when efforts were made to establish the General Bank of India and Bank of Hindustan in 1786 and 1790 respectively. Later some more banks like Bank of Bengal, Bank of Bombay and the Bank of Madras were established under the charter of British East India Company. These three banks were merged in 1921 and it formed the Imperial Bank of India, later became the State Bank of India which is the largest and the oldest bank still in existence. The period between 1906 and 1919 witnessed the establishment of banks such as Bank of India, Bank of Baroda, Canara Bank, Corporation Bank, Indian Bank, Central Bank of India, Union Bank of India, etc.

The impact of globalization on Indian Banking has caused many regulatory and structural changes. With the changing environment, many different strategies have been adopted by this sector to remain efficient and to surge at the forefront in the global arena. One such strategy in the course of consolidation is merger and acquisition.

The Indian Banks did not stay aloof from this wave of mergers and acquisitions (M&A) too. Initially banks were merged to save non-performing banks or inefficient banks but as time evolved, the system too evolved. In the recent times, mergers and acquisitions have also been made on grounds of business growth, profitability and organizational restructure.

The biggest ever merger in the public sector banking sphere in India has taken place on Wednesday April 1, 2020 when six Public Sector Banks were merged into four large banks in a bid to make them globally competitive. As per the mega consolidation plan, Oriental Bank of Commerce and United Bank of India have merged into Punjab National Bank (PNB); Syndicate Bank into Canara Bank; Andhra Bank and Corporation Bank into Union Bank of India and Allahabad Bank into Indian Bank. Last year, Dena Bank and Vijaya Bank were merged with Bank of Baroda. Prior to this, the government had merged five associate banks of SBI and Bharatiya Mahila Bank with the State Bank of India. These were State Bank of Patiala, State Bank of Bikaner and Jaipur, State Bank of Mysore, State Bank of Travancore and State Bank of Hyderabad effective since April 2017.

**Mergers Of Indian Banks :-** The following gives a clear picture of mergers in Indian Banking Industry:-

1. Bareilly Corporation Bank Ltd. Merged in Bank of Baroda on 07.06.1998
2. Sikkim Bank merged in Union Bank of India on 25.05.1999
3. Times Bank Ltd. merged in HDFC Bank Ltd. on 26.02.2000
4. ANZ Grindlays Bank merged in Standard Chartered Bank on 27.04.2000
5. Bank of Madura Limited merged in ICICI Bank Ltd. On 14.03.2001
6. Benares State Bank Ltd. merged in Bank of Baroda on 21.06.2002
7. ICICI & its Retail finance subsidiaries merged in ICICI Bank Ltd. wef. January, 2002
8. South Gujarat Local Area Bank Ltd. merged in Bank of Baroda on 25.06.2004
9. Global Trust Bank merged in Oriental Bank of Commerce on 27.08.2004
10. United Western Bank (UWB) merged in IDBI Bank on 03.01.2006
11. Ganesh Bank of Kurundwad Ltd. merged in Federal Bank Ltd. On 25.01.2006
12. The Ganesh Bank of Kurundwad merged in the Federal Bank Ltd 02.09.2006
13. Bank of Punjab Limited merged in Centurion Bank of Punjab Ltd. On 19.04.2007
14. Lord Krishna Bank Ltd. merged in Centurion Bank of Punjab Ltd. On 29.08.2007
15. Sangli Bank Ltd. merged in ICICI Bank Ltd. On 31.10.2007
16. Centurion Bank of Punjab Ltd. merged in HDFC Bank Limited on 23.05.2008
17. The Bank of Rajasthan Ltd. merged in ICICI Bank Ltd. On 13.08.2010
18. ING Vyshya Bank merged in Kotak Mahindra Bank in 2014
19. Five SBI associates and BMB merged in SBI in 2017

20. Vijaya Bank and Dena Bank merged in Bank of Baroda in 2019
21. Allahabad Bank merged in Indian Bank in 2020
22. Andhra Bank and Corporation Bank merged in Union Bank of India in 2020. (5th largest bank)
23. Syndicate Bank merged in Canara Bank in 2020
24. Oriental Bank of Commerce and United Bank of India merged in Punjab National Bank 2020

(Source: History of Banks).

### India has 12 Public Sector Banks

**Now** :- The biggest overhaul in public sector banks has left India with only 12 banks now instead of 18 before the current year Merger. According to the Government, this decision of making large entities will make the Indian banks capable of meeting the higher funding needs of the economy and will also help in acquiring the global scale.

**Six Banks Untouched** :- The mega merger has left untouched six other banks out of which two are nationalized banks and the four have regional focus. The untouched banks are Bank of India, Central Bank of India, Indian Overseas Bank, UCO Bank, Bank of Maharashtra and Punjab & Sind Bank which will continue to operate as separate entities like before.

### Need Of Mergers And Acquisitions In Banking Industry Of India:-

It is observed in literature that most of the work done on mergers and acquisition is based on financial & accounting aspects like performance of banking institutions as value creation, efficiency improvements as explanations for synergies and produced evidence that suggests mergers generate gains by improving resource allocation rather than by reducing tax payments of increasing the market power of the combined

firm. Some studies found that upon announcement, the market rewards the merger of partners that focus their geography and activities and earning stream. Only these facets, focusing earning streams enhances long-term performance. The identified factors on mergers and acquisitions of banks like globalization, liberalization and information technology developments have contributed to the need for a more competitive, resilient and robust financial system.

Acquisitions often have a negative impact on employee behavior resulting in counterproductive practices, absenteeism, low morale, and job dissatisfaction. It appears that an important factor affecting the successful outcome of acquisitions is top management's ability to gain employees' trust.

The trend of consolidation in Indian banking industry has so far been limited mainly to restructuring of weak banks and harmonization of banks and financial institutions. Voluntary mergers demonstrating market dynamics are very few and it is found that the Indian financial system requires very large banks to absorb various risks emanating from operating in domestic and global environments.

The important factor in mergers and acquisitions:-

- Market Leadership
- Growth and Diversification
- Synergy
- Risk
- Economies of Scale
- Economies of Scope
- Strategic Integration

### Fruitful Result of Banks' Merger:-

As per different studies conducted, most of the mergers done in the past, have proved to be an overall success for the weaker banks although there are no concrete parameters to verify this observation. Hence going by the track record, merger and acquisition in Indian banking have been fruitful for the Indian Economy.

After clearly understanding motives behind and rationale for merger, we can identify following benefits of mergers to all the participants/ stakeholders:-

- Larger Banks are capable of facing global competitions.
- Mergers will reduce the cost of banking operations.
- Mergers will result in better NPA reduction and Risk management.
- Mergers will help in improving the professional standards.
- Decisions on High Lending requirements can be taken promptly.
- For the bank, retaining and enhancing its identity as a larger bank becomes easier. After the merger, benefits of merger are enormous and the biggest is generation of a brand new customer base, empowering of business, increased hold in the market share, opportunity of technology upgrade. Thus overall it proves to be beneficial to the Economy.
- Provides better efficiency ratio for business operations as well as banking operations which is beneficial for the economy.
- Due to mergers and acquisitions, there is overall risk minimization which is always good from the business point of view.
- Leads to increase in profitability and helps in raising the standard of living which is absolutely crucial for a growing economy like India.
- Chances of survival of under-performing banks increases hence customer trust remains intact which is vital for the Economy. The weaker bank gets merged into stronger one and gets the benefit of large scale operations.
- The objectives of financial inclusion and broadening the geographical

reach of banking can be achieved better with the merger of large public sector banks and leveraging on their expertise.

- With the large scale expertise available in every sphere of banking operation, the extent of inefficiency which is more in case of small banks, will be minimized.
- The merger will help the geographically concentrated regionally present banks to expand their coverages.
- Larger size of the Bank will help the merged banks to offer more products and services and help in integrated growth of the Banking sector.
- A larger bank can manage its short term and long term liquidities better. There will not be any need for overnight borrowings in call money market and from RBI under Liquidity Adjustment Facility (LAF) and Marginal Standing Facility (MSF).
- In the global market, the Indian banks will gain greater recognition and higher rating.
- With a larger capital base and higher liquidity, the burden on the central government to recapitalize the public sector banks again and again will come down substantially.
- Multiple posts of CMD, ED, GM and Zonal Managers will be abolished, resulting in substantial financial savings.
- Bank staff will be under a single umbrella with regard to their service conditions and wages instead of facing disparities.

**Emerging Issues In Merger & Amalgamation:** Growth is an ongoing process that reflects various issues pertaining to various dimensions of business. Mergers in any industry are prerequisite for growth but it surely affects the customers, employees,

shareholders and all concerned departments. There are studies, which reveal significant relationships between mergers and constituents of business but following emerging issues require more attention from the acquirer bank and management in order to successfully implement merger.

- Employees' Perception
- Branch Size
- Customer Perception
- Communication
- Change Management Strategies
- Human Resource Management

**CONCLUSION :-** Banking sector is one of the fastest growing area in the developing economies like India. M&A is discussed as one of the most useful tool for growth. Indian economy has witnessed fast pace of growth in post liberalization era and banking is one of them. M&A in banking sector has provided evidences that it is a useful tool for survival of weak banks by merging them into larger banks.

Some private banks used merger as a strategic tool for expanding their horizons. There is huge potential in rural markets of India, which is not yet explored by the major banks. It strengthens their networks across geographical boundaries, improves customer base and market share.

On March 4, 2020, the Finance Minister announced the final date of merger as April 1, 2020. According to her, the exercise of consolidation of 10 public sector banks (PSB) into four was on course and the merger would come into effect from April 1, 2020. The Union Cabinet had given a gazette go-ahead for the mergers.

It is the desire for growth that acts as the fuel not only for an entrepreneur but also for every professional or corporation. This deep desire for growth in terms of customer base, balance sheet and profit have led the organizations engaging in mergers and acquisitions to move ahead and onwards in synergies.

In view of recent mergers, the exercise assumes significance as it has taken place at a time when the entire country is under the grip of COVID-19 outbreak. It has triggered number of days of lockdown to contain the spread of the deadly virus. Experts are of the opinion that merger at this point of time may not remain in a very smooth and seamless transition. However, heads of the anchor banks have exuded confidence and do not find any problem as the process has gone as per the plan with certain modifications in implementation.

In addition, consolidation would also provide impetus to merged entities by increasing their abilities to support larger ticket-size lending and have competitive operations by virtue of greater financial capacities.

**Important But to Remain under Watch:-** Mergers are important for the consolidation and expansion purpose and that is why in today's scenario many private sector banks are genuinely interested in mergers and acquisitions. They are also crucial for economy as most of the times they are successful in saving weak banks which have failed in meeting expectations.

Merger creates variety of problems which can cause great damage if the process of merger has not been executed properly.

If merging is needed, it must be executed in a manner which leads to an environment of trust and agreement among the people of both the organizations. If people, work cultures and visions are blended together nicely, mergers will definitely have synergic effects and create a win-win situation for all stake holders.

**Mukesh Kumar Bamil**  
R.O., Agra





## भारतीय अर्थव्यवस्था पर बैंकों के विलयन का प्रभाव

**क**ई वर्ष पूर्व जब बैंक के विलयन की बात सोची गयी थी तब उसका उद्देश्य काफी अलग था. विकासशील देश की कई आवश्यकताएं होती हैं. यहाँ के उद्योग और बाज़ार कई प्रकार के उतार चढ़ाव से गुजरते हैं.

ऐसे में देश के उद्योगपतियों को आगे बढ़ने और सरकार के पास भी नयी योजनाओं को लागू करने के लिए एक मजबूत आधार की आवश्यकता होती है. दो दशक पूर्व जब बैंकों के पास भारी मात्रा में बड़े-बड़े लोन की मांग आने लगी तब भारतीय बैंकों के सामने एक समस्या उभरने लगी.

दरअसल, भारतीय सरकारी बैंकों के पास इतनी पूंजी नहीं थी कि वह अकेले 2000 करोड़ या उससे अधिक का ऋण देने का जोखिम उठा सकें. ऐसे में कन्सोर्टियम के माध्यम से कई बैंक मिल कर एक बड़े ऋण का जोखिम उठाते थे. जिसमें जिस बैंक की हिस्सेदारी सबसे ज्यादा होती थी उसे लीड बैंक चुना जाता था.

बदलती स्थिति को देखते हुए देश को ऐसे बड़े बैंकों की आवश्यकता महसूस होने लगी जो इतना बड़ा जोखिम अकेले उठा सकें. इसी विचार को आकार देते हुए बैंकों के विलयन का सुझाव सामने आया. क्योंकि नए बैंक की स्थापना और उसके प्रसार से बेहतर होगा कि पहले से स्थापित 2 या अधिक बैंकों का विलय करके एक बड़ा बैंक स्थापित कर दिया जाए.

हालांकि वर्तमान अर्थव्यवस्था में परिस्थितियाँ गत समय से काफी भिन्न हैं और इन परिस्थितियों में बैंकों के ये विलय और समामेलन अर्थव्यवस्था को कई अन्य स्तरों पर विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है. जैसे-  
**प्रशासनिक लागत**— निश्चित रूप से बैंक चाहे जितने भी हों. सरकार एक है और सरकारी बैंक होने के कारण सभी के वहन का दबाव सरकार पर होता है. मंद गति से चलती हुई अर्थव्यवस्था के कारण बैंकों के लिए मुनाफा कमाना कठिन है. ऐसे में सभी सरकारी बैंक

एक दूसरे से ही प्रतिस्पर्धा करते हुए एक दुसरे के मुनाफे को तो काट ही रहे हैं. साथ ही इन बैंकों के सुचारु प्रक्रियान्वयन के लिए एक ही पॉकेट (देश के बजट) में से अलग अलग जगह व्यय किया जा रहा है. यह व्यय पूरी तरह निरर्थक है. कई जगह बाज़ार आदि में हम देख सकते हैं 3-4 सरकारी बैंकों की शाखाएँ 1 किलोमीटर के भीतर ही होती हैं. ऐसी स्थिति में सरकार द्वारा 3-4 परिसर, इतने कर्मचारियों का वेतन आदि पर अतिरिक्त व्यय हो रहा है और मुनाफा कई बैलेंस सीट में बंट कर सामने आता है. इस व्यय को कम करने से देश पर पड़ने वाला दबाव कम होगा व परिणामस्वरूप लाभ में वृद्धि होगी.

**पारदर्शिता (ट्रांसपेरेंसी)**— चूंकि बैंक का सारा कारोबार पैसे और आस्ति से जुड़ा हुआ है. बैंकों पर सरकार के व लोगों के दोनों के ही धन, संपत्ति के रख रखाव की ज़िम्मेदारी है. ऐसे में धोखाधड़ी और अन्य चूकों की संभावना भी निश्चित ही बढ़ जाती है. इन सब से बचने के लिए देश के सभी बैंकों को

नियंत्रित करने वाले एक बड़े बैंक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है।

भारत में यह भूमिका भारतीय रिजर्व बैंक को दी गयी है। किन्तु इतने सारे पैन इंडिया बैंकों को नियंत्रित करना विनियामक संस्था के लिए एक हरकूलियन टास्क ही कहा जाएगा। हालांकि आरबीआई इस कार्य को बेहद निपुणता से अंजाम देता है। किन्तु जब अधिकांश बैंकों का विलय हो जाएगा और देश में कुछ प्रमुख बैंक ही बचेंगे तब भारतीय रिजर्व बैंक की नियंत्रण प्रक्रिया भी अधिक सुगम और प्रभावी होगी, लेखा परीक्षा हो या नए मानदंडों को लागू करना, सभी में सरलता होगी। सभी स्तरों पर पारदर्शिता में वृद्धि होगी। निगरानी का कार्य अच्छे से किया जा सकेगा और मामलों को जल्दी सुलझाया जा सकेगा। एकीकरण से नियंत्रण के कार्य में सरलता ही नहीं अनुपालन में भी तेजी होगी व परिणाम भी जल्दी प्राप्त किए जा सकेंगे।

**यूनियन बैंकिंग-** भारत एक बड़ा देश है और जैसा कि हम सब जानते हैं कि समय के साथ साथ स्थानों का फासला मिटता जा रहा है। आज के दौर में हम कई बार देखते हैं कि एक परिवार के चार सदस्य देश के तीन भिन्न राज्यों में रह रहे हैं। इतना ही नहीं एक व्यक्ति अपनी नौकरी बदलने के साथ राज्य भी बदल देता है क्योंकि नौकरी ढूँढने की प्रक्रिया में होम स्टेट अब प्राथमिकता नहीं रहा है। ऐसे में बिहार का व्यक्ति जोकि यूनियन बैंक के खाते का प्रयोग कर रहा है, यदि आंध्र प्रदेश में नई नौकरी करता है तो बैंकिंग के लिए उसे निश्चित ही दर-दर की ठोकरें खाने वाला अनुभव होगा। वैसे तो यूनियन बैंक की शाखा आंध्र प्रदेश में भी होगी पर उसकी ख्याति और सेवाओं में फर्क होगा। वहाँ रहने वाले लोग इस बैंक के स्थान पर अपने राज्य के मूल बैंक जैसे आंध्रा बैंक को प्राथमिकता देंगे। परिणामस्वरूप यूनियन बैंक की सेवाएं

व शाखाएँ दोनों ही सीमित होना स्वाभाविक है। किन्तु यह स्थिति आज के बैंक ग्राहक के लिए यह एक बड़ी समस्या है।

बैंकों का विलयन इस समस्या का भी समाधान उपलब्ध कराता है अब यूनियन बैंक का ग्राहक आधार जितना उत्तर प्रदेश, बिहार में होगा उतना ही आंध्र प्रदेश व तमिलनाडु में होगा। अतः निश्चित रूप से उसकी शाखाएँ और सेवाएँ बढ़ेंगी और बैंक के परिदृश्य में उसकी पहुँच बढ़ेगी। अंततः इस सब से ग्राहक के लिए सुविधा बढ़ेगी और बैंक का कारोबार बढ़ेगा।

**पूँजी पर्याप्तता-** भारत में बैंकिंग कोई आधुनिक व्यवस्था नहीं है। भारत में 1770 से बैंकों की स्थापना, उनका प्रयोग और उनकी भूमिका का दौर आरंभ हो गया था। ढाई सौ वर्षों के बैंकिंग इतिहास के बाद भी भारत आज बैंकिंग के अंतराष्ट्रीय मानदंडों को पूरा नहीं करता है।

भारत में बेसल III के अनुपालन के समय सीमा को मार्च 2019 से बढ़ा कर मार्च 2020 कर दिया गया है। किन्तु अभी भी दिल्ली दूर है। विलयन की प्रक्रिया से बैंकों की पूँजी पर्याप्तता बढ़ जाएगी व भारतीय बैंक के लिए 9% का सीआरएआर बनाना संभव हो पाएगा। इससे ना सिर्फ अंतराष्ट्रीय मानदंडों का भी अनुपालन होगा बल्कि लचर बैंकिंग व्यवस्था को मजबूत आधार मिलेगा।

**भावनात्मक मूल्यों की हानि-** भारत की जनता जितनी प्रगतिवादी है उतनी ही भावनात्मक भी है। हम बैंक को व्यापारी की दृष्टि से नहीं देखते हैं। हम खुद को संस्था से जुड़ा हुआ महसूस करते हैं। विशेष कर जो पुरानी पीढ़ी है वह खुद को बैंक और उसके अधिकारियों पर निर्भर समझती है। कई सारे लोगों के खाते पीढ़ियों से किसी एक बैंक में हैं। वह उत्पादों की गुणवत्ता से अधिक भावनात्मक लगाव

को महत्व देते हैं। उनके लिए वह बैंक जिसके साथ वह वर्षों से बैंकिंग करते हुए आ रहे हैं उसका विलय हो जाना तथा नाम से लेकर स्वरूप, व्यवस्था बदलना बहुत बड़ी बात है।

कर्मचारियों के दृष्टिकोण से भी यह भवनात्मक बदलाव होगा। वर्षों से एक बैंक के कर्मचारी के नाम से जाने जाने वाले व्यक्ति के लिए तुरंत नई व्यवस्था से जुड़ना और उसका प्रतिनिधित्व करना असहज होगा। स्थानांतरण आदि की समस्याएँ निश्चित ही समाने आएँगी। विलयन में शामिल बैंकों के मानव संसाधन विभाग के लिए सभी स्टाफ सदस्यों के मूल्यों को सुरक्षित रख पाना एक बड़ी चुनौती होगी। इन सबके अतिरिक्त दो तीन छोटी संस्थाएँ मिलाकर एक मजबूत संस्था का निर्माण किया जाएगा। जो लाभ प्राप्त करने के साथ बड़ी बड़ी हानियाँ झेलने में भी समर्थ होगी। आज के समय में एक बड़ा एनपीए एक सामान्य सरकारी बैंक को नींव से हिला देता है। किसी भी सरकारी संस्था के लिए यह अच्छी स्थिति नहीं है। विलयन इन संस्थाओं की नींव को मजबूती प्रदान करेगा।

एक और सकारात्मक बिन्दु यह है कि भारतीय बैंकों की सिर्फ भारत ही नहीं विदेश में भी मौजूदगी बढ़ेगी और यह सिर्फ बैंकों का विलयन न होकर वैश्वीकरण भी होगा।

स्पष्टरूप से बैंकों का यह विलयन अर्थव्यवस्था को चारों तरफ से प्रभावित करने के साथ-साथ आम जन में बैंकिंग की अवधारणा को भी पुनः स्थापित करेगा। अंततः हम यह कह सकते हैं कि यह विलय कई सारी खूबियों और खामियों के बावजूद देश के लिए अविस्मरणीय अनुभव होगा।

ज्योति सिंह  
क्षे.का., पुणे



## श्रीमती पुष्पा सिंह (पत्नी अविनाश कुमार सिंह, महाप्रबंधक) एवं श्रीमती अपर्णा सीरौठिया (पत्नी ब्रिगे. आशुतोष सीरौठिया सी.एस.ओ.) को भावभीनी विदाई

श्री अविनाश कुमार सिंह, महाप्रबंधक एवं श्री आशुतोष सीरौठिया सी.एस.ओ. की सेवानिवृत्ति के उपलक्ष्य में यूनिवन की सक्रिय सदस्या श्रीमती पुष्पा जी एवं श्रीमती अपर्णा जी को यूनिवन की अध्यक्ष श्रीमती सत्यवती रै जी. द्वारा मुंबई स्थित यूनिवन के ऑफिस में दि. 6 फरवरी, 2020 को भावभीनी विदाई दी गई. इस विदाई समारोह में श्रीमती सरिता गुसाई (पत्नी - श्री गोपाल सिंह गुसाई, का.नि.) श्रीमती प्रणीता गर्ग (पत्नी - श्री दिनेश कुमार गर्ग, का.नि.), श्रीमती नीरजा बिस्वाल (पत्नी - श्री मानस रंजन बिस्वाल, का.नि.) तथा अन्य यूनिवन सदस्या बड़ी संख्या में उपस्थित रही.



## इमैजिका में 'यूनिवन' की पिकनिक

दि. 6 जनवरी, 2020 को 'यूनिवन' की सभी महिला सदस्यों की वार्षिक पिकनिक इमैजिका, खोपोली में आयोजित की गई. इस पिकनिक में यूनिवन की अध्यक्ष श्रीमती सत्यवती रै जी. के साथ श्रीमती प्रणीता गर्ग (पत्नी - श्री दिनेश कुमार गर्ग, का.नि.), श्रीमती नीरजा बिस्वाल (पत्नी - श्री मानस रंजन बिस्वाल, का.नि.) तथा अन्य कार्यपालकों की पत्नियां भी उपस्थित रही. मनोरंजक खेल एवं गतिविधियों के साथ यूनिवन सदस्यों के लिए आयोजित यह पिकनिक यादगार रही.



# ‘यूनियन’

‘किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार  
किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार  
किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार  
जीना इसी का नाम है’



यह गाना मेरा पसंदीदा गाना है और जैसा कि इस गाने में बताया गया है, वैसी ही मानसिकता लेकर चलने वाले संगठन से मेरा परिचय हुआ, जब मेरे पति श्री दिनेश कुमार गर्ग जी की ‘यूनियन बैंक ऑफ इंडिया’ में बतौर कार्यपालक निदेशक के रूप में नियुक्ति हुई। नया बैंक, नये लोग, नया परिवेश, नया माहौल, मैं जब पहली बार यूनियन बैंक में गयी, तब थोड़े तनाव में थी। किस तरह से अन्य लोगों के साथ बात की जाएं, किस तरह के लोग होंगे आदि। लेकिन जब यूनियन बैंक के ‘यूनियन क्लब’ से मेरा परिचय हुआ, तब ये सभी सवाल और तनाव कपूर जैसे उड़ गए।

‘यूनियन’ यानि यूनियन बैंक के कार्यपालकों की पत्नियों द्वारा समाज कार्य और समाज सेवा हेतु बनाया गया एनजीओ जैसा संगठन। इस संगठन का मैं भी एक हिस्सा बन गई और फिर शुरुआत हुई एक नई यात्रा की! इस यात्रा में मुझे बहुत सारी सहेलियां, सखियां और अच्छी महिला सहयोगी मिली।

यह किटी पार्टीज, ताश खेलने वाला या समय बिताने के लिए बनाया गया क्लब नहीं था। यह क्लब अपनी विशिष्टता और उद्देश्यों को लेकर चलता है।

समाज ने हमारी यात्रा में हमें बहुत कुछ दिया है लेकिन इसी समाज का एक हिस्सा ऐसा है, जो सदियों से वंचित रह जाता है। गरीबी और उपेक्षा में जीता है। इसी वंचित तबके हेतु सहायता/मदद देने का काम यह यूनियन क्लब करता है। इस क्लब के साथ जुड़कर मुझे बहुत अच्छा लगा, सही मायने में किसी सार्थक कार्य से मैं जुड़ गई हूं और समाज के प्रति छोटी-सी बिल्कुल छोटी सी ही सही लेकिन जिम्मेदारी निभा रही हूं।

यूनियन यानि एक ऐसा संगठन, जो एक साथ मिलकर कई गतिविधियों को अंजाम देता है। यहां चैरिटी से जुड़े अनेक कार्यक्रम किए जाते हैं। विकलांगों की आर्थिक सहायता की जाती है, विशिष्ट और विशेष तौर से गतिमंद बच्चों की सहायता की जाती है, घरेलू कामकाज

करने वाली महिलाओं के लिए छाने बांटना या फिर अन्य तरीके से उनकी सहायता करना, महिला संगठनों की मदद करना, महिला सशक्तिकरण हेतु महिला दिवस मनाना आदि। अनाथ बच्चों के लिए भी यह संगठन कार्य करता है। दिवाली का त्योहार हम सब क्लब सदस्य अलग तरीके से मनाते हैं। दिवाली से पहले हम अनेक स्टॉल्स लगाकर विविध चीजों/वस्तुओं की बिक्री करते हैं और इस बिक्री से जो भी लाभ होता है, उसे जरूरतमंदों के बीच वितरित किया जाता है।

इस संगठन में 30 से ज्यादा महिलाएं हैं जो कि अपनी सक्रिय सहभागिता से क्लब को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह एक परिवार है जो कुछ अच्छा करने के लिए जुटा है, इसमें नए सदस्य आते हैं, कुछ पुराने चले जाते हैं लेकिन यूनियन उतने ही जोश और समर्पण के साथ चलता है।

अनेक एनजीओ में जाकर यह संगठन, आर्थिक सहयोग के साथ कार्य भी करता है तथा कहीं-कहीं जाकर वृक्षारोपण भी करता है। कहीं ‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’ एवं स्वच्छता जैसे अभियानों में भी सहयोग देता रहता है तथा हम अपने मनोरंजन व एकता के लिए पिकनिक का भी आयोजन करते हैं जो कि हमारी एकजुटता को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। ‘यूनियन’ का हिस्सा बनना, मेरे लिए एक अलग अनुभव है। इस अनुभव ने मुझे यह संतुष्टि भी दी है कि हम कुछ अच्छा कर रहे हैं। मुझे इस बात की खुशी है कि मैं यूनियन का एक हिस्सा हूं और इस खुशी ने मुझे यह एहसास भी दिलवाया है कि यूनियन का हिस्सा बनकर मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं क्योंकि ‘यूनियन’ एक संकेत है सकारात्मकता का, यूनियन मुस्कान है जो वंचितों के चेहरों पर आती है और ‘यूनियन’ है, खुशियों का भांडार – जो सभी को आनंद देता है।

श्रीमती प्रणीता गर्ग

पत्नी – श्री दिनेश कुमार गर्ग,  
कार्यपालक निदेशक





# Role of Employee in Merger/Amalgamation

1st April 2020 is a historic day in the banking industry of India, as three great banks namely Union Bank of India, Andhra Bank and Corporation Bank merged into one. As an employee of Union Bank of India who has put in 35 years of service in this great organization, this is a proud moment for me when my Bank has become the country's fifth largest Public sector Bank.

An employee who is encouraged, whose emotions are taken care of and whose talent is appreciated will deliver more to the organization than an employee who is merely paid higher wages/facilities. In the same manner a willing and satisfied worker can definitely do wonders to his job/nation.

Amalgamation of banks is done with the sole intention of creating strong banks and hence employees of all the banks will be treated on the same footing. Basically all the employees have same issues like taking care of their family, their job/career, facing new challenges in the banking industry, etc. Hence it is the duty of each and every staff member of all the three banks to treat their colleagues with utmost respect.

It is human nature that when the organization in which we are working merges with a bigger organization and loses its identity (Although losing identity appears to be superficial, because when there is amalgamation/merger of Banks, the best policies/schemes/working culture of all the three banks are considered while framing guidelines/rules), the employees may antagonize. They have various apprehensions such as change in work culture, various policies including promotion and transfer policy, guidelines and norms pertaining to loans, etc.

The amalgamation of the three banks should be looked from a

broader perspective. All the Banks are public sector undertakings. The amalgamation is necessitated, in order to have strong Banks. As such there is no question of the employees feeling downgraded or alienated. After all, we are all working in the national interest i.e. to have a strong banking sector. Further, looking to date of establishment of Banks, Corporation Bank is established in 1906, Andhra Bank in 1923 and Union Bank Of India in 1919. Hence Corporation Bank can be considered as the elder sibling and vice versa.

During the course of our service we develop a bonding with the good customers of the branch/Bank. We should treat the customers of all the three Banks on the same footing as regards customer service and no discrimination of any kind is to be meted out to them. Being a Unionite, here my role will be crucial for cordial relations amongst the staff of all three banks vis-à-vis customers of all the three Banks. This includes, creating a feeling of oneness, being a part of a giant organization, learning/teaching new techniques/guidelines, etc.

To a certain extent, there may be resistance/dissatisfaction amongst employees, on account of merger. However we should realize that merger has been done with a long term interest of the economy/banking sector. Heraclitus, the great Greek philosopher, has said "change is the only constant in life". Hence when change is inevitable, we should accept it and work to achieve our goals in the larger interest of the society/economy/nation. Post merger, this idea will be my goal/aim.

At the cost of repetition, I would like to state that amalgamation/merger of banks is done with higher goals such as to reduce costs/expenses, reduce competition among public sector banks and face foreign

banks bravely. If each and every employee realizes and accepts this, there will be mutual understanding amongst staff members of all the three banks. Hence my role includes creation of this good will and mutual understanding and co-operation and work for the growth of Union Bank Of India, rendering excellent customer service to customers of all the three banks without any discrimination and of course, last but not least, the prosperity and well being of each and every staff member.

Our Bank's logo features two interlocking U's in red and blue. The colour blue represents commitment while red is symbolic of the passion that exists in Union Bank Of India. Here I would like to add, that Red stands for Revolution and Resolution and blue stands for devotion and determination. Hence at this revolutionary time when three great Banks merged into one, let us all make a resolution that with commitment, passion, devotion and determination, we shall make our Union Bank of India a great organization and prove to the world that we are good people to bank with.

Finally let us come to the taglines of all our three Banks (alphabetically). The tagline of Andhra Bank is \*Where India Banks\* and the tag line of Corporation Bank is \*Prosperity for all\* and the tag line of Union Bank Of India is \*Good people to Bank with\*. My dear friends, it appears that even the taglines are made for each other when I have amalgamated all three--- \*When good people bank with a bank, where India banks, it is prosperity for all\*.

**Veena Shenoy**  
Mulund (East) Br.,  
Mumbai (N)



**पी**ले फूलों वाले अमलतास का पेड़ सड़कों के किनारे और बगीचों में प्रायः देखने को मिल जाता है। इस खूबसूरत पेड़ को शहरों में सड़क के किनारे अक्सर सजावट वाले पेड़ के तौर पर लगाया जाता है। लेकिन सौंदर्यीकरण के लिए लगाए जाने वाले इस पेड़ के सभी अंगों जैसे छाल, फल और पत्तियों का इस्तेमाल प्राचीन काल से ही औषधि के रूप में किया जाता रहा है। जी हां, इस पेड़ को रोगों का हत्यारा भी कहा जाता है। अमलतास मधुर, तासीर में शीतल, भारी, स्वादिष्ट, स्निग्ध, कफ नाशक, पेट साफ करने वाला होता है। साथ ही यह ज्वर, दाह, हृदय रोग, रक्तपित्त, वात व्याधि, शूल, गैस, प्रमेह एवं मूत्र कष्ट नाशक है। यह गठिया रोग, गले की तकलीफ, आंतों के दर्द, रक्त की गर्मी और नेत्र रोगों में उपयोगी होता है।

**उपयोग:** 10 ग्राम अमलतास के जड़ की छाल लेकर उसे 200 मिलीलीटर पानी में डालकर उबालें और पकाएं। पानी एक चौथाई बचे रहने पर छान लें। इसे 1-1 चम्मच की मात्रा में दिन में 3 बार सेवन करने से गले की सूजन, दर्द, टांसिल में शीघ्र आराम मिलता है।

इसके पत्तों को सिरके में पीसकर बनाए लेप को दाद, खाज़-खुजली, फोड़े-फुंसी पर लगाने से रोग दूर होता है। यह प्रयोग कम से कम 3 हफ्ते तक अवश्य करना चाहिए।

बुखार होने पर इसके गूदे को 3 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम नियमित 5 दिन लेने से लाभ मिलता है। साथ ही बुखार के कारण होने वाले बदन दर्द में भी राहत मिलती है।

इसके 50 ग्राम गूदे को 150 मिलीलीटर पानी में रोज भिगोकर रात को सोने से पहले पीसकर चीनी मिलाकर पीने से लाभ होता है या फिर गुलाब के सूखे फूल, सौंफ और अमलतास की गिरी बराबर मात्रा में लेकर पीस लें, 1 कप पानी में 2 चम्मच चूर्ण घोलकर शाम को रख दें और रात्रि में सोने से पूर्व छानकर पीने से अगली सुबह कब्ज में राहत मिलेगी।

अमलतास के बीजों को पानी में घिसकर बिच्छू के दंश वाले स्थान पर लगाने से कष्ट दूर होता है।

इसके बीजों की गिरी को पानी में घिसकर नाभि के आस-पास लेप लगाने से पेट दर्द और गैस की तकलीफ में आराम मिलता है।

जलती अमलतास की जड़ का धुआं बहती नाक को उत्तेजित कर तुरंत राहत प्रदान करता है।

इसके फल के गूदे को पानी में घोलकर हल्का गुनगुना करके नाभि के चारों ओर 10-15 मिनट तक मालिश करें। यह प्रयोग नियमित करने से एसिडिटी में स्थायी लाभ होता है।

अमलतास के काढ़े में सेंधा नमक और घी मिलाकर पीने से बवासीर में खून का बहना बंद होता है तथा रोग ठीक हो जाता है।

40 ग्राम अमलतास का गूदा 400 मिलीलीटर पानी के साथ मिट्टी के बर्तन में पकायें, पानी का रंग लाल होने पर उसे उतारकर छान लें और उस पानी में सेंधा नमक 6 ग्राम और गाय का घी 20 ग्राम मिलाकर ठंडा करके पीने से बवासीर में राहत मिलती है।

अमलतास के गूदे को गर्म करके उसकी गोलियां बना लें। 2-2 गोली रोजाना सुबह-शाम पानी के साथ लेने से मधुमेह में बहुत आराम मिलता है।

अस्थमा में कफ को निकालने और कब्ज दूर करने के लिए अमलतास के फलों का गूदा 2 ग्राम पानी में घोलकर गुनगुना सेवन करना चाहिए।

5-10 ग्राम अमलतास की गिरी को पानी में घोलकर उसमें तिगुना बूरा डालकर गाढ़ी चाशनी बनाकर चटाने से सूखी खांसी मिटती है। 10 ग्राम अमलतास के फूल तथा 20 ग्राम गुलकंद को मिलाकर खाने से सीने में जमा हुआ कफ निकल जाता है और खांसी में बहुत लाभ मिलता है।

अमलतास के फल की गिरी को धनिया के साथ पीस लें, इसमें थोड़ा कत्था मिलाकर चूसने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।

अमलतास के फल की मज्जा, पिप्पली की जड़, हरीतकी, कुटकी एवं मोथा को बराबर मात्रा में लेकर बनाया हुआ काढ़ा पीने से पाचनतंत्र संबंधी विकार ठीक होते हैं, भूख बढ़ती है।

अमलतास के फल के गूदे में थोड़ी मात्रा में गन्ना या भूमि कूष्मांड या आंवले का रस मिलाकर दिन में दो बार पीने से पीलिया रोग में लाभ होता है।

15 ग्राम अमलतास के फल के गूदे को 100 मिली पानी में उबालें जब पानी 25 मि.ली. शेष रह जाए तो उसमें गाय का घी मिलाकर पिलाने से अण्डकोष (हाइड्रोसील) के बढ़ने की परेशानी में लाभ होता है।

अमलतास के पत्ते के रस को पिलाने से चेहरे के लकवे की बीमारी ठीक हो जाती है।

पैरों की एडियों के फटने की शिकायत में अमलतास के पत्तों का पेस्ट बनाकर एडियों पर लगाने से लाभ होता है।

अमलतास के पेड़ के फल और छाल एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भरपूर होते हैं। इसलिए इसके सेवन से प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने में मदद मिलती है।

यदि नियमित रूप से अमलतास की 12 से 24 ग्राम पत्तियों को घी में तलकर दिन में दो बार सेवन किया जाता है तो यह गठिया का उपचार कर सकता है। अमलतास के 10-15 पत्तों को गर्म करके उनकी पट्टी बांधने से गठिया में फायदा होता है।

गंजेपन की समस्या को दूर करने के लिए बकरी के दूध और अमलतास की पत्तियों की राख को मिलाकर अपने सिर में लगाएं। यह सिर के बाल, भौंहें, और दाढ़ी के बालों के लिए बहुत ही उपयोगी और प्रभावी होता है।

#### अमलतास से नुकसान :

अमलतास का अधिक मात्रा में सेवन करने से मतली, चक्कर आदि की परेशानी हो सकती है।

यदि आप किसी विशेष प्रकार की दवाओं का सेवन कर रहे हैं, तो अमलतास का उपयोग करने से पहले अपने स्वास्थ्य सलाहकार से सलाह लें।

गर्भावस्था के दौरान अमलतास का उपयोग करने से बचना चाहिए, यह गर्भपात का कारण बन सकता है।



अनिता भोवे

यूनियन धारा, कें.का. मुंबई

**जि**स दिन जन्म हुआ उस दिन घर में पिताजी गौरांग की लीला कर रहे थे. उनकी अपनी मंडली थी, जिसे 'गौरांग मंडली' कहकर लोग पुकारते थे. कोलकाता से जब कानपुर आए तो देवासिंह पार्क में रामलीला, रासलीला एवं दुर्गा पूजा में देखे गए नाटक व जात्रा का प्रभाव धीरे-धीरे मुझ पर पड़ने लगा. रामलीला और रासलीला (जे. के. मंदिर) देखकर मेरे 'राम लीला' मित्र, आदर्श कुमार गुप्ता के साथ उसके बहुत बड़े से मकान में हम तीर-धनुष, मुकुट बनाकर खेला करते थे.

बंगला नाटकों एवं जात्रा के प्रभाव का असर घर रिश्तेदारों के बीच करता था.

'सोल्यूशन एक्स' पहला मंच नाटक था, जिसे मनोज कुमार की 'गुमनाम' फिल्म की तर्ज पर मित्रों ने आपस में मिलकर लिखा था. तब तक स्क्रिप्ट नाम की भी कोई चीज होती है, मालूम नहीं था.

दूसरे वर्ष 'प्रगति' संस्था बनाकर 'बी.ए. माइनस बोज' व 'सन 2050' का मंचन श्री नरेंद्र कुमार मिश्रा जी की देखरेख में किया, इसी बीच रामकृष्ण मिशन में प्रधानाचार्य, श्री पातीराम भट्ट द्वारा लिखित 'नंदकुमार को फांसी' में अभिनय का मौका मिला.

भारतेंदु नाट्य केंद्र, लखनऊ और दर्पण, कानपुर द्वारा आयोजित सघन नाट्य कार्यशाला, प्रो. सत्यमूर्ति के निर्देशन में, श्री एम.के. रैना जी के निर्देशन में आयोजित हुई, जिसमें पद्मश्री राज बिसारिया, बलराज पंडित एवं के. एन. कक्कड़ जी से रंगकर्म के सूत्र मिले. पहला हिंदी नाटक 'एक कंठ विष पायी' श्री एम.के. रैना के निर्देशन में बाल निकुंज के खुले प्रांगण में हुआ. उसके बाद तीन दिन तक मैं बुखार में तपता रहा और रंगकर्म का यह बुखार मेरे पूरे जीवन के लिए प्रारंभ हो गया. अब शुरू हुई रंगकर्म की खोज. रैना जी सुबह 'दर्पण' के साथ गिरीश कर्नाड जी की प्रसिद्ध कृति 'यायाति' कर रहे थे, जिसमें दर्पण के वरिष्ठ रंगकर्मी अभिनय

कर रहे थे. मैं वहाँ चुपचाप रिहर्सल देखता और रिहर्सल के बाद रैना जी के पीछे-पीछे आर्य नगर चौराहे तक जाता.

आर्य नगर चौराहा, इसे चौराहा नहीं कहना चाहिए, यह तो छह राहा था. जहां हर राह आपको मंजिल पर ले जाती है. एक गली भी थी, जो मेरे मकान की तरफ जाती थी. इन छह राहों को, मुझे लगता है, अब आर्य नगर मंडी हाउस के नाम से पुकारा जाना चाहिए.

आर्य नगर के इस मंडी हाउस में हर रास्ते में उन दिनों कानपुर के रंगकर्मियों का जमावड़ा होता था. प्रो. सत्यमूर्ति जी सबके केंद्र में रहते थे. प्रायः कानपुर के सभी रंग दलों की राजनीति का केंद्र होता था, यह चौराहा. हम जैसे युवा हो रहे दो - तीन रंगकर्मी इन सबकी बातों को सुनते, समझते रहते थे. धीरे धीरे रंग संस्कार के बेड़े मजबूत हो रहे थे.

उन्हीं दिनों बंसी कौल जी लखनऊ दर्पण के साथ 'आला अफसर' नाटक, नौटंकी शैली में कर रहे थे. उसका एक मंचन कानपुर मोती झील स्थित प्रेक्षागृह में भी हुआ. पहली बार मुद्राराक्षस जी को मंच पर अभिनय करते देखा. इसके बाद 'दर्पण', लखनऊ की ओर से उर्मिल जी के निर्देशन में बादल सरकार कृत 'अबू हसन' को नौटंकी शैली में देखा.

इसी बीच शहर में पंजाबी लोगों ने बैसाख के अवसर पर 'हीर रांझा' नाटक देवा सिंह पार्क में करवाया.

बंगला ट्रेडिशनल नाटक, जात्रा, नौटंकी का धीरे-धीरे प्रभाव पड़ने लगा. आधुनिक नाटक - 'चार यारों का यार', 'नटसप्राट' जैसे नाटक भी मर्चेन्ट चेंबर हॉल में देखने जाने लगे.

इसी बीच बंसी कौल जी के निर्देशन में 'प्रजा ही रहने दो' नाटक पर लखनऊ रविंद्रालय के मंच पर मंचित करके 'दर्पण', लखनऊ के साथियों से परिचय हुआ. लखनऊ अब आना जाना शुरू हो गया. 'दर्पण' के एक से एक प्रोसीनियम नाटक, जिसमें डॉ. अनिल रस्तोगी और समाचार वाचिका के नाटकों

को देख प्रोसीनियम रंगमंच का प्रभाव भी पड़ने लगा.

मेरे घर के बगल में शंभू मित्रा (संगीतकार) का घर था जो हिलियन्स ग्रुप चलाते थे. उत्तरप्रदेश में इसकी लोकप्रियता अपने चरम पर थी. सारे लोग नौकरी छोड़ पूर्णकालिक हो गए. उन्हीं लोगों में मेरा भाई परिमल, राजेंद्र सिंह के निर्देशन में अभिनय करता था और हिलियन्स के सांगीतिक नाटकों में भी 'माउस टैप', 'वेट अंटील डाउन' और राबिन दास का 'सखाराम बाइंडर' मेरे दिलोदिमाग पर छाने लगे.

इन्हीं दिनों पुनः एम. के. रैना जी कानपुर में हिलियन्स के साथ 'पैसा फेंक तमाशा देख' ब्रेख्त का नाटक करने आ गए. मैं चुपचाप रिहर्सल देखता था. कानपुर की गुलाब बाई की बेटी मधु अग्रवाल भी इसमें अभिनय कर रही थी.

इसी समय 'दर्पण' कानपुर ने नौटंकी शैली में 'कथा नंदन की' शुरू कर दिया. दर्पण के साथ जुड़े होने के कारण 'एक और द्रोणाचार्य' में एकलव्य की भूमिका मिली. रवि शर्मा और त्रिपुरारी शर्मा इसी समय 'पोस्टर' करने आ गए और हम इसमें भी शामिल हो गए.

'दर्पण', कानपुर ज़्यादातर उस समय नौटंकी शैली में नाटक करते थे, जिसका प्रभाव मन पर पड़ा लेकिन उसके लिए विधिवत गायकी, रियाज चाहिए. राकेश वर्मा जी का गायन अद्भुत था. उनकी बुलंद आवाज आज भी कानों में गूँजती है.

1978 में जब नौकरी के सिलसिले में आजमगढ़ जाना पड़ा और अपनी रंग संस्था 'समानांतर' बनानी पड़ी, तब उस समय देखे गए फिल्मों का बहुत प्रभाव था. 'अंकुर', 'मंथन' जैसे नामों ने हमें समानांतर फिल्मों से जोड़ा और पहली बार लगा कि अब तक जो नाटक कर रहे थे उसमें राजा, महाराजा और बड़े लोगों की ही बातें की जा रही थी. हमारे नाटकों में आम आदमी, हमारा जन गायब है.

इसलिए 'समानांतर' की पहली प्रस्तुति रमेश बक्शी कृत 'रामबाण' थी जिसमें आम आदमी का दर्द था. शुरू में जिन गुरुओं से सीखा था उनका सीधा प्रभाव हमारे काम पर भी दिख रहा था. इसी कारण 'एक और द्रोणाचार्य', 'पोस्टर' जैसे नाटकों का मंचन किया गया.

लेकिन दूसरी प्रस्तुति 'जुलूस' ने कुछ नया करने की प्रेरणा दी. आजमगढ़ जैसे साधन विहीन शहर में बार-बार कानपुर और वाराणसी से श्री पीर गुलाम एवं मिश्र बंधुओं को कब तक बुलाता?

बादल सरकार के सात दिनों के तीसरे रंगमंच ने हमारी आंखें खोली और रंगमंच कहीं भी हो सकता है और कम खर्च में हो सकता है, इन सिद्धान्त को जाना.

'मोमा' नाटक की अपार सफलता ने न केवल मुझे बंबई जैसे शहर में पहचान दिलाई वरन पहली बार प्रथम पुरस्कार एवं सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार श्री ए.के. हंगल जी के हाथों दिलवाया. 'मोमा' से ही राष्ट्रीय नाट्य समारोह में जाने की शुरुआत हुई.

शशांक बहुगुणा उन दिनों विजय सोनी और गोटोवरकी की शिक्षा से प्रेरित होकर

मनोशारीरिक रंगमंच कर रहे थे, जिसमें सिर्फ शरीर बोलता है. इसका प्रभाव यह हुआ कि लखनऊ के मित्र दोस्त बन गए और तीसरे रंगमंच और मनो शारीरिक रंगमंच का प्रभाव हमारे काम पर पड़ने लगा.

हावर्ड फास्ट का बादल सरकार कृत नाटक 'स्पाट किस' तीसरे रंगमंच और मनो शारीरिक रंगमंच का ही परिणाम था. अब मैं पूर्णतः तीसरे रंगमंच और मनो शारीरिक रंगमंच में ही अपनी प्रस्तुतियों को कम खर्च में करने लगा. श्री बादल सरकार मेरे गुरु होते चले गए. कोलकाता जा जाकर उनके कामों को देखकर एक नई रंगभाषा का जन्म मेरे अंदर होने लगा.

'घेरा' नाटक की इलाहाबाद विश्वविद्यालय के केन्द्रीय सांस्कृतिक समिति की प्रस्तुति ने मुझे इलाहाबाद में प्रतिष्ठित कर दिया और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, आजमगढ़ से लखनऊ ऑडिट सेल में स्थानांतरण के बाद भी मैंने इलाहाबाद को अपनी कर्म स्थली चुना और म्यूचुअल ट्रान्सफर लेकर 4 जनवरी 1984 को इलाहाबाद मुख्य शाखा आ गया.

'समानांतर' अब 'समानांतर इंटीमेट थियेटर' हो चुका था. प्रस्तुतियाँ एरिना स्टाइल में

नार्दन रेलवे इंस्टीट्यूट हॉल में होने लगी, जिसका मात्र दो रुपए टिकट रखा जाता था.

इंटीमेट थियेटर, आल्टर्नेटिव थियेटर, एक्सपेरिमेंटल थियेटर में अपने को एक्सप्लोर करने लगा. कई नाटक लिखे, कई उपन्यासों का मंचन किया. साथ ही उस समय कहानी का, रंगमंच पर प्रभाव भी धीरे धीरे होने लगा. श्री देवेन्द्र राज अंकुर, तीसरे रंगमंच को एक्सप्लोर कर कहानी का रंगमंच कर रहे थे.

अब तीसरा रंगमंच और कहानी के रंगमंच को मिलाकर एक नया रंग कर्म 'जनता का रंगमंच' मेरी प्राथमिकता बन गया, जो जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता के बीच होने लगा. आज 'समानांतर' अपने 42 वें वर्ष में समानांतर, समानांतर सेंटर फॉर आर्ट एंड कल्चर के साथ अग्रसर हो रहा है. बादल नाट्य अकादमी की ओर जहां इस तरह के कार्य करने वालों को प्रशिक्षण दिया जाएगा, कुछ उनसे सीखा जाएगा और कुछ उन्हें सिखाया भी जाएगा.

अनिल रंजन भौमिक  
सेवानिवृत्त, प्रयागराज



## UNION BANK RETIREES' WELFARE ASSOCIATION



The 6th Triennial Conference of UNION BANK RETIREES' WELFARE ASSOCIATION was held on 15.02.2020 at Amar Hind Mandal, Dadar (W), Mumbai. The Conference was attended by more than 400 retired members of all cadres of Union Bank residing in Mumbai, Navi Mumbai, Thane, Nagpur and Pune districts. Distinguished guests Shri. B. Samal, retired GM, Union Bank and ex-CMD, Allahabad Bank; Shri. S. M. Deshpande, President, All India Bank Retirees' Federation and Shri. D. S. Tripathi, retired GM, Union Bank and MD & CEO, Aadhar Housing Finance Limited graced the occasion. The Conference also acknowledged the contribution of Com. D. A. Masdekar, Chairman of the Association for establishing and building the movement of Bank Retirees in Union Bank. The Citation was presented to him by Shri B. Samal, Ex-CMD, Allahabad Bank



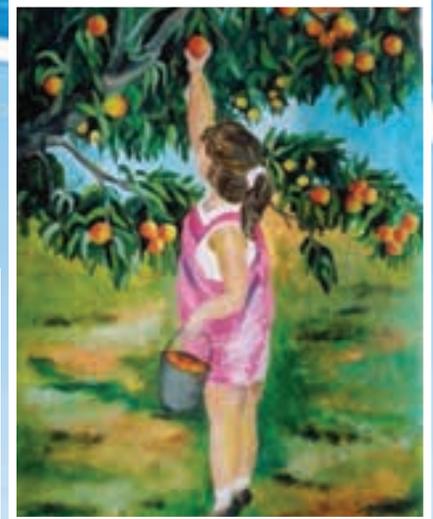
Ms. Aiswarya Radhakrishnan

## The Banker With Elegant Strokes

Friends, scribbling is our birthright. Everyone, from a toddler to a grandpa, tends to scribble even on a small piece of paper in our free time or sometimes even while attending phone calls. Though these scribbled criss-cross lines do not make any sense to us, creating a master piece out of these lines and then adorning it with shades of colours is really the master's job – an artist or a painter. Those who take special pain to recognise and develop their inbuilt or latent artistic talent, carve out a niche for themselves. Indeed, lines and colours are spectacular in our speckled existence. Let me introduce you to one such colleague who is bitten by the art bug. Yes, she is **Ms. AISWARYA RADHAKRISHNAN**. Having joined our Bank in 2014 as P.O., she is now Deputy Branch Head of Vadanappally Branch in Kozhikode region. A native of Thrissur, Kerala, Aiswarya is an Engineering graduate in Electronics and Communication from Government Engineering College, Idukki. She likes to spend her valuable time with her family and her cute pet. In this short dialogue with Mrs. Supriya Nadkarni, she portrays her journey with colours.

\*\*\*\*\*

□ Is it your childhood hobby? Is it hereditary? How did you get involved in it?



Yes. I had an ardent interest in drawing since childhood. Also Arts was one of my subjects in high school and higher secondary level. Though it is not hereditary, but it surely has taken root during my childhood. My eldest brother, though a Civil Engineer by profession, is also a talented artist. I love painting and it is my passion. It's a god's gift but I could develop it with the support of my family, especially my father.

□ How does it restart now?

Yes, I am very passionate about caricature and drawing since school days. But once again the academic career overpowered my hobby and it was left behind to pursue a career in engineering. After schooling, there was a full stop for this hobby for years together. But this old painting bug once again came to the fore. Thanks to these lockdown days which instigated my old memories and I used these harder days fruitfully to rediscover my painting hobby.

□ What is a caricature?

A caricature is a rendered image showing the features of its subject in a simplified or exaggerated way through sketching, pencil strokes, or through other artistic

drawings. In simple terms, it's a portrait or drawing of a person that exaggerates the way they look, usually to create a humorous effect, or a political statement. Caricature took a road to its first successes in the closed aristocratic circles of France and Italy, where such portraits were passed about for mutual enjoyment. There have been some efforts to produce caricatures automatically or semi-automatically using computer graphics techniques. This requires quite different skill sets i.e. advanced knowledge of the program's functionality to design a caricature as compared to the one created on paper manually.

□ How does the skill get transformed on the canvas?

It depends upon the mood. Sometimes when I see a picture or photograph, I feel like transforming it on to canvas and what depicts on the canvas is my version of that picture or photo. I do not limit myself to a particular theme or subject.

□ Generally do you visit painting exhibitions? How do you feel?

Yes, I do visit painting exhibitions. It gives me more ideas and spurs my creativity.

- ❑ Have you received any awards?

I used to get prizes in school, college and University level competitions for painting and pencil drawing.

- ❑ To what do you attribute your success?

Definitely to my father who was always my strength and encouragement.

- ❑ Brief us about the different types of paintings.

There are so many mediums for painting such as water colour, acrylic, oil paint, etc. Mainly I do work in acrylic painting and oil painting.

- ❑ What about your water-colour painting attempts?

Initially I used to do water colour painting. It is the easiest and simplest medium to handle. But nowadays I am more inclined to oil painting and acrylic painting. It gives more life to my art.

- ❑ Do computer based paintings have a similar impact on the viewer as that of the traditional painting?

Graphical paintings may look similar to traditional painting for viewers. But the impact it creates on the viewer varies according to the perspective of each one.

- ❑ Are there any varieties based on the material used? What type of material do you use?

Yes, there are various types of paper used for drawing like canvas, handmade paper, graphite paper, etc. Also, there are different sizes of brushes. I generally use canvas for paintings.

- ❑ How do you bring liveliness in your work?

I put my heart and soul to my paintings so that I can bring out the maximum in me. It brings colours and life to my paintings. Most of my pictures are very colourful. I use almost all available colours in my works.

- ❑ How do you preserve your work? How much does it cost?

I frame my paintings and preserve it. The cost of framing a work is a little bit high. It varies according to size of the paintings, design of the frame chosen, its quality, etc.

- ❑ Give us your views on 'Modern art'?

Anything and everything can be classified under modern art. There is no specific topic for that.

- ❑ Who are your idols or inspiration?

My favorite artist is Shri Raja Ravi Varma – the genius in oil paintings.

- ❑ How do you dedicate your time for this hobby from your busy, hectic schedule?

I hardly get time for my passion. I can do only 1 or 2 paintings in a year by stealing some time from my routine. But during lockdown days, I could refresh my skill and do more paintings.

- ❑ Any particular unforgettable incidence associated with your art?

As a tribute to the great artist, Vincent van Gogh, the artists around the world made a small attempt to create the World Guinness Record. The program was named 'Starry night in my city'. It was based on Vincent van Gogh's famous painting 'The Starry night'. Artists around the world had to create a painting of



their city under Starry night. I was fortunate and very glad to be a part of that program.

- ❑ Any message for budding art lovers?

Follow your passion and keep it alive. Convert whatever comes into your mind on to your canvass. This is the only way to keep your inner self happy.

- ❑ Tell us about your dancing.

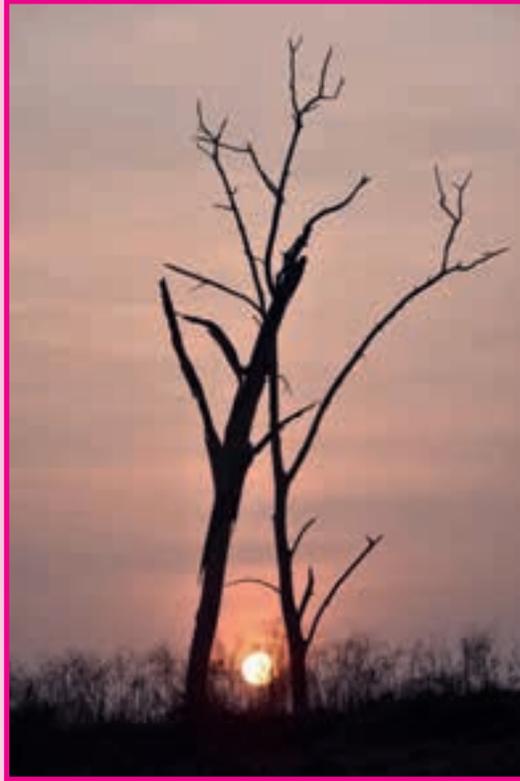
Dancing is another passion. I never miss any chance to prove my dancing skill. Our esteemed Bank has given me various opportunities to prove my skills. I'm very thankful to my organization for giving me such opportunities. I have participated in various competitions conducted in the Bank and won prizes too.

**'Union Dhara' wishes her all the success in her future painting endeavors!**

**Supriya Nadkarni**

Union Dhara, C.O.





### शीर्षक दें / 'Coin a Caption'

साथियों, Friends,

**क्या** यह तस्वीर आपको कल्पना की उड़ान भरने या अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित कर रही है? तो फिर इंतजार कैसा? फौरन अपने की-बोर्ड पर उंगलियाँ चलाना शुरू करें और हमें 'uniondhara@unionbankofindia.com' या 'sulabhakore@unionbankofindia.com' पर इस तस्वीर से संबंधित सिर्फ एक या दो पंक्तियों में बढ़िया-सा शीर्षक लिखकर ई-मेल करें. आप अपनी प्रविष्टि 'संपादक, यूनियन धारा, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, यूनियन बैंक भवन, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई-400 021' इस पते पर भी प्रेषित कर सकते हैं. आपका यह प्रयास आपको पुरस्कार दिला सकता है. शीर्षक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजा जा सकता है. दोनों ही श्रेणियों के लिए अलग-अलग पुरस्कार रखे गए हैं. कृपया नोट करें कि यह प्रतियोगिता सिर्फ बैंक के सेवारत कार्मिकों के लिए ही है.

यदि आपका शीर्षक हमारे स्तर पर चुना जाता है, तब आपको पुरस्कार के साथ-साथ यूनियन धारा में प्रकाशित होने का मौका भी मिलेगा.

जल्दी करें, प्रविष्टियां प्राप्त करने की अंतिम तिथि है, 20 अगस्त, 2020.

संपादक

(फोटो प्रस्तुति : उपासना सिरसैया,  
क्षे.का., भोपाल)

**D**oes this photograph fire your imagination or spontaneously inspire to express your feelings? Then what are you waiting for? Start keying in and e-mail us your superb, classy caption, only in one or two lines, related to this photograph at 'uniondhara@unionbankofindia.com' OR 'sulabhakore@unionbankofindia.com'. You can also send your entries to 'Editor, Union Dhara, Union Bank of India, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai – 400 021'. Caption can be sent in English or Hindi. Both the categories have different prizes. Please note that this contest is open only for the present staff members of the Bank.

If your caption is chosen, then you will be awarded a prize and your caption will be published in 'Union Dhara'.

Hurry up, the last date to receive the entries is 20.08.2020.

Editor



# Merger of PSBs - aspects

## Bank Merger

A merger is simply the combining of two business entities to form a larger one but with no explicit change in ownership. This is in contrast to an acquisition where one business entity takes ownership control over another by paying for the ownership privilege in cash, stock or other means.

In the case of state-owned banks that are merged now, where the government is the majority shareholder, there will be no change in ownership but merely a restructuring of how these banks are organized.

### Committees in this regard:

1. Narasimham committee (1991 and 1998) suggested merger of strong banks both in public sector and even with the developmental financial institutions and NBFCs.
2. Khan committee in 1997 stressed the need for harmonization of roles of commercial banks and the financial institutions.
3. Verma committee pointed out that consolidation will lead to pooling of strengths and lead to overall reduction in cost of operations.

### New mergers include:

1. Punjab National Bank, Oriental Bank of Commerce and United Bank of India will combine to form the nation's second-largest lender.
2. Canara Bank and Syndicate Bank will merge.

3. Union Bank of India will amalgamate with Andhra Bank and Corporation Bank.
4. Indian Bank will merge with Allahabad Bank.

### Why merger is good? – Benefits for various stakeholders:

#### For Banks:

1. Small banks can gear up to international standards with innovative products and services with the accepted level of efficiency.
2. PSBs, which are geographically concentrated, can expand their coverage beyond their outreach.
3. A better and optimum size of the organization would help PSBs offer more and more products and services and help in integrated growth of the sector.
4. Consolidation also helps in improving the professional standards.
5. This will also end the unhealthy and intense competition going on even among public sector banks as of now.
6. In the global market, the Indian banks will gain greater recognition and higher rating.
7. The volume of inter-bank transactions will come down, resulting in saving of considerable time in clearing and reconciliation of accounts.
8. This will also reduce unnecessary interference by board members in day to day affairs of the banks.

9. After mergers, bargaining strength of bank staff will become more and visible.
10. Bank staff may look forward to better wages and service conditions in future.
11. The wide disparities between the staff of various banks in their service conditions and monetary benefits will narrow down.
12. It is also of the view that the merger will lead to increased operational efficiency that will help these banks lower their costs, thus enabling them to lower their lending rates

#### For economy:

1. Reduction in the cost of doing business.
2. Technical inefficiency reduces.
3. The size of each business entity after merger is expected to add strength to the Indian Banking System in general and Public Sector Banks in particular.
4. After merger, Indian Banks can manage their liquidity – short term as well as long term – position comfortably.
5. Synergy of operations and scale of economy in the new entity will result in savings and higher profits.
6. Customers will have access to fewer banks offering them wider range of products at a lower cost.
7. Mergers can diversify risk management.
8. One of them is that large banks will be able to lend more money

and help revive the slowing economy

#### **For government:**

1. The burden on the central government to recapitalize the public sector banks again and again will come down substantially.
2. This will also help in meeting more stringent norms under BASEL III, especially capital adequacy ratio.
3. From regulatory perspective, monitoring and control of less number of banks will be easier after mergers
4. Government also believes that increased credit growth is essential in order to achieve its target of growing India into a \$5-trillion economy in the next few years.
5. For over decades starting from 1992, the government as the biggest shareholder of over 25 banks had to provide capital for them.
6. To grow and lend more, the banks often need a higher amount of capital to set aside also for loans that could go bad.
7. With the government not willing to lower its equity holdings and with a large slice of the capital being set aside to cover for bad loans, the burden of infusing capital rests on the majority shareholder.
8. This means marking a large amount of money almost every year during the last few years in the Budget for capital infusion at many banks at a time when there is a huge demand for social sector.
9. By reducing the number of banks to a manageable count, the government hopes that the demands for such capital infusion will be lower progressively with

increased efficiencies and with more well capitalized banks.

10. It will also help that the government can focus now on fewer banks than in the past.

#### **Critical opinion on merger**

The merging of healthy banks with weak banks may not really improve the health of the banking system as a whole.

In fact, many believe, by diluting the management of strong banks, forced mergers may lead to a significant deterioration in the overall health of the banking system.

Last but not least, if the managers of efficient banks are punished for their good performance by being asked to share the burden of weaker banks, many fear that there will be fewer incentives for managers to manage well.

This can further negatively affect the long-term performance of state-owned banks.

#### **More thrust is on RBI**

The RBI keeps monitoring large institutions whose potential failure can impact other institutions or banks and the financial sector, and which could have a contagion effect and erode confidence in other banks.

A case in point is the recent instance of IL&FS Group, which defaulted on repayments hitting many lenders and investors.

The creation of more large-sized banks will mean the RBI will have to improve its supervisory and monitoring processes to address increased risks.

#### **Concerns associated with merger:**

1. Problems to adjust top leadership in institutions and the unions.
2. Mergers will result in shifting/closure of many ATMs, Branches and controlling offices, as it is not prudent and economical to keep so many banks concentrated in

several pockets, notably in urban and metropolitan centers.

3. Mergers will result in immediate job losses on account of large number of people taking VRS on one side and slow down or stoppage of further recruitment on the other. This will worsen the unemployment situation further and may create Gen X, Gen Y gap.
4. Mergers will result in clash of different organizational cultures. Conflicts will arise in the area of systems and processes too.
5. When a big bank books huge loss or crumbles, there will be a big jolt in the entire banking industry. Its repercussions will be felt everywhere.

#### **Conclusion :**

The finance minister has quoted that the proposed big banks would be able to compete globally and improve their operational efficiency once they lower their cost of lending and improve lending. But none of India's banks including the largest, SBI, figures in the list of the top 50 global banks. So that may be a long way away.

While the announced consolidation of PSU banks is a credit positive as it enables the consolidated entities to meaningfully improve scale of operations and help their competitive position. At the same time, there will not be any immediate improvement in their credit metrics as all of them have relatively weak solvency profiles.

#### **Way ahead:**

Merger is a good idea. However, this should be carried out with right banks for the right reasons. Merger is also tricky given the huge challenges banks face, including the bad loan problem that has plunged many public sector banks in an unprecedented crisis.

**G. Priyadarsini**

Pithapuram Colony Branch,  
Vishakhapatnam, E-Andhra





## पुरस्कार और सम्मान



Our Bank received the prestigious IBA Award 2020 for the 'Best IT Risk Management & Cyber Security Initiatives' as Winner in the category of Large Banks. The award was received by Shri Raj Kiran Rai G., our MD & CEO during IBA's 15th Annual Banking Technology Conference, Expo & Awards 2020 held on 06.02. 2020 in Mumbai. Our Bank also received the Best Digital Financial Inclusion Initiatives in the category of Large Banks. It was consecutively for the 5th time when we have been honoured with this pride.



'पब्लिक रिलेशन्स काउंसिल ऑफ इंडिया (पीआरसीआई), बेंगलूरु द्वारा आयोजित 'पीआरसीआई एक्सलेन्स अवार्ड्स 2020' में 'यूनियन सृजन' ने रजत पुरस्कार तथा 'यूनियन धारा' ने ब्रॉन्ज पुरस्कार प्राप्त किया. दि. 07 मार्च, 2020 को 'ज्ञान ज्योति ऑडिटोरियम, बेंगलूरु' में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में श्री बी. श्रीनिवास राव, क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु और डॉ. सुलभा कोरे, संपादक - यूनियन धारा एवं यूनियन सृजन ने बैंक की ओर से पुरस्कार ग्रहण किये.



Bank received the Finnoviti Award for innovation in Cyber Security for creating of 'Cyber Defence Center' – a convergence of state-of-the art technology on defence-in-depth security, during the Finnoviti Conference & Awards ceremony held on 10th February, 2020 at Mumbai. The award was received by Shri Anil Kuril, CISO.



क्षेत्रीय संयंत्र संसाधन केंद्र द्वारा आयोजित वार्षिक उद्यान प्रतियोगिता 2019-20 के लिए भुवनेश्वर को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा साथ ही लगातार चार वर्षों से उद्यान प्रतियोगिता में प्रथम विजेता होने हेतु पद्म चरण मेमोरियल रनिंग ट्रॉफी से भी केंद्र को सम्मानित किया गया.

Our Bank celebrated the International Women's Day with gaiety and fervour at a glittering function held in Mumbai. On this occasion, Shri Rajkiran Rai G, our MD & CEO, extended warm welcome to the Chief Guest, Ms. P.V. Bharathi, MD & CEO, Corporation Bank. During the function, our Bank felicitated Women Achievers who excelled in their professions, namely Padmashri Dr. Indira Hinduja, the Renowned Gynecologist & Infertility Specialist; Ms. Swati Mayekar, Chartered Accountant & Social Worker Par Excellence and Ms. Neeraja, the Eminent Writer & Poetess. Our Bank also launched the bimonthly in-house magazine of the Bank 'Union Agarsar' – the special issue totally dedicated to women, in the presence of all the dignitaries.



Seen in the photograph are Shri Rajkiran Rai G, MD & CEO, Union Bank of India; Ms. P. V. Bharathi, MD & CEO, Corporation Bank along with Padmashri Dr. Indira Hinduja, Renowned Gynecologist & Infertility Specialist; Ms. Swati Mayekar, Chartered Accountant & Social Worker Par Excellence and Ms. Neeraja, Eminent Writer & Poetess.



Shri Rajkiran Rai G, our MD & CEO, flanked by Shri Gopal Singh Gusain & Shri Manas Ranjan Biswal, our Executive Directors at the press conference held in Mumbai on the occasion of announcement of Q-3 Financial Results for the Quarter ended 31.12.2019.



Shri Rajkiran Rai G, our MD & CEO, launched the audio learning initiative 'Union Radio' on 7th March 2020 in presence of the Executive Directors and Corporate General Managers. 'Union Radio' will be made available on our bank's E-learning portal UNION PRAJNA & Mobile App in the form of Audio Bite of 3-5 minutes at 6.30 PM (on all working days).



दि. 26.01.2020 को 71 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर कें.का.मुंबई के प्रांगण में ध्वजारोहण किया गया. इस अवसर पर श्री राजकिरण रै जी. (प्रबंध निदेशक एवं सीईओ) श्रीमती सत्यवति रै जी.; श्री गोपाल सिंह गुसाई (कार्यपालक निदेशक) श्रीमती सरिता गुसाई; श्री ब्रजेश्वर शर्मा (महाप्रबंधक) श्रीमती संगीता शर्मा; ब्रिगेडियर आशुतोष सीरौठिया(सीएसओ) श्रीमती अपर्णा सीरौठिया; श्री संजय कुमार (मुख्य प्रबंधक) श्रीमती अमिता कुमार की विशेष उपस्थित रही. साथ में केंद्रीय कार्यालय, सुरक्षा विभाग टीम.



दि. 19.02.2020 को क्षेत्र महाप्रबंधक, भोपाल. श्री विनायक व्ही. टेम्भूर्णे एवं क्षे. प्र., जबलपुर श्री अरुण कुमार द्वारा जबलपुर शहर की शाखाओं की समीक्षा की गई.



दि. 04.01.2020 को क्षे.का., प्रयागराज द्वारा बैंक के शताब्दी वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में होटल ग्रैंड कॉन्टिनेन्टल में स्टाफ सदस्यों एवं उनके परिवार सदस्यों हेतु सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका 'यूनियन प्रयाग' का विमोचन किया गया तथा 93.5 रेडियो एफएम के माध्यम से गरीब एवं जरूरत मंद लोगों के लिए सर्दियों के कपड़े दान किए गए. इस कार्यक्रम में कलाकारों द्वारा विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम नाटक, नृत्य, गाने की प्रस्तुति दी गई.



श्री विनायक व्ही. टेम्भूर्णे, क्षेत्र महाप्रबंधक, भोपाल को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, मध्य प्रदेश द्वारा 'हिन्दी सेवी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया. इस उपलक्ष्य में विश्व हिन्दी दिवस एवं कारोबार समीक्षा बैठक के अवसर पर इंदौर क्षेत्र की ओर से, दि. 14.01.2020 को उनका सत्कार, श्री मनोज कुमार, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर द्वारा किया गया.



बैंक के कार्यपालक निदेशक, श्री दिनेश कुमार गर्ग के दो दिवसीय भोपाल यात्रा के दौरान ग्राहक संगोष्ठी का आयोजन किया गया. ग्रीन भोपाल की तर्ज को महत्ता देते हुए निदेशक महोदय द्वारा यूनियन बैंक भवन प्रांगण में वृक्षारोपण भी किया गया.



दि.02.02.2020 को क्षे.का.,जबलपुर द्वारा क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्र की 4 टीमों ने भाग लिया जिसमें से जबलपुर के बाहर की शाखाओं की टीम विजेता रही. श्री अरुण कुमार, क्षेत्र प्रमुख विजेता टीम को शील्ड देते हुए.



COVID 19 महामारी के प्रकोप के समय में बहुत सी स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा जरूरतमंद लोगों को उनकी जरूरत का सामान उपलब्ध कराकर उनकी मदद की जा रही है. इसी दिशा में क्षे.का., प्रयागराज के अधीन अग्रणी जिला संत रविदास नगर, भदोही के ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, ज्ञानपुर के प्रशिक्षार्थियों द्वारा, मार्च माह में खादी के होम मेड मास्क बनाकर मुफ्त में सभी लोगों में वितरित किए जा रहे हैं.



26 जनवरी गणतन्त्र दिवस पर क्षे.का., जबलपुर द्वारा ध्वजा रोहण किया गया. इसके पश्चात बैडमिंटन टूर्नामेंट भी करवाया गया.



दि. 16, 22 एवं 23 फरवरी को नराकास जबलपुर द्वारा क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया. जिसमें 13 बैंकों ने भाग लिया. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया टूर्नामेंट में तीसरे स्थान पर रहा.



दि. 19.02.2020 को क्षे.म.प्र., भोपाल श्री विनायक व्ही. टेम्भूर्णे एवं क्षेत्र प्रमुख जबलपुर, श्री अरुण कुमार द्वारा कटंगी शाखा के नए परिसर का उद्घाटन किया गया.



दि. 19.01.2020 को क्षे.का., इंदौर द्वारा प्रायोजित तथा फ्री प्रेस समाचार पत्र द्वारा स्कूल के बच्चों के लिए आयोजित एक चित्रकला प्रतियोगिता के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री मनोज कुमार, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर.



दि. 10.01.2020 से 21.02.2020 तक प्रयागराज में आयोजित माघ मेले के दौरान क्षे.का., प्रयागराज द्वारा श्रद्धालुओं के मार्गदर्शन एवं जानकारी उपलब्ध कराने हेतु तरह-तरह के बैनर लगाकर उनकी सहायता की गई. इस वर्ष लगभग 2 करोड़ लोग इस मेले में शामिल हुए.



दि. 26.01.2020 को 71वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर क्षे.का., रायपुर के प्रांगण में ध्वजा रोहण किया गया. इस उपलक्ष्य में रायपुर की ब्रांड एम्बेसडर एवं समाज सेवी, श्रीमती शुभांगी आपटे द्वारा पर्यावरण को स्वच्छ रखने एवं प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए सभी स्टाफ सदस्यों एवं उनके परिजनों को कपड़े के बैग दिये गए.



दि. 19.03.2020 को क्षे का इंदौर के अंतर्गत स्थित, बड़वाह शाखा द्वारा शाखा प्रमुख, विजेन्द्र सिंह के माध्यम से खंडवा जिले में स्थित ज्योतिर्लिंग ओंकारेश्वर मंदिर में श्रद्धालुओं हेतु वॉटर कूलर प्रदान किया गया. इस अवसर पर उपस्थित ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग के संचालक, श्री आतिश दीक्षित.

(पूर्व)



भुवनेश्वर क्षेत्र के अंतर्गत ऑल इंडिया यूनियन बैंक सांस्कृतिक एवं खेल क्लब द्वारा दि. 12.01.2020 को वार्षिक बैडमिंटन टूर्नामेंट आयोजित की गयी, जिसमें स्टा.प्र.के. से श्री पुष्कर कुमार सिन्हा, मुख्य प्रबंधक (संकाय) उप विजेता रहे.



दि. 26.01.2020 को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर क्षे.का., हावड़ा द्वारा सभी स्टाफ सदस्यों हेतु कार्यालय के परिसर में ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित किया गया.



71वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर स्टा.प्र.के. भुवनेश्वर के प्रांगण में केंद्र प्रमुख श्री दिवाकर लेंका द्वारा ध्वजारोहण किया गया.



हरित पहल अभियान के अंतर्गत स्टा.प्र.के., भुवनेश्वर के तीनों चैनल में चित्रकारी प्रतियोगिता आयोजित की गई.



दि. 25.02.2020 को संबलपुर क्षेत्र के अंतर्गत राउरकेला शाखा द्वारा आयोजित ग्राहक बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री प्रवीण शर्मा, अंचल प्रमुख, रांची; साथ में श्री सुशांत कुमार मिश्रा, क्षेत्र प्रमुख, संबलपुर; श्री पंकज कुमार, उप क्षेत्र प्रमुख, संबलपुर एवं श्री उमेश कुमार, शाखा प्रमुख, राउरकेला शाखा.



दि. 26.02.2020 को संबलपुर क्षेत्र के अंतर्गत प्रथम 24x7 ई-लॉबी का शुभारंभ करते हुए अंचल प्रमुख, श्री प्रवीण शर्मा; साथ हैं, श्री सुशांत कुमार मिश्रा, क्षेत्र प्रमुख, संबलपुर एवं श्री नरेन्द्र कुमार सिन्हा, शाखा प्रमुख.



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में क्षे.का., सिलीगुड़ी द्वारा दि. 17.03.2020 को कुल 16 महिला स्टाफ सदस्यों (कॉर्पोरेशन एवं आंध्रा बैंक के 3 स्टाफ सदस्यों के साथ) हेतु आयोजित विशेष एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला के दौरान उपस्थित, श्री हृषिकेश मिश्रा, क्षेत्र प्रमुख; श्रीमती सबीना संगमा, उप क्षेत्र प्रमुख के साथ मुख्य अतिथि श्रीमती रीता सेन गुप्ता, मुख्य, नॉर्थ बंगाल काउंसिल फॉर डिसेबल, सिलीगुड़ी एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमती मीरा भट्टाचार्य, प्राचार्य, टेक्नो इंडिया एज्युकेशन ग्रुप.



दि. 26.01.2020 को क्षे.म.प्र.का., रांची के प्रांगण में गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित ध्वजारोहण समारोह में अंचल प्रमुख, श्री प्रवीण शर्मा; क्षेत्र प्रमुख, श्री विपन सिंह एवं रांची स्थित कार्यालय एवं शाखाओं के स्टाफ सदस्य

### समाचार (पश्चिम)



देश के 71वें गणतन्त्र दिवस के अवसर पर दिनांक 26.01.2020 को क्षे.का., बड़ौदा के परिसर में गणतन्त्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया.



विदर्भ रीजन का त्रैवार्षिक सम्मेलन दि. 14.03.2020 को नागपुर में आयोजित किया गया. इस कार्यक्रम में सेवानिवृत्त उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ती श्री बी. जी. कोलसे पाटिल प्रमुख अतिथि तथा आल इंडिया यूनियन बैंक एस.सी/एस.टी एम्प्लाइज वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री डी. बी. जैसवार, महासचिव श्री बृजभूषण तथा क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर के सहायक महाप्रबंधक श्री अमरनाथ मिश्रा के साथ साथ श्री मिलिंद वासनिक, चेयरमैन रिसेप्शन कमीटी, यूनियन बैंक एस.सी/एस.टी एम्प्लाइज. यूनियन; नागपुर एससी/एसटी वेलफेयर एसोसिएशन के विदर्भ रीजन के अध्यक्ष श्री जी.एम वानखेड़े तथा महासचिव श्री राजेश मेश्राम उपस्थित थे.



दि. 25.02.2020 को संबलपुर क्षेत्र के अंतर्गत रियामाल शाखा द्वारा आयोजित वित्तीय साक्षरता एवं ऋण मेले की अध्यक्षता करते हुए श्री प्रवीण शर्मा, अंचल प्रमुख, रांची; साथ में हैं श्री सुशांत कुमार मिश्रा, क्षेत्र प्रमुख, संबलपुर; श्री पंकज कुमार, उप क्षेत्र प्रमुख, संबलपुर एवं श्री उमेश कुमार, शाखा प्रमुख, रियामाल शाखा.



दि. 10.02.2020 को क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, अहमदाबाद में 'सुड लाइफ फाउंडेशन डे' मनाया गया. इस अवसर पर केक काटते हुए श्री प्रमोद कुमार सोनी, क्षेत्र महाप्रबंधक, अहमदाबाद.



नासिक क्षेत्राधीन शहादा शाखा, जिला नंदुरबार के नूतनीकृत शाखा परिसर का उद्घाटन दि. 13.02.2020 को पूज्य साने गुरुजी प्रसारक मण्डल, शहादा के समन्वयक, श्री मकरंद भाई पाटिल जी के शुभ हाथों सम्पन्न हुआ. इस अवसर पर श्री संजय जाधव, विभागीय सचिव, सातपुड़ा शिक्षक प्रसारण मण्डल, धुले; श्री किशोर हड़पे, तालुका कृषि अधिकारी, शहादा; श्री अभिजीत दादा पाटिल, सभापति, कृषि जिला परिषद, नंदुरबार; डॉ अजित मराठे, क्षेत्र प्रमुख, नासिक; श्री श्रीधर राऊत, शाखा प्रबंधक, शहादा शाखा एवं शाखा के सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.



क्षे.का., नासिक के अंतर्गत जलगांव जिले के फैजपुर में 'यूनियन समृद्धि केंद्र' का उद्घाटन श्री मानस रंजन बिस्वाल, कार्यपालक निदेशक, केंद्रीय कार्यालय द्वारा दि. 03.02.2020 को किया गया। इस समारोह में श्री दीपक कांबले, अंचल प्रमुख, पुणे; डॉ. अजित मराठे, क्षेत्र प्रमुख, नासिक; श्री जयराम टोकरे, शाखा प्रबंधक, फैजपुर एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।



नासिक क्षेत्राधीन शिरपुर शाखा, जिला धुले के नूतनीकृत शाखा परिसर का उद्घाटन दि. 13.02.2020 को श्री तुषार जिरन्दे, अध्यक्ष, धुले जिला परिषद, श्री अमोल बागुल, मुख्याधिकारी, नगरपालिका, शिरपुर के करकमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. अजित मराठे, क्षेत्र प्रमुख, नासिक; श्री आशीष कुमार, शाखा प्रबंधक, शिरपुर शाखा एवं सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।



दि. 08.03.2020 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर यूनियन बैंक स्पोर्ट्स एवं कल्चरल असोशिएशन, नागपुर द्वारा पिकनिक का आयोजन सावनेर स्थित फ्रन प्लानेट वॉटर पार्क में किया गया। इस कार्यक्रम में क्षेत्र प्रमुख, श्री सुमेर सिंह सरोया व श्रीमती सरोया उपस्थित रहे। इस अवसर पर व्याख्यान, विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं पुरस्कार वितरण किया गया।



दि. 26.01.2020 को 71वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर क्षे.का., सूरत के प्रांगण में श्री प्रांजल बाजपेयी, क्षेत्र प्रमुख, सूरत द्वारा ध्वज फहराया गया। इस अवसर पर क्षे.का., सूरत एवं सूरत शहर की शाखाओं के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।



दि. 12.02.2020 को क्षे.का., बड़ौदा की सोजित्रा शाखा द्वारा वित्तीय साक्षरता सप्ताह, 2020 के अंतर्गत 'सहकारी दूध मंडली' में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान ग्राहकों को बैंक द्वारा प्रदत्त विविध सुविधाओं की जानकारी देते हुए श्री राम मोरे, ग्रामीण विकास अधिकारी, सोजित्रा शाखा।



सतर्कता सप्ताह में सतर्कता के प्रति आम जनता को जागरूक करने के उद्देश्य से क्षे.का., पुणे द्वारा साइक्लोथॉन का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र के अंतर्गत आनेवाले सभी कर्मचारी क्षेत्रीय कार्यालय पर एकत्रित हुए और 20 किमी के पूर्वनिर्धारित मार्ग पर साइकिलिंग की गयी। प्रत्येक साइकिल पर सतर्कता, स्वच्छता आदि से संबंधित स्लोगन के प्लेकार्ड थे। साइक्लोथॉन का 'फ्लैग ऑफ' क्षेत्र महाप्रबन्धक, श्री डी. बी. कांबले, सहायक महाप्रबन्धक, श्री विजय डोंगरवार, क्षेत्र प्रमुख, श्री ओ. पी. बलोदी ने किया।



प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी वडोदरा शहर में दि. 06.01.2020 को अंतर्राष्ट्रीय वडोदरा मैराथॉन का आयोजन किया गया, जिसमें टीम यूनियन बैंक ने काफी जोश एवं उत्साह के साथ भाग लिया.



यूनियन बैंक स्पोर्ट्स एवं कल्चरल असोशिएशन, नागपुर द्वारा दि. 15 जनवरी 2020 को क्षेत्रीय कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में हल्दी कुमकुम कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में स्टाफ महिला सदस्यों के साथ ही स्टाफ के परिवार की महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया.



दि. 04.01.2020 को विशाला - द गार्डन रेस्टोरेन्ट में 'शताब्दी वर्ष म्यूजिकल नाइट' एवं रात्रिभोज का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मंच पर उपस्थित हैं, श्री प्रांजल बाजपेयी, क्षेत्र प्रमुख, सूरत; श्री सुनील सिंह नेगी, उप क्षेत्र प्रमुख; श्री कुन्दन सिन्हा, सरल प्रमुख तथा मंच का संचालन करते हुए श्री अनुराग तिवारी, प्रबंधक, सेवा शाखा, सूरत. इस अवसर पर क्षे.का. सूरत के अंतर्गत आने वाली शाखाओं के स्टाफ सदस्य सपरिवार उपस्थित थे.



क्षे.का., नागपुर ने प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी बैंक के सिविल लाइन्स शाखा परिसर में 71 वां गणतन्त्र दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया. इस अवसर पर ध्वजारोहण, श्री सुमेर सिंह सरोया, क्षेत्र प्रमुख ने किया तथा श्री कमलाकर, उप क्षेत्र प्रमुख; श्री अमरनाथ मिश्रा, सहायक महाप्रबंधक; के श्री नीरज सिंह, सहायक महाप्रबंधक, सिविल लाइन्स शाखा; श्री राजेश यादव, सहायक महाप्रबंधक, धंतोली शाखा; श्री धर्मेन्द्र राजोरीय, सहायक महाप्रबंधक, गांधीबाग शाखा उपस्थित थे.



दि. 09.03.2020 को क्षे.का., नागपुर के परिसर में होली मिलन समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रमुख रूप से क्षेत्र प्रमुख श्री सुमेर सिंह सरोया व श्रीमती सरोया उपस्थित रहीं. क्षेत्रीय कार्यालय के सभी स्टाफ ने होली समारोह का आनंद लिया.



दि. 09.03.2020 को होली के अवसर पर क्षे.का., सूरत में 'होली मिलन समारोह' का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री प्रांजल बाजपेयी, क्षेत्र प्रमुख, सूरत एवं क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.



दि. 11.02.2020 को क्षे.का., सूरत में मेजर प्रवीण कुमार शर्मा, अंचलीय सुरक्षा अधिकारी एवं श्री अभिषेक राज, क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारी द्वारा सुरक्षा संबंधी जानकारी प्रदान की गयी और सुरक्षा संबंधित मॉक ड्रिल भी किया गया. इस अवसर पर श्री प्रांजल बाजपेयी, क्षेत्र प्रमुख, सूरत एवं क्षे.का. के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

### समाचार (दक्षिण)



USK, Palakkad and new premises of our Coyalamannam Branch in Kozhikode region was inaugurated by Shri Lal Singh, FGM, Chennai in presence of Shri D. Maheswaraiiah, Regional Head, Kozhikode on 10.03.2020.



दि. 23.02.2020 को क्षे.का., मदुरै में क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया. चित्र में उपस्थित सभी टीम सदस्य.

क्षे.का., मदुरै के समस्त स्टाफ ने केक काटकर नव वर्ष 2020 का स्वागत किया.



26 जनवरी 2020 को क्षे.का., मदुरै के सभी स्टाफ सदस्यों ने मिलकर गणतन्त्र दिवस मनाया.

दि. 13/01/2020 को क्षे.का., मदुरै में दक्षिण भारत का लोकप्रिय पर्व पोंगल मनाया गया. क्षेत्र प्रमुख, श्रीनिवास वंगला जी के साथ स्टाफ सदस्य पोंगल त्योहार मनाते हुए.

फलियों वाली सब्जियों की चर्चा हो तो लोबिया की बात जरूर की जाती है. 'ब्लैक आई पीज' के नाम से जानी जाने वाली ये फलियां भारत के अधिकांश घरों में इस्तेमाल की जाती हैं. शानदार टेस्ट और फ्लेवर होने के साथ इसमें शरीर के लिए सभी जरूरी पोषक तत्व भी पाये जाते हैं. इसमें प्रोटीन, फाइबर और आयरन की मात्रा काफी अधिक पाई जाती है. शाकाहारी लोगों के लिए प्रोटीन प्राप्त करने का यह सबसे अच्छा विकल्प है. पौष्टिक गुण होने के बाद भी यदि अध पका या कच्चे लोबिया का सेवन किया जाता है तो यह पाचन संबंधी समस्याओं को बढ़ा सकता है. इसलिए लोबिया खाने का सबसे अच्छा तरीका इसे अच्छी तरह से पका कर खाना है.

लोबिया में मौजूद फाइबर की उच्च मात्रा पाचन समस्याओं और कब्ज आदि का प्रभावी रूप से इलाज करता है. लोबिया में प्राकृतिक डिटॉक्सिफाइंग (natural detoxifying) गुण होते हैं.

लोबिया का ग्लायसेमिक इंडेक्स अन्य फलियों वाली सब्जियों और दालों की तुलना में कम

होता है, जो खून में ग्लूकोज की मात्रा को नियंत्रित रखता है और शुगर लेवल को बढ़ने नहीं देता है. यह डायबिटीज के मरीजों के लिए अच्छा आहार है.

विटामिन 'ए' और एंटीऑक्सीडेंट्स का खजाना, लोबिया शरीर से विभिन्न विषाक्त पदार्थों और हानिकारक ऑक्सीजन रहित तत्वों को बाहर करने में मदद करता है.

लोबिया में कई महत्वपूर्ण फ्लावेनोइड्स, फाइटोस्टेरॉल्स और पोटैशियम और मैग्नीशियम के अलावा साइटोस्ट्रोजिन जैसे लिपिन आदि पाए जाते हैं जिनमें कोलेस्ट्रॉल नियंत्रण की अद्भुत क्षमता होती है. शरीर में जमा खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करता है.

लोबिया में अपेक्षाकृत कम कैलोरी पाई जाती है. लोबिया के फाइबर और प्रोटीन भोज्य पदार्थों को जल्द से जल्द पचाने में सहायक होते हैं. लोबिया में आयरन की उच्च मात्रा होती है जो नई लाल रक्त कोशिकाओं के उत्पादन को बढ़ाने में मदद करता है. अतः दैनिक आहार में इसे शामिल कर रक्त को बढ़ाकर एनीमिया का इलाज किया जा सकता है.

इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन ए और सी और फाइबर त्वचा को नुकसान पहुंचाने

वाले फ्री रेडिकल्स के प्रभाव को कम करने में सहायक होते हैं. लोबिया में पाया जानेवाला ट्रिप्टोफैन मस्तिष्क तंत्रिका तथा तनावग्रस्त नसों को आराम दिलाने में सहायक होता है.

लोबिया में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण की वजह से शरीर की सूजन और दर्द से राहत दिलाने में सहायक साबित हो सकता है और मूत्र से सम्बंधित समस्या भी दूर हो जाती है. लोबिया में फेनोलिक यौगिक पाए जाते हैं, जो शरीर को सुरक्षा प्रदान करने का काम करते हैं. इससे लंबे समय से चली आ रही बीमारी से उबरने में कुछ मदद मिलती है.

बालों के उचित विकास में भी लोबिया अहम भूमिका निभाता है. साथ ही इसमें मौजूद अन्य घटक बालों को झड़ने से भी रोकते हैं.

**लोबिया से नुकसान :** आवश्यकता से अधिक मात्रा में लोबिया के सेवन से पेट संबंधी समस्याएं (जैसे अपच, उल्टी, दस्त, पेट फूलना और कब्ज) हो सकती हैं. कुछ लोगों में लोबिया के सेवन से एलर्जी की समस्या हो सकती है.



सुप्रिया नाडकर्णी  
यूनियन धारा, कें.का.

त्यंजन



हरी मटर की कचौरी (पूड़ी)  
तैयारी का समय: 30 मिनट  
मात्रा: 5-6 लोगों के लिए

**सामग्री:** 3 कप (250 ग्राम) मैदा, 250 ग्राम हरी मटर, 2 हरी मिर्च, 1 छोटी चम्मच हींग, 1 चम्मच अदरक का पेस्ट, 1 चम्मच गरम मसाला पाउडर, 1 चम्मच कलौंजी, 2/1 चम्मच जीरा पाउडर, 1 चम्मच चीनी, 2/1 चम्मच हल्दी पाउडर, नमक स्वादानुसार, तलने के लिए रिफाइंड तेल

हरी मटर की कचौरी

**विधि:** सबसे पहले एक कटोरी में 3 कप मैदे को आधी चम्मच नमक और 3/1 कप तेल के साथ मिलाकर मोयन देंगे. अब

इसमें पानी डाल कर उसे नरम गूँथ लेंगे. अब मैदे को 10-15 मिनट के लिए ढंक कर रख देंगे. अब स्टफिंग के लिए मटर को उबाल लेंगे. उबलने के पश्चात मटर को एक जार में हरी मिर्च, अदरक और दो चम्मच पानी मिलकर उसे पेस्ट बना लेंगे. अब इसे फ्राई करने के लिए एक पैन में 2 चम्मच तेल के साथ एक छोटा चम्मच काला जीरा और 2/1 चम्मच हींग को धीमी आंच में पकाएंगे. अब इसमें मटर का पेस्ट डालेंगे. इसमें 2/1 चम्मच हल्दी डालकर फ्राई करते रहेंगे. थोड़ा भून जाने के बाद 2/1 चम्मच

जीरा पाउडर, नमक स्वादानुसार, 1 चम्मच चीनी और 1 चम्मच गरम मसाला डालकर 10 मिनट तक तब तक पकाएंगे जब तक पेस्ट ड्राई न हो जाए. अब इस स्टफिंग को ठंडा होने के लिए अलग रख लेंगे. अब गूँथे हुए मैदे को बॉल जैसा बना लेंगे. अब इस मैदे के बॉल को हाथों से दबाते हुए बीच में होल बनाएंगे और उसमें स्टफिंग भरकर इसका मुंह बंद कर हल्के हाथों से थोड़ा मोटा बेल लेंगे. अब कड़ाई में तेल ज्यादा गर्म करके इनको तल लेंगे. इस तरह सारी पुड़ियों को तैयार करेंगे. इस मटर की कचौरी को आलू की सब्जी के साथ परोसे.



अमित महतो  
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई



आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' के पूर्वोत्तर विशेषांक की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद! पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनयोग्य, उच्च स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। मुंबई महानगर से प्रकाशित इस पत्रिका में पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति, खान-पान, पर्व, रहन-सहन एवं खूबियों का दर्शाया जाना पत्रिका में चार चाँद सी लगा देता है। पत्रिका के उज्वल भविष्य की शुभ कामनाएँ! इस नेक कार्य के लिए संपादक मंडल तथा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया परिवार के समस्त सदस्यों को भी बहुत-बहुत धन्यवाद! आशा है कि उक्त पत्रिका का अनवरत प्रकाशन होता रहेगा।  
- बदरी यादव, अनुसंधान अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र)

आपके बैंक की गृहपत्रिका 'यूनियन धारा' का पूर्वोत्तर विशेषांक मिला। पत्रिका अत्यंत उपयोगी और ज्ञानवर्धक है। इसे पढ़ते हुए अनेक बिम्ब आँखों के समक्ष आ गए - पूर्वोत्तर का खान-पान, परिधान, सुंदरता, महान संस्कृति को पढ़ने मात्र से पूर्वोत्तर के दर्शन की अनुभूति हुई और प्रत्यक्ष रूप से वहाँ जाने के लिए मन लालायित हुआ। यह पत्रिका अपने आप में अनेक मानदंड रचती है। साहित्य, समाज और बैंकिंग का मिलन इस पत्रिका में नजर आता है। पत्रिका का कवर पृष्ठ और पूर्वोत्तर भारत की जो तस्वीरें हैं वो अत्यंत मनमोहक है जो पत्रिका में चार चाँद लगा देती है। इस तरह का विशेषांक निकालने के लिए बहुत-बहुत बधाई! आशा है कि आगे भी इसी तरह के ज्ञानवर्धक विशेषांक आप प्रकाशित करते रहेंगे। शुभकामनाओं सहित धन्यवाद।

डॉ. रमेश बाबु दर्शि, नराकास बैंक सदस्य सचिव, विजयवाड़ा

आपके संस्थान द्वारा प्रकाशित गृहपत्रिका 'यूनियन धारा' का पूर्वोत्तर विशेषांक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सौभाग्य इसलिए क्योंकि जितनी मेहनत से इस अंक का सृजन किया गया, वह विरले ही दिखाई देता है। देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र पर केंद्रित यह अंक प्राकृतिक व सांस्कृतिक रूप से समृद्ध इस क्षेत्र की बेहतरीन यात्रा करवाता है। मेरे लिए यह जानना कि यह एक द्विभाषी पत्रिका है, एक सुखद आश्चर्य के समान था। इंदौर स्थित बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का सदस्य सचिव होने के नाते हम अपनी समिति की गृहपत्रिका 'राजभाषा प्रवाह' का भी प्रकाशन करते हैं। कई बार इस पत्रिका के लिए हमें रचनाएँ अंग्रेजी में प्राप्त होती हैं, जिन्हें हम भाषाई अवरोध के कारण शामिल नहीं कर पाते, लेकिन आपकी इस द्विभाषी पत्रिका ने हमें एक नई दृष्टि प्रदान की है। शीर्षक दें प्रतियोगिता तथा स्टाफ सदस्यों के प्रतिभाशाली बच्चों को शामिल कर पाठक आधार बढ़ाने के प्रयास भी सराहनीय है। पत्रिका में ग्राहकों के साथ ही सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्यों के मन की बात पढ़ना भी आकर्षित करता है। इस सहेजने योग्य अंक के प्रकाशन के लिए पूरे संपादन दल को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

- आशीष भवनानी, नराकास बैंक सदस्य सचिव, इंदौर

'यूनियन धारा' शताब्दी विशेषांक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम यूनियन धारा को इतनी भव्यता और जानकारी के साथ प्रिंट करने के लिए संपादक मण्डल और सम्पादकीय सलाहकारों का आभार। पत्रिका में बैंक के पूरे इतिहास को शामिल किया गया है, जैसे बैंक कब शुरू हुआ, बैंक की विस्तार यात्रा, आदि। इसमें प्रकाशित बैंक के सभी पुराने सम्मानित ग्राहक, सभी माननीय CMD का विवरण, सभी राजभाषा विभाग के प्रभारियों के कथन, हमारे बैंक के सफल स्टाफ की कहानी तथा माननीय प्रधान मंत्री, वित्त मंत्री का संदेश, आदि को शामिल कर इस अंक को संग्रहणीय बनाया है। निश्चय ही इस अंक को प्रकाशित करने में यूनियन धारा की पूरी टीम, खासकर संपादक डॉ. सुलभा कोरे मैडम ने अथक प्रयास कर इसे एक पुस्तक का रूप दिया है। पुनः इस अंक के प्रकाशन के लिए पूरे यूनियन धारा टीम एवं संवाददाताओं को बधाई!

- एस के रुबेल, बीरचंद्र नगर शाखा

हमें आपके बैंक की तिमाही पत्रिका यूनियन धारा का 'पूर्वोत्तर विशेषांक' प्राप्त हुआ, धन्यवाद। पत्रिका में विविध गतिविधियों एवं खबरों का समावेश व्यवस्थित ढंग से किया गया है। पूर्वोत्तर भारत के दर्शनीय स्थानों का वर्णन तो ऐसा है, मानो हम साक्षात् वहाँ भ्रमण कर रहे हो। साथ ही, पूर्वोत्तर भारत की जनजातियों, उनकी भाषा, संस्कृति, परंपरा और भौगोलिक स्थिति आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। श्वेता सिंह के आलेख 'असमिया भाषा' से असमिया भाषा को जानने और समझने का अवसर मिला, विक्रान्त कुमार के आलेख 'वर्तमान में पूर्वोत्तर भारत का विकास' में पूर्वोत्तर भारत की वर्तमान स्थिति को भलीभांति दर्शाया गया है, संतोष कुमार राम के आलेख में 'पूर्वोत्तर के खानपान' तो रंजीत कुमार के आलेख में 'पूर्वोत्तर के परिधानों' के सुंदर चित्रण किए गए हैं, सुनील प्रकाश पाल द्वारा लिखित 'भारत रत्न डॉ. भूपेन हजारिका' की जीवनी पठनीय है। उमेश प्रसाद का आलेख 'तनाव प्रबंधन' में काफी मददगार है, हेल्थ टिप्स में 'खट्टी-मीठी गुणकारी इमली' के रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक गुणों का वर्णन है। बैंक के 101 वें स्थापना दिवस से संबंधित कार्यक्रमों की झलकियों को भी शामिल किया गया है जो आकर्षक लगती हैं। बैंक की गतिविधियों की झलकियाँ बैंक की प्रगति को दर्शाती हैं। सारगर्भित विषयों को प्रस्तुत करने के लिए पूरी संपादकीय टीम को बधाई और साधुवाद।

- एच एम बसवराज, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) मा.स.वि. प्रधान कार्यालय, केनरा बैंक, बेंगलूरु

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'यूनियन धारा' का अक्टूबर-दिसंबर 2019 का अंक, पत्रिका बहुत ही रुचिपूर्ण ज्ञानवर्धक एवं जानकारी से परिपूर्ण लगी। जहां पत्रिका का आवरण पृष्ठ पूर्वोत्तर राज्यों की संस्कृति के बारे में पाठकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता है वहीं पत्रिका के भीतर के पन्ने पूर्वोत्तर राज्यों के बारे में पाठक के समक्ष रंगारंग झांकी पेश करते हैं।

पत्रिका में प्रकाशित लेख 'पूर्वोत्तर, एक नया भारत', 'पूर्वोत्तर राज्यों का परिधान' एवं 'उगते सूरज का प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश' पाठक को पूर्वोत्तर राज्यों के अनछुए पहलुओं से रूबरू करवाते हैं। इसके अतिरिक्त, आपके कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों का गुच्छा, जो आपने पिरोया है, उससे पत्रिका को एक नया आयाम मिला है। एक बहुआयामी एवं स्तरीय पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन हेतु बधाइयाँ स्वीकार करें।

हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी आपका संगठन इसी प्रकार की ज्ञानवर्धक पत्रिकाएं निकालता रहेगा।

प्रभजीत सिंह, पंजाब नेशनल बैंक, मंडल कार्यालय, चंडीगढ़

यूनियन बैंक की पत्रिका 'यूनियन धारा' का अक्टूबर-दिसंबर 2019 अंक बहुत ही सराहनीय है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ तथा आंतरिक साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी कविताएँ तथा लेख बहुत ही ज्ञानवर्धक है। बैंक की सभी गतिविधियों का प्रस्तुतिकरण बहुत ही व्यवस्थित प्रकार से किया गया है। पत्रिका के संपादक मंडल को साधुवाद!

- नारायणी, प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षे.का. लुधियाना

“

यह नयी दुनिया है बच्चो, संभलकर रहना.  
घोसले की ऊष्मा और माँ के प्यार से अलग है,  
वास्तविकता में तुम्हारा इस दुनिया में आना,  
बहुत कुछ सीखना, जिंदगी में शामिल करना  
नजर में सावधानी, पंखों में उड़ान कायम रखना  
और... हो सके तो इस नयी दुनिया से दूर रहना ॥

• डॉ. सुलभा कोरे

”

छायाचित्र : शाहिद खान मंसूरी  
कें.का., मुंबई